इनोक खांडागले



परमेश्वर के उपस्थिति में पाप का उद्गम

परमेश्वर की उपस्थिति में पाप की उत्पत्ति

एनोक खंडागले

यह पुस्तक ब्रिटनी मैकवान द्वारा अनुवादित और स्वाती बबर द्वारा प्रूम-पढ़ा गई हैं।

विषय-सूची

प्रस्तावना..... 3

अध्याय 1 — अच्छाई और बुराई..... 6

अध्याय 2 – ईश्वर का शासन और प्रेम का नियम..... 9

अध्याय 3 – लूसिफर: अब तक का सबसे ऊँचा रचित प्राणी।..... 12

अध्याय 4 — स्वर्ग में विद्रोह का उदय..... 15

अध्याय 5 — स्वर्ग में युद्ध..... 19

अध्याय 6 — शैतान का निष्कासन..... 23

अध्याय 7 — खोया हुआ घर और स्वर्ग..... 28

अध्याय 8 — छुटकारे की योजना..... 33

अध्याय 9 – मसीह का संघर्ष में प्रवेश..... 37

अध्याय 10 – क्रूस: महान विवाद का निर्णायक मोड़..... 41

अध्याय 11 – संघर्ष जारी हैं..... 48

अध्याय 12 – ईश्वर के शेष लोग..... 53

अध्याय 13 – महान विवाद का अंत..... 60

अध्याय 14 – फिर से शांतिपूर्ण ब्रह्मांड..... 69

अध्याय 15 – महान विवाद में पक्ष चुनना..... 72

प्रस्तावना

पाप की समस्या कोई सिर्फ धर्मशास्त्र की जटिल समस्या नहीं हैं—यह मानव अस्तित्व का सबसे गहरा सवाल हैं। अन्याय की हर चीख, मौत का हर डर, हर टूटा हुआ रिश्ता, और ईश्वर के प्रति हर खामोश शंका, एक चिंताजनक रहस्य तक जाती हैं: *एक प्रेममय ईश्वर ने जो ब्रह्मांड बनाया, उसमें बुराई कैसे पैदा हुई—और इसे जारी रखने की अनुमति क्यों दी गई?*

यह पुस्तक उस सवाल का सामना ईमानदारी से, धर्मग्रंथ के अनुसार, और बिना किसी डर के करने के लिए लिखी गई हैं।

"ईश्वर की उपस्थिति में पाप की उत्पत्ति" एक समर्पित बाइबिल अध्ययन यात्रा हैं, जो धर्मग्रंथ द्वारा 'महान विवाद'—सत्य और छल, प्रेम और स्वार्थ, यीशु और शैतान के बीच ब्रह्मांडीय संघर्ष—कहे जाने वाले विषय से गुजरती हैं। इसे धर्मग्रंथ से आगे की कल्पनाएँ करने या पीड़ा को किसी सैद्धांतिक बात में समेटने के लिए नहीं लिखा गया हैं। बल्कि, इसका उद्देश्य पाप की धर्मग्रंथ सम्मत व्याख्या को उजागर करना हैं, जिस तरह से ईश्वर की भलाई को बनाए रखा जाए, मनुष्य की जिम्मेदारी का समर्थन किया जाए, और आशा को फिर से जीवित किया जाए।

यह काम सबसे पहले बाइबिल से प्रेरित हैं—विश्वास और सत्य के सभी मामलों में जो परम और अंतिम अधिकार हैं। इसके अलावा, यह एलेन जी. व्हाइट के लेखन से गहराई से प्रभावित हैं, जिनकी 'महान विवाद' विषय पर अंतर्दृष्टि ने विश्वासियों की कई पीढ़ियों को धर्मग्रंथ को बेहतर ढंग से समझने में मदद की हैं। विशेष रूप से *'पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता', 'महान विवाद'*, और *'आमना-सामना'* जैसी रचनाएँ निर्माणात्मक रहीं, जो ईश्वर के चरित्र की रोशनी में अच्छाई और बुराई के बीच बढ़ते संघर्ष को प्रकाशित करती हैं। यह पुस्तक धर्मग्रंथ या भविष्यद्वाणी के अनुदेश को बदलने का प्रयास नहीं करती, पर यह आभारपूर्वक उनके दृष्टिकोणों को संकलित करती हैं और उन पर आगे बढ़ती हैं।

सभी संस्कृतियों और धर्मों में, मनुष्य ने अच्छाई और बुराई के लिए कई व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं। कुछ कहते हैं कि बुराई अनंत हैं। अन्य कहते हैं कि यह आवश्यक हैं। और कुछ इसे भ्रम या क्रम-विकास के रूप में खारिज कर देते हैं। ईसाइयत के भीतर भी, कई लोग एक अच्छे ईश्वर और एक पीड़ित दुनिया के बीच मेल-मिलाप करने के लिए संघर्ष करते हैं। अक्सर, ईश्वर पर सूक्ष्म रूप से आरोप लगाया जाता हैं, जबकि पाप की वास्तविक उत्पत्ति गलत समझी जाती हैं।

बाइबिल एक बिल्कुल अलग कहानी प्रस्तुत करती हैं।

धर्मग्रंथ प्रकट करता हैं कि अच्छाई पहले थी। प्रेम पहले था। स्वतंत्रता पहले थी। बुराई इसलिए पैदा नहीं हुई क्योंकि ईश्वर ने इसे बनाया था, न ही विकास के लिए इसकी आवश्यकता थी, बल्कि इसलिए पैदा हुई क्योंकि स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया गया था। पाप पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में शुरू हुआ—एक रचित हुए प्राणी के भीतर, जिसने विश्वास के बजाय आत्म-उन्नति, कृतज्ञता के बजाय गर्व, और प्रेम के बजाय स्वतंत्रता को चुना। उस क्षण से, ब्रह्मांड एक नैतिक संघर्ष में प्रवेश कर गया, जो अंततः मानवता तक पहुँच गया।

इस विवाद के केंद्र में ईश्वर का चरित्र हैं।

"ईश्वर प्रेम हैं" यह कोई काव्यात्मक वर्णन नहीं हैं; यह उसकी सरकार की नींव हैं। ईश्वर बल, डर या दबाव द्वारा नहीं, बल्कि सत्य, न्याय, दया और स्वतंत्रता के माध्यम से शासन करता हैं। उसका नियम किसी नियंत्रण प्रणाली नहीं हैं—यह उसके चरित्र की अभिव्यक्ति हैं। ईश्वर के राज्य में आज्ञाकारिता एक समय आनंददायक, बुद्धिमान और स्वेच्छापूर्वक थी। जब वह विश्वास टूट गया और ईश्वर के चरित्र का गलत चित्रण किया गया, तब पाप शुरू हुआ।

यह पुस्तक उस कहानी का सावधानीपूर्वक अनुसरण करती हैं—ईश्वर के प्रेम के शासन से शुरू होकर, लूसिफर के उच्च पद और दुखद पतन, स्वर्ग में विद्रोह के उदय, और उसके बाद आए युद्ध तक। यह उस संघर्ष का अनुसरण करता हैं जो आदम और हव्वा के छल, एडन की हानि, और निरंतर महान विवाद के कारण हुई मानव पीड़ा के लंबे इतिहास के माध्यम से पृथ्वी पर आता हैं।

लेकिन कहानी हानि में समाप्त नहीं होती।

यीशु के माध्यम से, ईश्वर स्वयं इस संघर्ष में कूद पड़े। यीशु केवल पाप को क्षमा करने के लिए नहीं आए, बल्कि शैतान के झूठों को बेनकाब करने, पिता के वास्तविक चरित्र को प्रकट करने, और ब्रह्मांड को हमेशा के लिए विद्रोह से सुरक्षित करने के लिए आए। सलीब महान विवाद का एक महान मोड़ के रूप में खड़ी हैं—जहाँ न्याय और दया मिले, जहाँ प्रेम पूरी तरह से प्रकट हुआ, और जहाँ शैतान के आरोपों का निर्णायक जवाब दिया गया।

फिर भी संघर्ष जारी हैं।

धर्मग्रंथ प्रकट करता हैं कि महान विवाद इतिहास के माध्यम से, ईश्वर के बचे हुए लोगों के माध्यम से, छल की दुनिया में घोषित सत्य के माध्यम से, और हर मानव हृदय के सामने रखे गए एक अंतिम चयन के माध्यम से खुलता हैं। यह पाप के पूर्ण अंत, अंतिम न्याय, और ब्रह्मांड में सामंजस्य की पुनर्स्थापना की ओर बढ़ता हैं—एक बार फिर शांतिपूर्ण ब्रह्मांड।

यह पुस्तक भी गहरी आभार, बहुत प्यार और सम्मान के साथ लिखी गई हैं, पादरी एड्रियन एबेन्स के प्रति, और उन मित्रों एवं साथी विश्वासियों के प्रति, जिनके वफ़ादारी भरे काम, अध्ययन, और बातचीत ने मुझे ईश्वर के चरित्र की रोशनी में महान विवाद को समझने में मदद की।उनके प्रभाव ने मेरे विश्वास को मजबूत किया हैं कि सत्य, जब सही ढंग से समझा जाता हैं, तो हमेशा हमें ईश्वर पर और गहरा भरोसा करने की ओर ले जाता हैं।

अंततः, यह केवल देवदूतों, इतिहास, या भविष्यवाणी के बारे में एक कहानी नहीं हैं। यह आपके बारे में हैं।

हर मनुष्य इस विवाद के भीतर रहता हैं। हर जीवन एक चयन प्रकट करता हैं—विश्वास या संदेह, स्वयं या प्रेम, सत्य या छल। तटस्थ रहना असंभव हैं। पाप की उत्पत्ति को समझना अपने फैसलों की गंभीरता और ईश्वर के प्रेम की गहराई को समझना हैं।

यदि बाइबिल सच हैं, तो पीड़ा बेमतलब नहीं हैं, बुराई स्थायी नहीं हैं, और ईश्वर दर्द का लेखक नहीं हैं। इतिहास पुनर्स्थापना की ओर बढ़ रहा हैं। पाप फिर कभी उठेगा नहीं। और ब्रह्मांड का सबसे बड़ा सवाल—क्या ईश्वर पर *भरोसा किया जा सकता हैं?*—हमेशा के लिए उत्तर दिया जाएगा।

यह पुस्तक एक निमंत्रण हैं:

1. धर्मग्रंथ का गहराई से अध्ययन करने के लिए,
2. ईमानदारी से प्रश्न करने के लिए,
3. ईश्वर को स्पष्ट रूप से देखने के लिए,
4. और बुद्धिमानी से चुनने के लिए।

आशा हैं कि यह यात्रा आपको केवल ज्ञान तक ही नहीं, बल्कि विश्वास तक ले जाएगी।

आओ हम साथ मिलकर अध्ययन करें—धैर्यपूर्वक, प्रार्थनापूर्वक, और बिना किसी डर के। **– एनोक खंडागले**

अध्याय 1 — अच्छाई और बुराई

मानव चेतना के आरंभिक क्षणों से ही, लोग एक ही रहस्यमय प्रश्न पूछते आ रहे हैं: *दुनिया एक साथ सुंदर और टूटी हुई क्यों हैं? प्रेम और नफरत, न्याय और क्रूरता, निस्वार्थ और हिंसा एक साथ क्यों मौजूद हैं?* कोई भी सभ्यता, जनजाति, या व्यक्ति इस तनाव से नहीं बच सका। हर मनुष्य, जो धर्म, संस्कृति या समाज द्वारा ढाला जाता हैं, अच्छाई और बुराई की उत्पत्ति के बारे में एक व्याख्या अपने पास रखता हैं—चाहे वह कही गई हो या न कही गई हो।

एक पारंपरिक गाँव में पला-बढ़ा बच्चा यह सीख सकता हैं कि नाराज़ आत्माएँ बुराई का कारण बनती हैं। एक दार्शनिक तर्क दे सकता हैं कि बुराई केवल अच्छाई का अभाव हैं। एक धर्मनिरपेक्ष विचारक इस बात पर ज़ोर दे सकता हैं कि नैतिक श्रेणियाँ क्रम-विकास के उप-उत्पाद हैं और समय के साथ विकसित हुए मानव जीविका के औज़ार हैं। एक धार्मिक अनुयायी अच्छाई और बुराई को ब्रह्मांडीय संघर्ष में उलझी हुई शक्तियों के रूप में देख सकता हैं। कुछ लोग यह भी कह सकते हैं कि बुराई की उपस्थिति पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले शापों का परिणाम हैं। हालाँकि जवाब अलग हैं, प्रश्न तो सार्वभौमिक हैं: **बुराई बिल्कुल क्यों मौजूद हैं, और यह जारी क्यों रहती हैं?**

दुनिया भर के धर्मों और संस्कृतियों में, अच्छाई और बुराई के सह-अस्तित्व के लिए स्पष्टीकरण बहुत भिन्न हैं।

पूर्वी विश्वव्यूपों में, जैसे हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म, अच्छाई और बुराई को अक्सर एक चक्र के हिस्से के रूप में देखा जाता हैं—*कर्म*, जो कई जीवनकालों में नैतिक कारण और प्रभाव को संतुलित करता हैं। इस तरह समझा जाता हैं कि पीड़ा इच्छा, अज्ञान, और असंतुलन के कारण मौजूद हैं, किसी व्यक्तिगत बुराई प्राणी के कारण नहीं।

प्राचीन द्वैतवादी प्रणालियों में, जैसे कि पारसी धर्म, अच्छाई और बुराई दो लगभग समान शक्तियाँ हैं जो विरोध में उलझी हुई हैं, और प्रत्येक शाश्वत रूप से अस्तित्व में हैं। इन समुदायों में, *"इतिहास वह युद्धभूमि हैं जहाँ उनका संघर्ष खुलता हैं"* यह वाक्य एक प्रेरक, दार्शनिक कथन हैं जो यह सुझाव देता हैं कि ऐतिहासिक संघर्ष, जैसे सैन्य यु7द्ध या राजनीतिक सत्ता संघर्ष, मूल रूप से विपरीत शक्तियों—अच्छाई और बुराई—के बीच संघर्ष और प्रतिस्पर्धा से प्रेरित होते हैं।

आधुनिक धर्मनिरपेक्ष विचार में, बुराई को अक्सर जैविक या सामाजिक शब्दों में समझाया जाता हैं। हिंसा के लिए आनुवंशिकी, आघात, या पर्यावरण को दोषी ठहराया जाता हैं। नैतिक असफलता को विद्रोह के बजाय कमज़ोरी के रूप में प्रस्तुत किया जाता हैं।
इस्लाम में, बुराई को मनुष्य की पसंद और शैतान (इब्लिस) के छल का परिणाम समझा जाता हैं, फिर भी यह हमेशा ईश्वर की संप्रभुता के अधीन हैं।

पारंपरिक ईसाइयत के भीतर भी, कई लोग एक अच्छे ईश्वर और पीड़ा से भरी दुनिया के बीच मेल-मिलाप करने के लिए संघर्ष करते हैं। कुछ लोग इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि बुराई आवश्यक हैं, कुछ इसे रहस्यमय कहते हैं, और अभी भी अन्य कहते हैं कि यह केवल अनिवार्य हैं।

ये स्पष्टीकरण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, फिर भी कई महत्वपूर्ण प्रश्नों को बिना उत्तर छोड़ देते हैं: *यदि बुराई आवश्यक हैं, तो उसका विरोध क्यों करें? यदि यह शाश्वत हैं, तो आशा कैसे हो सकती हैं? यदि यह केवल एक भ्रम हैं, तो यह इतनी गहराई से क्यों दुख पहुँचाता हैं?*

बाइबिल का अद्वितीय दृष्टिकोण

बाइबिल एक ऐसा विश्व-दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं जो किसी से भिन्न हैं। यह अच्छाई और बुराई को समान शक्तियों के रूप में नहीं दर्शाती, और न ही यह बुराई को आवश्यक, शाश्वत, या मायावी बताती हैं। इसके बजाय, धर्मग्रंथ घोषित करता हैं कि **अच्छाई पहले थी**, और बुराई बाद में आई—स्वतंत्रता के दुर्भाग्यपूर्ण दुरुपयोग के माध्यम से।

“आदि में ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया” (उत्पत्ति 1:1)।
जब रचना पूरी हुई, तो ईश्वर ने उसे “बहुत अच्छा” घोषित किया (उत्पत्ति 1:31)। बुराई ईश्वर की योजना का हिस्सा नहीं थी।

बाइबिल प्रकट करती हैं कि बुराई पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में शुरू हुई—एक रचित प्राणी द्वारा जिसने स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया। लूसिफर के बारे में प्रतीकात्मक रूप से बोलते हुए, धर्मग्रंथ कहता हैं:

यज़्कएल 28:15 में ईश्वर शैतान से कहते हैं “तुम अपने रास्तों में उस दिन से जब तुम्हें बनाया गया था, तब तक तुम परिपूर्ण थे, जब तक कि तुममें अन्याय (पाप) पाया गया”। पाप में गिरने और ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के बाद, लूसिफर (शैतान) ने अपने दिल में कहा “मैं अपना सिंहासन ईश्वर के सितारों से ऊँचा करूँगा” (यशायाह 14:13)। बाइबिल प्रकट करती हैं कि इस

इरादे के साथ शैतान ने हज़ारों वर्षों से ईश्वर के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा हैं। वही वजह हैं कि बुराइयाँ पृथ्वी पर लगातार बढ़ती जा रही हैं।

इसलिए, बाइबिल के अनुसार, बुराई ईश्वर द्वारा बनाई गई कोई वस्तु नहीं हैं, बल्कि **एक विद्रोह हैं जो शैतान ने ईश्वर में निहित प्रेम और सत्य के खिलाफ किया हैं।** यह चुनाव का परिणाम हैं—आवश्यकता का नहीं। यह विद्रोह उत्पत्ति 3 में मानवता तक फैल गया, जहाँ छल ने विश्वास का स्थान ले लिया, और स्वार्थ ने आज्ञाकारिता का। फिर भी, यहाँ तक कि, बाइबिल आशा प्रस्तुत करती हैं। ईश्वर वादा करते हैं कि बुराई हमेशा के लिए नहीं रहेगी (उत्पत्ति 3:15)।

अच्छाई और बुराई की उत्पत्ति के बारे में बाइबिल के विवरण पर विश्वास क्यों करें?

बाइबिल की व्याख्या सार्थक हैं क्योंकि यह ईश्वर को बुराई का लेखक बनाए बिना मानवीय जिम्मेदारी को बनाए रखती हैं। यह गहरी हैं क्योंकि यह केवल व्यवहार पर ही नहीं, बल्कि इरादों, स्वतंत्रता, प्रेम, और चरित्र पर भी ध्यान केंद्रित करती हैं। यह पूर्ण हैं क्योंकि यह बुराई की **उत्पत्ति, उद्देश्य, और अंत** की व्याख्या करती हैं। बाइबिल का विवरण सच हैं क्योंकि यह मानवीय अनुभव—अंतःकरण, संघर्ष, और आशा—के साथ मेल खाता हैं।

उन प्रणालियों के विपरीत जहाँ बुराई शाश्वत हैं, बाइबिल इसके अंत का वादा करती हैं:

“शैतान... आग की झील में फेंक दिया गया” (प्रकाश 20:10)।
“अब और न कोई मृत्यु होगी, न शोक, न रोना” (प्रकाश 21:4)।

यह पुस्तक एक निमंत्रण हैं—गहराई से सोचने के लिए, ईमानदारी से प्रश्न करने के लिए, और सावधानी से अध्ययन करने के लिए। अच्छाई और बुराई का विषय केवल दार्शनिक नहीं हैं; यह व्यक्तिगत हैं। यह हर दिल, हर घर, हर चुनाव को छूता हैं।

यदि बाइबिल सच हैं, तो इतिहास यादृच्छिक नहीं हैं, पीड़ा बेमतलब नहीं हैं, और बुराई स्थायी नहीं हैं। संघर्ष का एक कारण हैं—और एक गौरवशाली अंत हैं।

सबसे बड़ा विवाद केवल दुनिया में अच्छाई और बुराई के बीच नहीं हैं। यह विवाद इस बात पर हैं कि **ईश्वर वास्तव में कौन हैं। अच्छा या बुरा?** आओ हम इस विषय का एक साथ अध्ययन करें—धैर्यपूर्वक, प्रार्थनापूर्वक, और बिना किसी डर के।

अध्याय 2 – ईश्वर का शासन और प्रेम का नियम

सबसे बड़े विवाद की कहानी पृथ्वी पर शुरू नहीं होती। यह कहीं ज़्यादा पहले, मानवीय आँखों की दृष्टि से बहुत दूर, स्वयं ईश्वर की उपस्थिति में शुरू होती हैं।

बाइबिल ईश्वर का परिचय एक सरल लेकिन गहरे कथन के साथ देती हैं: **"ईश्वर प्रेम हैं" (1 यूहन्ना 4:16)।** यह केवल वह नहीं हैं जो ईश्वर करता हैं; यह वही हैं जो वह हैं। उनका प्रेम भावुक या अप्रत्याशित नहीं हैं। यह स्थिर, वफ़ादार और अनंत हैं। धर्मग्रंथ उन्हें "ऊँचा और उदात्त जो अनंत काल तक रहता हैं," जिनके "रास्ते अनंतकालीन हैं," के रूप में वर्णित करता हैं। वे नहीं बदलते। उनमें "कोई परिवर्तन नहीं, और न मुड़ने की कोई छाया" हैं (यशायाह 57:15; हबक्कूक 3:6; याकूब 1:17)। शुरुआत से ही, ईश्वर का चरित्र एक जैसा रहा हैं: न्याय के माध्यम से व्यक्त प्रेम, और सत्य द्वारा मार्गदर्शित स्वतंत्रता।

"आदि में ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया" (उत्पत्ति 1:1)। मनुष्यों के अस्तित्व में आने से बहुत पहले, ईश्वर ने फ़रिश्तों और दुनियाओं के एक विशाल समूह को अस्तित्व में लाया। रचना कोई प्रयोग नहीं थी, न ही एकांत का एक कार्य था। अपनी रचनात्मक शक्ति का प्रत्येक प्रकटीकरण असीम प्रेम की अभिव्यक्ति था। ईश्वर की संप्रभुता नियंत्रण के बारे में नहीं थी, बल्कि आशीर्वाद के बारे में थी। ईश्वर न्यायी, धार्मिक, दयालु और सच्चे होते हुए भी दूसरों को जीवन, आनंद और उद्देश्य देने के लिए शासन करते हैं।

राजा दाऊद स्वर्गीय मामलों को देखने के ईश्वर के तरीके में इस संतुलन को सुंदर ढंग से वर्णित करते हैं: "तेरा हाथ मजबूत हैं, और तेरा दाहिना हाथ ऊँचा हैं। धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन की नींव हैं: दया और सत्य तेरे मुख के आगे चलते हैं" (भजन 89:13–14)।

मानव शासक अक्सर इन गुणों को अलग करते हैं। कुछ न्याय पर ज़ोर देते हैं लेकिन दया में कमी रखते हैं। अन्य प्रेम की बात करते हैं लेकिन धार्मिकता को नजरअंदाज करते हैं। ईश्वर न तो कड़ाई से कानूनी हैं और न ही पाप के प्रति उदासीन हैं। उनका न्याय विश्वसनीय हैं, और उनकी दया सिद्धांतिक हैं। वे एक साथ धार्मिक राजा और करुणामय स्वामी हैं। इसलिए उनका शासन डर के बजाय विश्वास को प्रेरित करता हैं।

स्वर्ग के केंद्र में पुत्र

बाइबिल कहती हैं कि ईश्वर पिता रचना और आशीर्वाद के अपने काम में अकेले नहीं थे। उनके पास एक सहयोगी था, एक साथी कार्यकर्ता जो उनके उद्देश्यों और रचित प्राणियों को खुशी देने में उनके आनंद को साझा करता था। धर्मग्रंथ इस महिमामय सत्य को प्रकट करता हैं: "आदि में वचन था, और वचन ईश्वर के साथ था, और वचन ईश्वर था" (यूहन्ना 1:1–2)।

यीशु मसीह, वचन, ईश्वर के एकमात्र पुत्र हैं। वे स्वभाव, चरित्र और उद्देश्य में पिता के साथ एक थे। वे अकेले ही ईश्वर की सलाहों में पूरी तरह से भाग ले सकते थे। बेथलहम में एक बच्चे के रूप में पृथ्वी पर आने से बहुत पहले, वे रचनेवाले और स्वामी के रूप में पिता के पास खड़े थे।

यीशु स्वयं इस प्राचीन संबंध के बारे में बात करते हैं:

"प्रभु ने अपने रास्ते के आरंभ में मुझे प्राप्त किया, अपने पुराने कामों से पहले... जब उसने पृथ्वी की नींव रखी: तब मैं उसके पास था... और मैं रोज़ उसका आनंद था, हमेशा उसके सामने आनंदित होता था" (भजन संहिता 8:22–30)।

यह ईश्वर के शासन के बारे में गहरे रिश्तेदारी वाली एक बात को प्रकट करता हैं। यह साझा किए गए प्रेम, व्यक्त किए गए आनंद, और एक साथ पूरे किए गए उद्देश्य पर आधारित था। यीशु कई रचित प्राणियों में से एक नहीं थे, बल्कि पुत्र, पिता का आनंद, और स्वर्ग के वाजिब स्वामी थे।

फ़रिश्ते और स्वर्ग का व्यवस्था

इसके अलावा, पुत्र के द्वारा, पिता ने सभी स्वर्गीय प्राणियों को बनाया। "उसके द्वारा ही सब कुछ बनाया गया... चाहे वे राजगद्दियाँ हों, या प्रभुत्व, या शासन, या शक्तियाँ" (कुलुसियों 1:16)। फ़रिश्ते ईश्वर के मंत्री हैं, जो उनकी उपस्थिति से बहने वाले प्रकाश से चमकते हैं। वे उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए गुलामों की तरह नहीं, बल्कि आनंदित सेवकों की तरह तेज़ी से आगे बढ़ते हैं।

फिर भी, फ़रिश्ते जितने ही महिमाशाली हों, वे यीशु के बराबर नहीं हैं। पुत्र ईश्वर के व्यक्तित्व की "प्रत्यक्ष छवि", उनकी महिमा की "चमक", और वही हैं जो "अपनी शक्ति के वचन द्वारा सब कुछ बनाए रखता हैं" (इब्रानियों 1:3)। सर्वोच्चता केवल उन्हीं की हैं। उनका सिंहासन "आदि से ही एक महिमामय ऊँचा सिंहासन" के रूप में वर्णित हैं (यिर्मयाह 17:12), और उनका

दण्ड “धार्मिकता का दण्ड” हैं (इब्रानियों 1:8)। सम्मान, भव्यता, शक्ति और सुंदरता उन्हें घेरे रहती हैं। दया और सत्य उनके मुख से पहले चलते हैं।

ब्रह्मांड को एक साथ रखने वाला नियम

जैसे प्रत्येक राष्ट्र नियमों द्वारा शासित होता हैं, वैसे ही ईश्वर का राज्य भी नियमों के अंतर्गत काम करता हैं। लेकिन यह कोई नियमों की ठंडी व्यवस्था नहीं हैं। ईश्वर का नियम उनके चरित्र की अभिव्यक्ति हैं। यह **प्रेम का नियम** हैं। यह वही नियम हैं जिसे उसने मूसा के माध्यम से हमें दिया। क्योंकि प्रेम ईश्वर के शासन की नींव हैं, इसलिए सभी बुद्धिमान प्राणियों की खुशी इसके धार्मिक सिद्धांतों के साथ सामंजस्य पर निर्भर करती हैं।

ईश्वर प्रेम की सेवा चाहते हैं, जबरदस्ती आज्ञाकारिता नहीं। वह डर से आईं वफ़ादारी में कोई आनंद नहीं लेते। इसके बजाय, वे अपने सभी प्राणियों को इच्छा की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, और उन्हें अपनी भलाई के प्रति स्वेच्छा से प्रतिक्रिया करने के लिए आमंत्रित करते हैं। स्वर्ग में आज्ञाकारिता बोझ नहीं थी; यह आनंददायक थी। ईश्वर के प्रति प्रेम ने वफ़ादारी को प्रेरित किया, और एक-दूसरे के प्रति प्रेम ने एकता को जन्म दिया।

स्वर्ग की खुशहाल स्थिति

यह जानना महत्वपूर्ण हैं कि, बुराई के अस्तित्व में आने से पहले, स्वर्ग एक पूर्ण सामंजस्य की जगह थी। हर प्राणी ईश्वर के अधिकार को प्रेम के अधिकार के रूप में स्वीकार करता था। फ़रिश्ते अपने रचयिता के उद्देश्य को पूरा करने में आनंदित होते थे। वे उनकी महिमा को प्रतिबिंबित करने और उनके नाम की प्रशंसा करने में आनंद लेते थे। वहाँ विश्वास, निस्वार्थता और शांति थी। कोई डर उनके आनंद को धुंधला नहीं करता था। कोई शक उनके रिश्तों को बाधित नहीं करता था। स्वर्ग सचमुच घर था।

लेकिन यह खुशी हमेशा के लिए नहीं रही।

इस पूर्ण स्थिति में एक बदलाव आया। ईश्वर ने जो स्वतंत्रता प्रदान की थी, उसका दुरुपयोग किया गया। पाप किसी अज्ञानी या कमज़ोर प्राणी से नहीं, बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति से शुरू हुआ जिसे बहुत सम्मान दिया गया था। यीशु के बाद, वह स्वर्ग के निवासियों में शक्ति और महिमा में सबसे ऊँचा था। अगले अध्याय में हम पता लगाएंगे कि स्वर्ग के सामंजस्य को किसने भंग किया—और क्यों?

अध्याय 3 – लूसिफर: अब तक का सबसे ऊँचा रचित प्राणी।

विद्रोह को समझने से पहले, हमें पहले आज्ञाकारिता को समझना होगा, जो प्रेम और विश्वास का परिणाम हैं। इस बात को समझने से पहले कि लूसिफर कितनी गहरी बुराई में गिरा, हमें उस ऊँचाई को देखना होगा जिससे वह गिरा। लूसिफर की कहानी केवल एक खलनायक की कहानी नहीं हैं; यह एक विश्वसनीय नेता, एक प्रतिभाशाली प्राणी, और एक ऐसी त्रासदी की कहानी हैं जिसने ब्रह्मांड को हमेशा के लिए बदल दिया।

यह जानना महत्वपूर्ण हैं कि ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने से *पहले* लूसिफर कौन था। यदि हम इस हिस्से को छोड़ दें, तो हम पाप की प्रकृति और उसके बाद आए विवाद की गंभीरता को गलत समझ सकते हैं। लूसिफर ईश्वर का दुश्मन बनकर शुरू नहीं हुआ। वह ईश्वर की महानतम रचनाओं में से एक के रूप में शुरू हुआ। केवल उसकी मूल स्थिति को देखकर ही हम यह समझना शुरू कर सकते हैं कि प्रेम द्वारा शासित एक पूर्ण स्वर्ग में विद्रोह कैसे पैदा हो सकता हैं।

लूसिफर कौन था?

लूसिफर ईश्वर द्वारा रचित एक वास्तविक, व्यक्तिगत प्राणी था। वह बुराई का कोई सार रूप नहीं था, न ही वह पापी बनाया गया था। बाइबिल उसे एक वास्तविक फ़रिश्ते के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो एक समय ईश्वर और बाकी स्वर्ग के साथ पूर्ण सामंजस्य में रहता था। वास्तव में, सभी रचित प्राणियों में, लूसिफर सम्मान और जिम्मेदारी में यीशु के सबसे करीब था। ईश्वर स्वयं लूसिफर की मूल स्थिति के बारे में कहते हैं: *"तू निशान लगाता हैं पूर्ण योग की, ज्ञान से पूर्ण, और सुंदरता में पूर्ण"* (यज़्कएल 28:12)।

लूसिफर फ़रिश्तों में कलाकृति था। वह बुद्धिमान, सुंदर और शक्तिशाली था। उसके बारे में कोई कमी नहीं थी। पूरा स्वर्ग उसे देखकर उत्कृष्टता देखता था।

लूसिफर का नाम मतलब हैं *"प्रकाश वाहक"* या *"प्रकाश लाने वाला"*। यह नाम उसकी भूमिका और उसके विशेषाधिकार दोनों को प्रकट करता हैं। लूसिफर को ब्रह्मांड में ईश्वर के प्रकाश, उनके सत्य और उनके चरित्र को प्रतिबिंबित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। जैसे चाँद सूरज के प्रकाश को प्रतिबिंबित करता हैं, वैसे ही लूसिफर को ईश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित करना था।

यह कोई छोटी जिम्मेदारी नहीं थी। धर्मग्रंथ में प्रकाश सत्य, जीवन और ईश्वर की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता हैं (यूहन्ना 1:4–9)। प्रकाश वाहक कहलाने का मतलब था कि लूसिफर एक ऐसी स्थिति में खड़ा था, जहाँ दूसरे उसे मार्गदर्शन, प्रेरणा और नेतृत्व के लिए देखते थे। उसका उद्देश्य दूसरों की सहायता करना था ताकि वे ईश्वर को और स्पष्ट रूप से देख सकें।

लूसिफर की मूल स्थिति और विशेषाधिकार

स्वर्ग में लूसिफर का स्थान फ़रिश्तों में अद्वितीय था। प्रभु भविष्यद्वक्ता यज़्कएल द्वारा कहते हैं: “तू (लूसिफर) ईश्वर के बाग़, एडन में रहा हैं; हर कीमती पत्थर तेरा आवरण था” (यज़्कएल 28:13)। इस पद से पता चलता हैं कि एडन का बाग़ स्वर्ग में था और यह ईश्वर का वह बाग़ था जहाँ लूसिफर स्वर्ग को छोड़ने से पहले रहता था। यह बताता हैं कि बाइबिल क्यों कहती हैं: *और प्रभु ईश्वर ने एडन के पूर्व में एक बाग़ लगाया; और वहाँ उसने उस मनुष्य को रखा जिसे उसने बनाया था - उत्पत्ति 2:8*

इसके अलावा, “हर कीमती पत्थर तेरा आवरण था", यह वर्णन करता हैं कि लूसिफर को सम्मान, सुंदरता और शाही गौरव दिया गया था। वह केवल उच्च ही नहीं था; वह सजाया गया था। स्वर्गीय प्राणियों ने उसे अधिकार और भव्यता के साथ विश्वास किया। उसे उन स्थानों (ईश्वर की उपस्थिति) तक पहुँचने की अनुमति थी जहाँ दूसरे नहीं जा सकते थे।

बाइबिल आगे कहती हैं:

“तू वह अभिषिक्त करूब हैं जो ढाँपता हैं; और मैंने तुझे ऐसा ही रखा हैं” (यज़्कएल 28:14)।

“अभिषिक्त करूब” ईश्वर के सिंहासन की रक्षा और निकटता की भूमिका का संकेत देता हैं। लूसिफर ईश्वर की उपस्थिति में खड़ा था। वह ईश्वर के शासन को ढाँपता, सुरक्षित रखता और उसका प्रतिनिधित्व करता था। यह स्थिति महत्वाकांक्षा के द्वारा अर्जित नहीं की गई थी; यह ईश्वर की उदारता का एक उपहार था।

वह “आग के पत्थरों के बीच ऊपर-नीचे चलता था” (यज़्कएल 28:14), यह ईश्वर की महिमामय उपस्थिति के प्रति घनिष्ठ पहुँच की एक तस्वीर हैं। ब्रह्मांड में कुछ ही प्राणियों को ऐसी निकटता पर विश्वास किया गया था।

स्वर्ग में उसकी भूमिका

लूसिफर की भूमिका नेतृत्व और सेवा दोनों थी। वह प्रेम के नियम पर आधारित ईश्वर के शासन के साथ सामंजस्य में काम करने के लिए बनाया गया था। उसका प्रभाव एकता को मजबूत करने के लिए था, न कि उसे तोड़ने के लिए। फ़रिश्ते उसकी प्रशंसा करते थे। उसकी बुद्धि और सुंदरता विश्वास को प्रेरित करती थी। उसकी आवाज़ में दबदबा था।

यशायाह उसकी पूर्व महानता की एक और झलक जोड़ते हैं:

“हे लूसिफर, भोर का पुत्र! तू स्वर्ग से कैसे गिरा!” (यशायाह 14:12)।

“भोर का पुत्र” वाक्यांश फिर से प्रकाश, चमक और प्रमुखता की ओर इशारा करता हैं। लूसिफर स्वर्ग का भोर का तारा जैसा था, जो फ़रिश्तों में चमकता था।

लूसिफर डर से नहीं, बल्कि बहुत प्रेम और विश्वास के साथ ईश्वर के अधीन था। लूसिफर स्वतंत्र, सम्मानित और सम्मानित था। ईश्वर ने उसके साथ अपने उद्देश्य साझा किए और उसे स्वर्ग के प्रशासन में भाग लेने की अनुमति दी।

लूसिफर के प्रति ईश्वर का विश्वास और उदारता

समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण सत्यों में से एक यह हैं: **ईश्वर ने लूसिफर का दुर्व्यवहार नहीं किया।** धर्मग्रंथ में स्पष्ट हैं कि लूसिफर के साथ उदारता, निष्पक्षता और प्रेम का व्यवहार किया गया था।

उसे अन्य फ़रिश्ता समूहों से ऊँची असाधारण भेंटों के साथ बनाया गया था: उसे असाधारण सुंदरता, बुद्धि, अधिकार और संगीत की क्षमताएँ प्रदान की गई थीं। (यज़्कएल 28:12-17)

“तू उस दिन से जिस दिन तू बनाया गया था, अपने रास्तों में पूर्ण था” (यज़्कएल 28:15)।

लूसिफर पूर्ण रूप से बनाया गया था। उसमें कोई छिपी हुई कमी नहीं थी, बुराई की कोई अंतर्निहित प्रवृत्ति नहीं थी। ईश्वर ने उसे इच्छा की स्वतंत्रता दी, जैसा वह सभी बुद्धिमान प्राणियों को देता हैं। वह स्वतंत्रता सच्चे प्रेम के लिए आवश्यक थी। जबरदस्ती वफ़ादारी प्रेम नहीं हैं, और ईश्वर ने कभी यांत्रिक आज्ञाकारिता नहीं चाही।

जो कुछ भी लूसिफर के पास था, वह ईश्वर से आया था: उसकी सुंदरता, उसकी बुद्धि, उसकी संगीत की क्षमताएँ, उसका अधिकार, और उसका प्रभाव। ईश्वर ने उसकी खुशी के लिए आवश्यक कुछ भी नहीं रोका। स्वर्ग का आनंद उसका आनंद था। ईश्वर की महिमा प्रतिबिंबित करना उसका विशेषाधिकार था।

फिर भी, वही स्वतंत्रता जिसने प्रेम को संभव बनाया, उसने विद्रोह को भी संभव बना दिया। यज़्कएल उन शब्दों के साथ आगे बढ़ते हैं जो ब्रह्मांड के मोड़ को चिह्नित करते हैं: "जब तक कि तुझमें अन्याय पाया गया" (यज़्कएल 28:15)।

यह छोटा वाक्यांश अत्यधिक भारी हैं। पाप ईश्वर से नहीं आया। यह लूसिफर के भीतर पैदा हुआ।

बाइबिल बाद में इस बदलाव के स्वभाव को समझाती हैं:

"तेरा हृदय तेरी सुंदरता के कारण घमंड से भर गया, तूने अपनी बुद्धि को अपनी चमक के कारण भ्रष्ट कर दिया" (यज़्कएल 28:17)।

किसी तरह, प्रकाश वाहक ने प्रकाश को अपने रूप में देखना शुरू कर दिया। कृतज्ञता धीरे-धीरे आत्म-केंद्रित हो गई। विश्वास घमंड में बदल गया। लेकिन ऐसे विचार एक पूर्ण स्वर्ग में कैसे पैदा हो सकते हैं? एक ऐसी जगह पर असंतोष कैसे बढ़ सकता हैं जहाँ कुछ भी कम नहीं था?

यह प्रश्न हमें सबसे बड़े रहस्य और सबसे बड़े विवाद के किनारे पर ले जाता हैं। लूसिफर के पास सब कुछ था—सम्मान, सुंदरता, उद्देश्य, स्वतंत्रता, और ईश्वर की निकटता। उसे किसी चीज़ की कमी नहीं थी, फिर भी उसके दिल में कुछ बदल गया।

लूसिफर ने एक प्रेममय ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह क्यों किया?
एक पूर्ण प्राणी में घमंड ने कृतज्ञता का स्थान कैसे ले लिया?
और एक फ़रिश्ते के आंतरिक विकल्प ने कैसे एक ब्रह्मांडीय संघर्ष का रूप ले लिया, जो पृथ्वी तक पहुँच गया?

अगले अध्याय में, हम इन सभी प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ेंगे और देखेंगे कि घमंड का बीज कैसे विद्रोह में बदल जाता हैं, जो पहली बार स्वर्ग की शांति को भंग करता हैं।

अध्याय 4 — स्वर्ग में विद्रोह का उदय

जब पाप ने कभी भी पृथ्वी को छुआ नहीं था, जब पीड़ा, मौत या डर के मानव की कहानी में आने से पहले, स्वर्ग के दरबार में एक शांत त्रासदी शुरू हुई। यह युद्ध या हिंसा से शुरू नहीं हुआ। यह एक रचित प्राणी के दिल में शुरू हुआ—घमंड के साथ।

स्वर्ग पूर्ण सामंजस्य की जगह थी। प्रेम बिना रुके बहता था। आनंद पूर्ण था। हर फ़रिश्ता ईश्वर का सम्मान करने के लिए जीता था, और उस सामंजस्य के केंद्र में लूसिफर खड़ा था, सभी रचित फ़रिश्तों में सबसे सम्मानित।

घमंड और आत्म-प्रशंसा

धीरे-धीरे, लूसिफर स्वयं को उच्च स्थान देने की इच्छा में लिप्त हो गया। धर्मग्रंथ प्रकट करता हैं कि उसके दिल के भीतर क्या हो रहा था:

तुझे अपने रूप का घमण्ड था; तूने अपने वैभव के कारण अपनी बुद्धि भ्रष्ट कर ली थी। अत: मैंने तुझको तेरे उच्चासन से उतार कर भूमि पर पटक दिया। मैंने तुझे राजाओं के सामने रखा कि वे तुझे देखें, और तेरा मजाक उड़ाएं। यहेजकेल 28:17

लूसिफर अपनी सुंदरता में चमकदार, अपनी बुद्धि में प्रतिभाशाली, और स्वर्गीय समूह से ऊँचा सम्मानित था। लेकिन उसने इन उपहारों को ईश्वर से आया हुआ देखने के बजाय, उन्हें अपना समझना शुरू कर दिया। कृतज्ञता धीरे-धीरे फीकी पड़ गई। ईश्वर के प्रति प्रशंसा, अपने प्रति प्रशंसा में बदल गई।

बाइबिल उन विचारों को भी दर्ज करती हैं, जिन्हें वह पोषित करने की हिम्मत करता था:

तूने अपने हृदय में सोचा था, "मैं आकाश पर चढ़ूंगा, परमेश्वर के तारों के ऊपर, ऊंचे से ऊंचे स्थान पर मैं अपना सिंहासन प्रतिष्ठित करूंगा। मैं दूरस्थ उत्तर में स्थित 'देवताओं के पर्वत' पर विराजूंगा। मैं बादलों के ऊपर उच्चतम स्थान पर चढ़ूंगा, मैं स्वयं को सर्वोच्च परमेश्वर के तुल्य बनाऊंगा।" यशायाह 14:13-14

यद्यपि उसकी सारी महिमा ईश्वर से थी, यह प्रभावशाली फ़रिश्ता उसे अपना समझने लगा। अपने पद से संतुष्ट नहीं, हालाँकि स्वर्गीय समूह से ऊँचा सम्मानित था, उसने केवल रचयिता के लिए उचित सम्मान को हथियाने की हिम्मत की। सभी रचित प्राणियों की प्रेम और वफ़ादारी में ईश्वर को सर्वोच्च बनाने की कोशिश करने के बजाय, उनकी वफ़ादारी को अपने लिए

सुरक्षित करना उसकी इच्छा बन गई। और सबसे खतरनाक बात यह हैं कि, उसने ईश्वर के पुत्र, यीशु के पद को ईर्ष्या करना शुरू कर दिया।

लूसिफर की पिता और पुत्र के बराबर होने की इच्छा

अनंत पिता ने जिस महिमा से अपने पुत्र को सम्मानित किया था, उसे हथियाने के लिए, फ़रिश्तों का यह राजकुमार केवल यीशु के अधिकार में आने वाली शक्ति की इच्छा रखने लगा। वह यह प्रश्न करता था कि यीशु को उससे ऊँचा सम्मान क्यों दिया जाए। उसके दिल में एक अनकहा विचार उठा: मैं क्यों नहीं?

अब स्वर्ग का पूर्ण सामंजस्य टूट गया।

लूसिफर की निस्वार्थ प्रेम के बजाय स्वयं-सेवा की भावना ने उन फ़रिश्तों में चिंता पैदा कर दी, जो ईश्वर की महिमा को सबसे ऊपर मानते थे। स्वर्गीय परिषद में, उन्होंने उससे विनती की। ईश्वर के पुत्र ने स्वयं लूसिफर के सामने पिता की महानता, भलाई और न्याय, और ईश्वर के नियम के पवित्र, अपरिवर्तनीय स्वभाव को प्रस्तुत किया।

लूसिफर को प्रेम में चेतावनी दी गई। उसे बताया गया था कि ईश्वर ने स्वर्ग का व्यवस्था स्थापित की हैं और उससे विचलित होना विनाश लाएगा। लेकिन खुद को नम्र करने के बजाय, लूसिफर ने यीशु की ईर्ष्या को हावी होने दिया। चेतावनी ने केवल उसके प्रतिरोध को मजबूत किया।

पिता ने सच साफ़ किया

दया और पारदर्शिता में, ब्रह्मांड के राजा ने स्वर्गीय समूह को बुलाया। उन सबके सामने, उसने अपने पुत्र की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट रूप से बताया।

ईश्वर के पुत्र ने पिता के सिंहासन को साझा किया। अनंत, स्वयं-व्यक्त प्राणी की महिमा दोनों को घेरे रही। सिंहासन के चारों ओर फ़रिश्तों का एक विशाल, अगणित समूह इकट्ठा हुआ:
“हज़ारों गुना हज़ार, और लाखों-करोड़ों।” — प्रकाशितवाक्य 5:11

इकट्ठा हुए ब्रह्मांड के सामने, पिता ने घोषित किया कि यीशु, उनके एकमात्र पुत्र, अकेले ही उनके उद्देश्यों को पूरी तरह से समझ सकते हैं। उन्हें दिव्य इच्छा को निष्पादित करने का भार सौंपा गया था। यीशु ने पिता के साथ स्वर्ग के सभी समूहों को बनाने में काम किया था, और उनके, साथ ही ईश्वर के प्रति, उनकी वफ़ादारी और पूजा योग्य थी। (मत्ती 11:27; यूहन्ना 1:18, कुलुसियों 1:15–17)

फ़रिश्ते आनंदित हुए। वे प्रेम और वफ़ादारी के साथ यीशु के सामने झुके। यहाँ तक कि लूसिफर भी बाहरी तौर पर झुका—लेकिन अंदर, एक भयंकर संघर्ष मच रहा था।

सत्य और वफ़ादारी, ईर्ष्या और घमंड से जूझ रहे थे। क्षण भर के लिए, पूजा ने उसके दिल को नरम कर दिया। प्रेम उसके अस्तित्व में एक रोमांच पैदा कर रहा था। लेकिन घमंड वापस आ गया। एक बार फिर, उसने यीशु के प्रति ईर्ष्या को बढ़ावा दिया।

“क्यों,” उसने अपने दिल में प्रश्न किया, “यीशु का सर्वोच्च होना क्यों हैं? वह लूसिफर से ऊँचा क्यों सम्मानित हैं?”

लूसिफर के ईश्वर के खिलाफ आरोप

पिता की तत्काल उपस्थिति छोड़कर, लूसिफर ने एक खतरनाक काम शुरू किया। शांति से। गुप्त रूप से। सावधानी से।

वह फ़रिश्तों के बीच गया, शंका के बीज फैलाते हुए। उसने विद्रोह को चिंता के रूप में छिपाया। आदर को तर्क के रूप में।

उसने ईश्वर के नियम पर सवाल उठाना शुरू कर दिया, यह सुझाव देते हुए कि फ़रिश्तों को—जो बुद्धिमान और उच्च हैं—नियमों की आवश्यकता नहीं हैं। उसने इशारा किया कि नियम स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करता हैं (भजन 94:20)। उसने संकेत दिया कि ईश्वर का शासन अन्यायपूर्ण था और यीशु की उच्चता एक अन्याय थी।

ऐसा करके, लूसिफर ने **ईश्वर के नियम** और **ईश्वर के चरित्र** दोनों का गलत चित्रण किया।

ईश्वर का नियम, जो प्रेम पर आधारित था, उसे नियंत्रण के रूप में प्रस्तुत किया गया। ईश्वर का अधिकार, जो आनंद और सुरक्षा के लिए था, उसे उत्पीड़न के रूप में चित्रित किया गया। लूसिफर ने दावा किया कि यदि उसे उच्च स्थान दिया जाए, तो स्वतंत्रता बढ़ेगी और खुशी फलेगी-फूलेगी। (पतरस 2:19)

इस दौरान, वह इस बात पर ज़ोर देता रहा कि वह ईश्वर का वफ़ादार हैं। लेकिन यीशु ने हमें शैतान के बारे में यह बताया: "वह आरंभ से ही एक हत्यारा था, और वह सत्य में नहीं रहता... जब वह झूठ बोलता हैं, तो वह अपनी ओर से बोलता हैं: क्योंकि वह एक झूठा हैं।" यूहन्ना 8:44

गलत चित्रण और छल

यीशु के अधिकार में कोई बदलाव नहीं हुआ था। उनका पद हमेशा एक जैसा रहा था। लेकिन लूसिफर की ईर्ष्या ने इसे अलग दिखाया।

अपने पर विश्वास करने वालों का उपयोग करके, लूसिफर ने अपनी असंतोष को सूक्ष्म रूप से अपने प्रभाव वाले फ़रिश्तों के दिमाग में भर दिया। वह उनके संदेह को दोहराता था, यह साबित करने के लिए कि कई लोग ईश्वर के शासन के अधीन अप्रसन्न थे। जबकि गुप्त रूप से विद्रोह को भड़का रहा था, वह शांति के लिए काम करने वाला दिखाई देता था।

असंतोष की भावना शांति से फैल गई। अभी तक कोई खुला विद्रोह नहीं हुआ था, लेकिन बंटवारा बढ़ रहा था। कुछ फ़रिश्ते लूसिफर के तर्क से सहानुभूति रखते थे। अन्य वफ़ादार रहे, और नाराज़ लोगों से ईश्वर की बुद्धि पर भरोसा करने की विनती करते थे।

वफ़ादार फ़रिश्तों ने उन्हें याद दिलाया कि यीशु हमेशा पिता के साथ एक थे, फ़रिश्तों के अस्तित्व में आने से बहुत पहले। उनके शासन के अधीन स्वर्ग ने पूर्ण सामंजस्य जाना था। अब वह सामंजस्य क्यों टूटना चाहिए?
लेकिन बीज बो दिए गए थे।

खतरे के किनारे पर स्वर्ग — स्वर्ग एक चौराहे पर खड़ा था।

अभी तक कोई खुली बहस नहीं हुई थी। कोई बौद्धिक लड़ाई शुरू नहीं हुई थी। लेकिन दिल पक्ष चुन रहे थे। ईश्वर पर विश्वास की परीक्षा हो रही थी। वफ़ादारी को घमंड के खिलाफ तौला जा रहा था।

एक समय पूर्ण एकता वाले स्वर्ग की एकता, छल के भार के नीचे काँप रही थी।

और जल्द ही, विचारों और फुसफुसाहटों में छिपा संघर्ष खुले युद्ध में तब्दील हो जाएगा।

मैंने महान विवाद की शुरुआत का यह इतिहास एलेन जी. व्हाइट द्वारा लिखित पुस्तक 'पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता' के अध्याय 1 से समझा और सीखा हैं।

श्रीमती एलेन जी. व्हाइट अपनी पुस्तक में इस इतिहास को बहुत विस्तार के साथ लिखती हैं। मैंने केवल इसका सारांश प्रस्तुत करने और इसके महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करने की कोशिश की हैं।

अगले अध्याय में, विद्रोह अब गुप्त नहीं रहेगा... **स्वर्ग में युद्ध छिड़ जाएगा।**

अध्याय 5 — स्वर्ग में युद्ध

बाइबिल एक ऐसे संघर्ष पर से पर्दा उठाती हैं, जिसे अधिकांश लोग कभी नहीं देख पाते, परन्तु यह आज हम जो कुछ भी अनुभव करते हैं, उसकी व्याख्या करता हैं।

अब स्वर्ग में युद्ध छिड़ गया। मीखाएल और उसके दूतों को पंखदार सर्प से लड़ना पड़ा। पंखदार सर्प और उसके दूतों ने उनका सामना किया, प्रकाशन 12:7

यह तलवारों और आग का युद्ध नहीं था। कोई भौतिक हथियार नहीं टकराए। यह **विचारों**, **चरित्र** और **विश्वास** का युद्ध था। इसके सार में, यह **सत्य और छल**, **प्रेम और आत्म-प्रशंसा** के बीच एक संघर्ष था।

माइकल, जिसका नाम का अर्थ हैं *"कौन परमेश्वर के समान हैं?"*, परमेश्वर की भलाई पर विश्वास करने वाले देवदूतों के साथ खड़े थे। माइकल कोई और नहीं बल्कि अवतार धारण करने से पहले के यीशु हैं।

यीशु और उनके देवदूतों का विरोध लूसिफर कर रहा था, जिसे अजगर के रूप में पहचाना जाता हैं, वह उन देवदूतों का नेतृत्व कर रहा था जो परमेश्वर के चरित्र और शासन पर संदेह करने लगे थे। (*प्रकाश 12:9*)

युद्ध का मैदान मन था। शैतान का हथियार झूठ के साथ बहलाना था।

एक उत्तम स्थान में एक अजीब विचार

इस संघर्ष से पहले, स्वर्गीय प्राणियों को कोई दुःख, कोई संदेह, कोई भय नहीं था। सामंजस्य सांस लेने जितना ही स्वाभाविक था। फिर भी, कुछ नया प्रकट हुआ, वह कुछ जिसे स्वर्ग ने पहले कभी नहीं जाना था: **असंतोष।**

अपने दिव्य चरित्र के अनुसार, परमेश्वर ने अत्यधिक करुणा के साथ उस व्यक्ति को, जिसने यह अशांति शुरू की, लंबे समय तक सहन किया। असंतोष की भावना स्वर्ग में पहले कभी अस्तित्व में नहीं थी। यह उस व्यक्ति के लिए जो इसे महसूस कर रहा था, अजीब, रहस्यमय और यहाँ तक कि भ्रमित करने वाला भी था। शुरू में, लूसिफर अपने विचारों को पूरी तरह से नहीं समझ पाया। वह उन्हें व्यक्त करने से डरता था, परन्तु उन्हें खारिज भी नहीं करता था।

परमेश्वर ने बल के साथ प्रतिक्रिया नहीं की। इसके बजाय, **अनंत प्रेम और ज्ञान ने काम करना शुरू कर दिया।**

परमेश्वर ने धैर्यपूर्वक शैतान से तर्क किया। उन्होंने बताया कि वह करुणा के साथ न्याय कैसे करते हैं। उन्होंने शैतान को दिखाया कि उसके विचार उसे कहाँ ले जाएँगे। विद्रोही को यह देखने के लिए मजबूर किया गया कि "प्रभु अपने सभी मार्गों में धार्मिक हैं, और अपने सभी कामों में पवित्र हैं" (भजन संगीत 145:17)। वह यकीनन—भले ही क्षण भर के लिए—इस बात पर आ गया कि वह गलत था।

करुणा का द्वार खुला था। यदि वह नम्र होता, अपनी गलती स्वीकार करता, और परमेश्वर के ज्ञान पर फिर से विश्वास करता, तो उसे पुनर्स्थापित किया जा सकता था। स्वर्ग आनंदित होता। कई देवदूत छल से बचाए जा सकते थे।

परन्तु रास्ते में कुछ आड़े आया।—-**अहंकार।**

गलती स्वीकार करना एक हानि जैसा महसूस होता था। झुकना अपमानजनक लगता था। और इसलिए, लौटने के बजाय, उसने अपना दिल फिर से कठोर कर लिया।

शैतान का मूल छल

पिता की निकटतम उपस्थिति में अपने स्थान को छोड़कर, लूसिफर देवदूतों के बीच असंतोष की भावना फैलाने के लिए निकला। उसने रहस्यमयी गुप्तता के साथ काम किया, और कुछ समय के लिए परमेश्वर के प्रति आदर के बहाने अपने वास्तविक उद्देश्य को छिपाया रहा। उसने स्वर्गीय प्राणियों को नियंत्रित करने वाले नियमों के बारे में संदेह बोना शुरू कर दिया, यह इशारा करते हुए कि भले ही नियम दुनिया के निवासियों के लिए आवश्यक हो सकते हैं, लेकिन देवदूत, अधिक उच्च होने के कारण, ऐसे बंधनों की आवश्यकता नहीं हैं, क्योंकि उनकी अपनी ज्ञान ही एक पर्याप्त मार्गदर्शक हैं। वे ऐसे प्राणी नहीं थे जो परमेश्वर को अपमानित कर सकते थे; उनके सभी विचार पवित्र थे; उनके लिए गलती करना स्वयं परमेश्वर के लिए गलती करने जितना असंभव था। परमेश्वर के पुत्र का पिता के समान समान पद पर उठाया जाना, लूसिफर के प्रति अन्याय के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जिसे, यह दावा किया गया था, आदर और सम्मान का भी अधिकारी था। यदि देवदूतों का यह राजकुमार अपने वास्तविक, उच्च पद पर पहुँच जाता, तो पूरे स्वर्गीय दल को बहुत लाभ होता; क्योंकि उसका उद्देश्य सभी के लिए स्वतंत्रता सुनिश्चित करना था। {पीपी 37:1}

एक झूठ पर शैतान ने दूसरा झूठ जोड़ा। "महान विवाद की शुरुआत में, शैतान ने घोषणा की थी कि परमेश्वर के नियम का पालन नहीं किया जा सकता, कि न्याय, करुणा के साथ असंगत हैं, और कि, यदि नियम तोड़ा जाता हैं, तो पापी को क्षमा करना असंभव हैं। **हर पाप को अपनी सजा मिलनी चाहिए, शैतान ने जोर दिया;** और यदि परमेश्वर पाप की सजा माफ़ करते, तो वे सत्य और न्याय के परमेश्वर नहीं होते। जब मनुष्यों ने परमेश्वर के नियम को तोड़ा और उनकी इच्छा की अवज्ञा की, तो शैतान फूला नहीं समाया। यह साबित हो गया, उसने घोषित किया, कि नियम का पालन नहीं किया जा सकता; मनुष्य को क्षमा नहीं किया जा सकता। क्योंकि अपने विद्रोह के बाद उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया था, शैतान ने दावा किया कि मानव जाति को हमेशा के लिए परमेश्वर की कृपा से दूर रखा जाना चाहिए। परमेश्वर न्यायी नहीं रह सकते थे, उसने जोर दिया, और साथ ही पापी पर दया करते।" {डीओए, पृ.761}

इसलिए, यह ध्यान देने योग्य हैं कि यह शैतान का विचार था कि हर पाप को दंडित किया जाना चाहिए और परमेश्वर दयालु बनकर भी न्यायी नहीं रह सकते, जो शैतान का बनाया हुआ झूठ था। उसने ये विचार लिए और उन्हें परमेश्वर और उनके राज्य पर प्रक्षेपित किया। परमेश्वर को क्रूर और निरंकुश बनाने के लिए। उसने देवदूतों से कहा, "परमेश्वर प्रेम करते हैं, लेकिन यदि वे उसके नियम को तोड़ेंगे तो वह उन्हें हमेशा के लिए नष्ट कर देगा।" यह उन सभी देवदूतों के लिए एक बड़ा झटका था, जो शैतान के द्वारा धोखा दिए गए थे। उन्होंने शैतान के बेतुके झूठ पर विश्वास किया जिसके कारण वे गिर गए। यह वही झूठ था जिसे शैतान ने एडन के बाग़ में आदम और हव्वा से बहुत सूक्ष्म रूप से संवाद किया था। निश्चित रूप से, अधर्म (जानबूझकर ज्ञात पाप में लगे रहना) हमें नष्ट कर देगा, लेकिन इसलिए नहीं कि परमेश्वर हमें शाब्दिक रूप से नष्ट कर देंगे। बल्कि इसलिए कि अधर्म हमें परमेश्वर से अलग कर देता हैं (यशायाह 59:2)। परमेश्वर की अनुपस्थिति दुख और शाश्वत मृत्यु लाती हैं, क्योंकि पाप में जीने का चुनाव करके कोई आशीर्वाद और जीवन के स्रोत को अस्वीकार करता हैं।

शैतान ने परमेश्वर के चरित्र, राज्य और हमारे साथ व्यवहार करने के तरीके के बारे में जो कुछ फैलाया, उसमें उस बात से एक बड़ा विरोधाभास हैं जिसे हमने पहले अध्ययन किया था: *'तेरी भुजा बलवन्त हैं; तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दाहिना हाथ प्रबल हैं। **तेरे** सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय हैं; करुणा और सच्चाई **तेरे** आगे आगे चलती हैं।'* (*भजन संहिता 89:13-14*)

इस पद्य के बीच में अपूर्णविराम (:) का प्रयोग यह व्यक्त करने के लिए हैं कि धार्मिकता और न्याय का क्या अर्थ हैं - यह कि परमेश्वर हमारे प्रति करुणामय और सत्यवानी हैं। जिस तरह यीशु ने व्यभिचार करते पकड़ी गई उस महिला के साथ व्यवहार किया, जिसे फरीसी और याजक पत्थर मारने के लिए तैयार थे, वह परमेश्वर के द्वारा अपने उन बच्चों से व्यवहार करने का एक उत्तम और सुंदर उदाहरण हैं जो जाने-अनजाने पाप करते हैं।

परमेश्वर की धार्मिकता और न्याय इस तरह से निष्पादित होता हैं कि एक पापी के प्रति करुणा दिखाई जाए और साथ ही उसकी स्थिति या पापमय कर्म के बारे में सत्य प्रस्तुत किया जाए, ताकि उसका हृदय प्रेम से निकलने वाले पश्चात्ताप के साथ परमेश्वर की ओर मुड़ जाए। वास्तव में, परमेश्वर की धार्मिकता और न्याय का तत्व ही उन्हें प्रेम करने वाले परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग होने से बचाना हैं।

आज बहुत से लोग सच्चे पश्चात्ताप की ओर नहीं आते क्योंकि वे परमेश्वर के राज्य के वास्तविक स्वभाव और चरित्र को जानने से बहुत दूर हैं। उनके लिए, परमेश्वर और मनुष्य की न्याय व्यवस्था अधिक या कम समान लगती हैं। इसलिए, अपने धार्मिक अनुभव में भी वे विधिवाद (legalism) के गड्ढे में गिरने से आगे नहीं बढ़ पाते।

करुणा की गलत व्याख्या

लेकिन शैतान के मामले में, परमेश्वर का धीर्ज उसे ठीक करने और उसे पुनर्स्थापित करने के लिए था—लेकिन इसकी गलत व्याख्या की गई।

एक करुणामय निर्माता, जो सबको बचाने के लिए लालायित थे, ने लगातार निमंत्रण और चेतावनी दी। लेकिन इस करुणा को कथित कमजोरी के सबूत के रूप में बदल दिया गया। विद्रोही ने यह सुझाव देना शुरू कर दिया कि परमेश्वर की धीर्ज का मतलब हैं कि उन्हें चुनौती दी जा सकती हैं, यहाँ तक कि उन्हें पदच्युत भी किया जा सकता हैं।

"यदि हम सब मिलकर खड़े हों," उसने अपने पक्ष के देवदूतों से कहा, "तो हम और अधिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। हम एक बेहतर शासन स्थापित कर सकते हैं।"

इस प्रकार छल और भी बोल्ड होता गया। उसने वफादार देवदूतों की अपीलों को अस्वीकार कर दिया, उन्हें धोखा खाए हुए और गुलाम बताया। उसने परमेश्वर के पुत्र पर अनुचित सम्मान पाने का आरोप लगाया। उसने स्वतंत्रता, समानता और आत्म-शासन का वादा किया—जबकि वह चुपके से नियंत्रण हासिल करने की कोशिश कर रहा था।

और कई देवदूतों ने उसे सुना। वफादारी या विद्रोह। अब स्वर्ग बंट गया था—बल के द्वारा नहीं, बल्कि **चुनाव** के द्वारा।

वफादार देवदूतों ने शैतान और उसके देवदूतों से बहुत विनम्रता से अपील की। उन्होंने चेतावनी दी कि परमेश्वर का नियम उनके चरित्र जितना ही अपरिवर्तनीय हैं। उन्होंने उनसे पश्चात्ताप करने का आग्रह किया, सभी को याद दिलाया कि कोई भी निर्मित प्राणी उस एक के खिलाफ सफल नहीं हो सकता जिसने उन्हें जीवन दिया था।

कुछ लोग डगमगा गए। कुछ लौटने के लिए तैयार थे। लेकिन एक और झूठ ने उनके फैसले को पक्का कर दिया। शैतान ने उनसे कहा, "तुम बहुत दूर तक चले गए हो। अब परमेश्वर तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।"

यह सच नहीं था—लेकिन इस पर विश्वास कर लिया गया। अहंकार, एक नेता के प्रति वफादारी, और बिना रोक-टोक की स्वतंत्रता की इच्छा, सत्य की शांत आवाज़ से अधिक भारी पड़ी। और एक-एक करके, दिव्य प्रेम की अपीलों को अस्वीकार कर दिया गया।

यह एक ऐसा प्रश्न उठाता हैं जिसे कई नए विश्वासी पूछते हैं: ईश्वर ने यह बिल्कुल क्यों होने दिया?
उत्तर सरल हैं—और महंगा। प्रेम बिना स्वतंत्रता के अस्तित्व में नहीं रह सकता।

ईश्वर ने रोबोट नहीं बनाए। देवदूतों को वास्तविक मन, वास्तविक इच्छा-शक्ति, और चुनने की वास्तविक क्षमता दी गई थी। जबरदस्ती का आज्ञापालन प्रेम नहीं हैं। भय से प्रेरित पूजा भक्ति नहीं हैं।

शास्त्र हर जगह इस सिद्धांत को प्रकट करता हैं: "आज इस दिन अपने लिए चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे" (यहोशू 24:15)।

स्वतंत्रता ने विद्रोह को संभव बनाया—लेकिन इसने प्रेम को सच्चा भी बनाया।

ईश्वर ने विद्रोही को तुरंत क्यों नष्ट नहीं किया ?

जब विद्रोह आखिरकार खुले युद्ध में बदल गया, तो माइकल और उसके देवदूत दृढ़ता से खड़े रहे। अजगर और उसके अनुयायियों को बाहर फेंक दिया गया (प्रकाश 12:8–9)। तब भी, परमेश्वर ने उसे नष्ट नहीं किया।

क्यों? क्योंकि सारा ब्रह्मांड देख रहा था। यदि तत्काल विनाश होता, तो आज्ञापालन भय पर आधारित होता, विश्वास पर नहीं। सवाल बने रहते। अगड़ै देवदूतों के दिलों में संदेह बना रहता।

परमेश्वर ने विद्रोह को पूरी तरह से प्रकट होने दिया। धोखेबाज़ ने दावा किया था कि परमेश्वर का नियम अन्यायपूर्ण हैं। अब इसे अस्वीकार करने के परिणाम देखे जाएँगे। उसने स्वतंत्रता पाने का दावा किया था। अब उस स्वतंत्रता का फल प्रकट हो जाएगा।

समय के दौर, इतिहास के माध्यम से, और कष्टों के बीच, ब्रह्मांड एक स्थायी सबक सीखेगा: *"“वह चट्टान हैं, उसका काम खरा हैं; और उसकी सारी गति न्याय की हैं। वह सच्चा ईश्वर हैं, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा हैं। व्यवस्थाविवरण 32:4*

यह स्वर्ग में हुआ युद्ध सिर्फ देवदूतों के बारे में नहीं था। यह **आप**के बारे में था। यह भविष्य के लिए एक सुरक्षा थी। यह इस बात का प्रकाशन था कि पाप वास्तव में क्या हैं। यह इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर का अधिकार स्वार्थी नहीं हैं, उसका नियम बंधनकारी नहीं हैं, और उसकी करुणा कमजोरी नहीं हैं।

हालांकि, “उसके चारों ओर बादल और अंधेरा छाया रहता हैं," शास्त्र हमें आश्वस्त करता हैं कि "उसके सिंहासन की नींव धार्मिकता और न्याय हैं" (भजन संगीत 97:2)।

एक दिन हर सवाल का जवाब दे दिया जाएगा। हर संदेह शांत हो जाएगा। हर प्राणी—चाहे वफादार हो या विद्रोही—यह देखेगा कि परमेश्वर हमेशा से न्यायी, करुणामय और प्रेमी रहे हैं।

एक दिन हर घुटना पिता परमेश्वर और उनके प्रिय पुत्र के सामने झुककर उनकी धार्मिकता, न्याय, करुणा और सत्यता को स्वीकार करेगा। (फिलिप्पियों 2:10,11)

और स्वर्ग में शुरू हुआ वह युद्ध कभी फिर नहीं उठेगा।

अध्याय 6 — शैतान का निष्कासन

इससे पहले कि हमारी दुनिया दर्द, भय और मृत्यु से भर जाती, शांति थी। इंसानी आँसूओं के गिरने से पहले, स्वर्ग ने भी गहरे दुःख और संघर्ष का एक पल अनुभव किया था।

फिर स्वर्ग में लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उसके दूत उससे लड़े, परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही। तब वह बड़ा अजगर, अर्थात् वही पुराना साँप जो इब्लीस और शैतान कहलाता हैं और सारे संसार का भरमानेवाला हैं, पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। प्रकाशितवाक्य 12:7-9

यह तलवारों या हथियारों का युद्ध नहीं था। यह सत्य का युद्ध था। लूसिफर ने परमेश्वर के चरित्र के विरुद्ध तर्क दिए। उसने परमेश्वर पर अन्यायी और प्रतिबंधक होने का आरोप लगाया। लेकिन जब समय आया, तो लूसिफर अपने दावों को साबित नहीं कर सका। सत्य अडिग रहा। प्रेम को हराया नहीं जा सका।

तब भी परमेश्वर ने शैतान को पकड़कर जबरदस्ती स्वर्ग से बाहर नहीं निकाला। स्वर्ग स्वतंत्रता का स्थान हैं। परमेश्वर कभी वफादारी जबरदस्ती नहीं करते। जब लूसिफर अपने झूठों का बचाव नहीं कर सका, जब वह अपने छल से सभी स्वर्गीय सैनिकों के दिल जीत नहीं सका, तो उसने चले जाने का फैसला किया। जैसा कोई खिलाड़ी हारता देखकर खेल छोड़ देता हैं, उसी तरह शैतान ने अपनी पूरी हार से पहले ही अपना पद छोड़ दिया। इसी तरह वह स्वर्ग से निकाला गया।

बाइबिल विद्रोही देवदूतों के बारे में कहती हैं:

फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में, जो सदा काल के लिये हैं, बन्धनों में रखा हैं। यहूदा 1:6

शैतान इसलिए गया क्योंकि उसके विद्रोह का कोई आधार नहीं था। और वह अकेला नहीं गया। कई देवदूतों ने उसके झूठ पर विश्वास किया और उसका अनुसरण किया।

आकाश में एक और अद्भुत दृश्य दिखाई दिया; और देखो, सात सिर और दस सींग वाला एक बड़ा लाल अजगर था, और उसके सिरों पर सात मुकुट थे। और उसकी पूंछ ने स्वर्ग के तारों का एक तिहाई हिस्सा खींच लिया, और उन्हें पृथ्वी पर फेंक दिया: प्रकाश 12:3,4

प्रतीकात्मक रूप से, स्वर्ग के एक-तिहाई तारे उन स्वर्गीय देवदूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें अजगर (शैतान) ने धोखा दिया और उन सभी को पृथ्वी पर फेंक दिया। तो यह शैतान था जिसने देवदूतों को एक नए ब्रह्मांड की खोज में स्वर्ग छोड़ने के लिए प्रभावित किया।

एक नई दुनिया, एक नई शुरुआत

स्वर्ग में हुई इस त्रासदी के बाद, परमेश्वर ने छह दिनों में पृथ्वी का निर्माण किया और सातवें दिन उसने विश्राम किया। पृथ्वी सुंदर, जीवन, रंग और शांति से भरी थी। निश्चित रूप से यह आज की तुलना में सौ गुना बेहतर थी। सृष्टि के केंद्र में दो प्राणी थे: आदम और हव्वा, परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट सृष्टि।

परमेश्वर ने कहा, "आओ हम अपने स्वरूप के अनुसार मनुष्य को बनाएँ; हमारे समान: और उन्हें समुद्र की मछलियों पर, आकाश के पक्षियों पर, पशुओं पर, और सारी पृथ्वी पर, और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर जीव पर अधिकार दे।" इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया; परमेश्वर के स्वरूप में उसने उसे बनाया; नर और नारी उसने उन्हें बनाया।" — उत्पत्ति 1:27

परमेश्वर के स्वरूप में बनाए जाने का अर्थ था कि वे उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करेंगे। वे प्रेम, बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और चुनाव की स्वतंत्रता के साथ बनाए गए थे। वे सोच सकते थे, तर्क कर सकते थे, और निर्णय ले सकते थे। सबसे महत्वपूर्ण बात, वे प्रेम कर सकते थे—क्योंकि प्रेम हमेशा स्वेच्छा से दिया जाना चाहिए।

परमेश्वर ने उन्हें पृथ्वी पर अधिकार दिया। वे रक्षक, परमेश्वर के अधीन शासक थे, जिन्हें एक पूर्ण दुनिया की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

आदम और हव्वा एक दुर्घटना नहीं थे। वे एक मागे पड़ा हुआ विचार नहीं थे। स्वर्ग में शैतान के विद्रोह से पहले ही, परमेश्वर ने पृथ्वी को बनाने और उसे मनुष्यों को देने की योजना बनाई थी।

सृजन के दिनों में परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया वह अच्छा और पूर्ण था। सब कुछ शांतिपूर्ण और सुखद था। लेकिन स्वर्ग में शुरू हुआ युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ था।

अब, पतित और घृणा से भरा हुआ, शैतान ने अपना और अपने अनुयायियों का ध्यान हमारी नई दुनिया की ओर कर दिया।

जब स्वर्ग में विद्रोह भड़काने के लिए स्वतंत्र नहीं रहा, तो शैतान का परमेश्वर के प्रति शत्रुत्व ने मानव जाति के विनाश की साजिश रचने में एक नया क्षेत्र ढूंढ लिया। एडन के पवित्र जोड़े के आनंद और शांति में, उसने उस आनंद का एक दृश्य देखा जो उसके लिए सदैव के लिए खो गया था। ईर्ष्या से वशीभूत होकर, उसने उन्हें अवज्ञा करने के लिए उकसाने और उन पर पाप का दोष और दंड लाने का फैसला किया। वह उनके प्रेम को अविश्वास में और उनकी प्रशंसा के गीतों को उनके निर्माता के खिलाफ निंदा में बदल देगा। इस प्रकार, वह न केवल इन मासूम प्राणियों को उसी दुःख में धकेलेगा जिसमें वह स्वयं फंसा हुआ था, बल्कि परमेश्वर पर अपमान करेगा और स्वर्ग में दुःख का कारण बनेगा। *पीपी. 52.1, अध्याय 3—प्रलोभन और पतन*

हमारे पहले पूर्वजों को उन्हें खतरे की चेतावनी दिए बिना नहीं छोड़ा गया था। स्वर्गीय दूतों ने उन्हें शैतान के पतन और उनके विनाश की साजिश का इतिहास बताया, जिस दिव्य शासन के स्वभाव को और अधिक प्रकट किया, जिसे दुष्ट राजकुमार उखाड़ फेंकने की कोशिश कर रहा था। *पीपी. 52.2, अध्याय 3—प्रलोभन और पतन*

और प्रभु परमेश्वर ने एडन के पूर्व में एक उद्यान लगाया; और वहाँ उसने उस मनुष्य को रखा जिसे उसने गढ़ा था। और प्रभु परमेश्वर ने भूमि से देखने में सुंदर और खाने में अच्छा हर एक पेड़ उगाया; उद्यान के बीच में जीवन का वृक्ष भी, और अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष भी। उत्पत्ति 2:8,9

और प्रभु परमेश्वर ने उस मनुष्य को लिया, और उसे एडन के उद्यान में रखा, कि वह उसकी देखभाल करे और उसकी रक्षा करे। और प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, कहते हुए, "उद्यान के हर एक वृक्ष के फल तुम स्वेच्छा से खा सकते हो: परन्तु अच्छाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल तुम न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उस दिन तुम निश्चित रूप से मर जाओगे।" उत्पत्ति 2:15-17

इसके कुछ समय बाद, शैतान स्वर्ग में उपयोग किए गए उसी योजना के साथ एडन के उद्यान में प्रवेश किया। वह छल के साथ आया। उसने एक सर्प के रूप में हव्वा का समीपस्थ किया।

बाइबिल कहती हैं: अब वह सर्प प्रभु परमेश्वर के द्वारा बनाए गए मैदान के किसी भी जानवर से अधिक चालाक था। और उसने स्त्री से कहा, "क्या सचमुच परमेश्वर ने कहा हैं कि तुम उद्यान के किसी भी वृक्ष के फल नहीं खाओगे?"

सबसे पहले, उसने संदेह बोया। "क्या परमेश्वर ने वास्तव में कहा हैं कि तुम उद्यान के हर वृक्ष का फल नहीं खाओगे?" — उत्पत्ति 3:1

यह वही प्रश्न था जिसे उसने स्वर्ग में उठाया था। क्या परमेश्वर पर विश्वास किया जा सकता हैं? क्या वह सचमुच अच्छा हैं? क्या उसका वचन सच हैं?

और स्त्री ने सर्प से कहा, "हम उद्यान के वृक्षों के फल खा सकते हैं: परन्तु उद्यान के बीच में लगे वृक्ष के फल के विषय में परमेश्वर ने कहा हैं, तुम उसे न खाओ, न उसे छुओ, कहीं तुम मर न जाओ।"

फिर छल आया। शैतान ने परमेश्वर के वचनों को बदल दिया, जिससे आज्ञापालन अनावश्यक और अवज्ञा हानिरहित लगे।

तब सर्प ने स्त्री से कहा, *“तुम निश्चय न मरोगे! वरन् परमेश्वर आप जानता हैं कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।” उत्पत्ति 3:4-5*

यहाँ झूठ का पिता, परमेश्वर के व्यक्त वचन के सीधे विरोध में, अपना दावा प्रस्तुत किया। शैतान ने हव्वा को आश्वासन दिया कि वह अमर बनाई गई हैं, और उसके मरने की कोई संभावना नहीं हैं। उसने उससे कहा कि परमेश्वर जानता था कि यदि वह और उसका पति ज्ञान के वृक्ष का फल खाएंगे, तो उनकी समझ प्रबुद्ध होगी, विस्तारित होगी और उन्नत होगी, जिससे वे उसके समान हो जाएँगे।

और सर्प ने हव्वा को उत्तर दिया कि परमेश्वर का वह आदेश, जिसमें उन्हें ज्ञान के वृक्ष का फल खाने से मना किया गया था, इसलिए दिया गया था ताकि वे अधीनता की ऐसी स्थिति में बने रहें कि वे ज्ञान प्राप्त न करें, जो कि शक्ति थी। उसने उसे आश्वस्त किया कि इस वृक्ष का फल उद्यान के किसी भी अन्य वृक्ष की तुलना में उन्हें बुद्धिमान बनाने और उन्हें परमेश्वर के समान उच्च स्थान पर ले जाने के लिए अधिक वांछनीय था। सर्प ने कहा, उसने तुम्हें उस वृक्ष का फल इसलिए निकाल दिया हैं क्योंकि सभी वृक्षों में यह अपने स्वादिष्ट स्वाद और उत्साहवर्धक प्रभाव के लिए सबसे अधिक वांछनीय हैं। {Con 13.3}

हव्वा ने सोचा कि सर्प का भाषण बहुत बुद्धिमानी भरा हैं, और परमेश्वर का प्रतिबंध अन्यायपूर्ण हैं। उसने लालसा से उस वृक्ष को देखा, जो फलों से लदा हुआ था और बहुत स्वादिष्ट लग रहा था। सर्प उसे स्पष्ट रूप से आनंद के साथ खा रहा था। वह इस फल की इच्छा उन सभी अन्य फलों से अधिक रखती थी, जिनका उपयोग करने का अधिकार परमेश्वर ने उसे पूर्ण रूप से दिया था।

परंतु आप आश्चर्य कर सकते हैं कि शैतान ने हव्वा को इतनी आसानी से कैसे धोखा दिया?

हव्वा ने परमेश्वर के आदेश के शब्दों को बढ़ा-चढ़कर कहा। उसने आदम और हव्वा से कहा था, "अच्छाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल तुम न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उस दिन तुम निश्चित रूप से मर जाओगे।" सर्प के साथ वाद-विवाद में, हव्वा ने इसमें "न ही तुम उसे छुओगे" जोड़ दिया।

यहाँ सर्प की चालाकी दिखाई दी। हव्वा के इस कथन ने उसे एक लाभ दिया; उसने फल तोड़ा और उसे उसके हाथ में रखा, उसके अपने ही शब्दों का उपयोग करते हुए, उसने कहा, उसने कहा हैं, यदि तुम उसे छुओगे, तो तुम मर जाओगे। तुम देख रही हो, फल को छूने से तुम्हें कोई हानि नहीं हुई, और न ही उसे खाने से तुम्हें कोई हानि होगी।

हव्वा सर्प के रूप में शैतान के झूठे तर्कों के सामने झुक गई। उसने फल खाया और उसे कोई तत्काल हानि महसूस नहीं हुई। तब उसने अपने और अपने पति के लिए फल तोड़ा। "और जब स्त्री ने देखा कि वृक्ष भोजन के लिए अच्छा हैं, और यह आँखों को भाता हैं, और बुद्धिमान बनाने के लिए वांछनीय वृक्ष हैं, तो उसने उसका फल लिया, और खाया, और अपने पति को भी, जो उसके साथ था, दिया; और उसने भी खाया।"

आदम और हव्वा को परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान से, जो उन्हें उसकी रचित रचनाओं से प्राप्त हुआ था और पवित्र देवदूतों की शिक्षा से मिला था, पूरी तरह से संतुष्ट होना चाहिए था। लेकिन उनकी जिज्ञासा उस चीज़ से परिचित होने के लिए जागृत हुई, जिसे जानने के लिए परमेश्वर ने उन्हें डिज़ाइन नहीं किया था। उनके लिए पाप से अनजान रहना उनकी खुशी के लिए था। वह उच्च स्तर का ज्ञान जिसे वे वर्जित फल खाकर प्राप्त करने का विचार कर रहे थे, उन्हें पाप और दोष की पतनावस्था में धकेल दिया। {Con 14.1,2,3 - 15.1}

अधिकार का हस्तांतरण

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पृथ्वी पर अधिकार दिया था। लेकिन जब उन्होंने परमेश्वर के बजाय शैतान पर विश्वास करने का चुनाव किया, तो वह अधिकार उनके नए मालिक शैतान ने अपना लिया। यही कारण हैं कि जंगल में यीशु के साथ संघर्ष के दौरान शैतान ने यीशु से कहा, "मैं तुम्हें यह सारी शक्ति और उनकी महिमा दूँगा; क्योंकि वह मेरे सौंपी गई हैं; और जिसे मैं चाहता हूँ, मैं उसे देता हूँ। यदि तुम इसलिए मेरी पूजा करोगे, तो सब तुम्हारा होगा। लूका 4:6,7

बाइबिल दर्शाती हैं कि पाप के माध्यम से, शैतान इस पतित दुनिया का शासक बन गया। आदम और हव्वा ने सिर्फ एक नियम नहीं तोड़ा था। उन्होंने अपनी वफादारी बदल ली थी।

भय ने शांति का स्थान ले लिया। शर्म ने आनंद का स्थान ले लिया। मृत्यु ने जीवन का स्थान ले लिया। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि पाप उनके प्यारे जीवन को इतना नुकसान पहुँचा सकता हैं।

अध्याय 7 — खोया हुआ घर और स्वर्ग

पतन के बाद उद्यान शांत था—बहुत ज्यादा शांत। पहले जो हँसी पक्षियों के गीतों के साथ गूंजती थी, वह मौन हो गई थी, और उसकी जगह जल्दबाजी में उठते कदमों की आवाज़ और थरथराती सांसें आ गई थीं। सृष्टि के बाद पहली बार, मानवता अपने निर्माता से डर गई थी।

जब पाप दुनिया में दाखिल हुआ, तो वह अकेला नहीं आया। वह शर्म, स्वार्थ और मृत्यु के भय को साथ लेकर आया था। *"उसके बाद दोनों की आँखें खुल गईं, और उन्हें मालूम हुआ कि वे नंगे हैं"* (उत्पत्ति 3:7)। मासूमियत एक पल में खत्म हो गई। जहाँ पहले खुलेपन था, वहाँ अब छिपने का व्यवहार था। जहाँ विश्वास था, वहाँ अब संदेह था।

परमेश्वर *"दिन के ठंडे समय में"* उद्यान में चलते हुए आए (उत्पत्ति 3:8), एक जल्लाद के रूप में नहीं, बल्कि एक पिता के रूप में जो अपने खोए हुए बच्चों की तलाश कर रहा था। परंतु आदम और हव्वा पेड़ों के बीच छिप गए। भय ने उनके परमेश्वर को समझने का तरीका बदल दिया था। जब परमेश्वर ने पुकारा, *"तुम कहाँ हो?"* (उत्पत्ति 3:9), तो यह इसलिए नहीं था कि उन्हें ज्ञान नहीं था, बल्कि इसलिए था क्योंकि मानवता ने उनके बारे में स्पष्ट ज्ञान खो दिया था।

जब उन्हें उनकी अवज्ञा का सामना कराया गया, तो और भी भयानक हकीकत सामने आई। आदम ने हव्वा को दोष दिया। हव्वा ने सर्प को दोष दिया। एक-दूसरे के प्रति उनका प्रेम स्वार्थ में बदल गया, अपनी रक्षा ने देने की भावना को दबा दिया, और बचने की बेताब उम्मीद में जिम्मेदारी को दूसरे पर थोप दिया गया। क्यों? क्योंकि उन्होंने शैतान के झूठ पर इतना पूरी तरह विश्वास कर लिया था कि अब वे डरते थे कि परमेश्वर उन्हें फल खाने के लिए मार देगा, और इसलिए, उनमें से कोई भी दोष अपने सिर लेने के लिए तैयार नहीं था।

परमेश्वर ने कहा था, *"जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उस दिन तुम निश्चित रूप से मर जाओगे"* (उत्पत्ति 2:17)। यहाँ परमेश्वर ने नहीं कहा कि मैं तुम्हें मारूँगा। लेकिन क्योंकि शैतान ने परमेश्वर को स्वार्थी, प्रतिबंधक और क्रूर के रूप में प्रस्तुत किया था। शैतान द्वारा परमेश्वर के बारे में बनाई गई छवि को स्वीकार करके, आदम और हव्वा ने परमेश्वर की चेतावनी को उन्हें मारने की धमकी के रूप में व्याख्यायित किया। यही वजह हैं कि जब उन्होंने परमेश्वर को उद्यान में चलते हुए सुना, तो वे शर्म और भय के साथ छिपने लगे। मृत्यु के भय ने उन्हें दोष देने पर मजबूर किया, और दोष देने से एक और गहरी सच्चाई सामने आई: अब मानवता को किसी की आवश्यकता थी जो उनके स्थान पर खड़ा हो। आदम और हव्वा नहीं मरना चाहते थे, वे अपने बजाय किसी और के मरने को पसंद करते थे। जो प्राणी एक समय परमेश्वर की छवि में बनाए गए थे, वे उस एक की छवि में बदल गए जिसने उन्हें धोखा दिया था। पाप ने एक ऐसी खाई खड़ी कर दी थी, जिसे वे अकेले पार नहीं कर सकते थे।

पतन के बाद आए शाप

जब परमेश्वर ने उनके चुनाव के बाद क्या होगा, इसके बारे में बात की, तो उनके शब्द क्रोध में फेंके गए शाप नहीं थे। शास्त्र यहाँ पर सावधानीपूर्वक काम करता हैं। परमेश्वर मानवता को शाप नहीं दे रहे थे; वह उस दुखद परिणाम की घोषणा कर रहे थे, जो उनके द्वारा अपने बजाय शैतान पर विश्वास करने से हुआ था। वह यह प्रकट कर रहे थे कि उस दुनिया में जीवन अब कैसा होगा, जहाँ शैतान को एक निश्चित हद तक शासन करने की अनुमति दी गई थी। (लूका 4:5-8)

और प्रभु परमेश्वर ने सर्प से कहा, "तूने यह किया हैं, इसलिए तू सभी पशुओं और मैदान के सभी जानवरों पर शापित हैं; तू अपने पेट पर चलेगी, और अपने जीवन के दिनों तक धूल खाएगी।" उत्पत्ति 3:14

जैसा कि प्रभु ने कहा, वैसा ही हैं। लेकिन यदि हम कहें कि परमेश्वर ने एक सर्प को शाप दिया जो धोखे में भी सक्रिय रूप से शामिल नहीं था। तो हम कह रहे हैं कि परमेश्वर अन्यायी हैं। परमेश्वर किसी भी गलती के लिए सर्पों या कई पीढ़ियों के सर्पों को शाप क्यों दे सकते हैं? यहाँ वास्तव में शैतान ही हैं जिसने सर्प को स्थायी रूप से नुकसान पहुँचाया और उसे सभी पशुओं और मैदान के सभी जानवरों से अधिक शापित कर दिया; और आनुवंशिक रूप से इसके पंखों को बदलकर इसका जीवन दयनीय बना दिया, जिससे इसे अपने पेट पर चलना पड़ा और अपने जीवन के दिनों तक धूल खानी पड़ी। यह प्राणी सुंदर था और उड़ता भी था। यह हैं कि प्रवाती एलेन जी. व्हाइट मनुष्यों के पतन से पहले सर्प का वर्णन कैसे करते हैं।

"सर्प तब पृथ्वी पर सभी प्राणियों में सबसे ज्ञानी और सुंदर था।"—पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता, पृ. 53

"उसके पंख थे, और जब वह हवा में उड़ता था, तो वह चकाचौंध कर देने वाली चमक का रूप धारण करता था, जिसका रंग और ब्रिलियंस पॉलिश किए हुए सोने जैसा था।"—पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता, पृ. 53

लेकिन क्या शैतान सचमुच परमेश्वर के प्राणियों की संरचना को बदल सकता हैं? हाँ, वह कर सकता हैं। जबकि वह कुछ भी नहीं बना सकता, उसमें प्रकृति को नष्ट करके बदलने की ज्ञान हैं। यही वह हैं जो आनुवंशिक संशोधन क्षेत्र सब कुछ इसके बारे में हैं।
"शैतान सृजन नहीं कर सकता; वह केवल परमेश्वर के द्वारा बनाई गई चीज़ों को विकृत और नष्ट कर सकता हैं।" - चयनित संदेश, पुस्तक 2, पृ. 102

लेकिन आप आश्चर्य कर सकते हैं कि शैतान ने सर्प को आंशिक रूप से क्यों नष्ट किया?

उत्तर सरल हैं, क्योंकि शैतान ने सर्प में अपने उस पूर्व-पतन रूप को देखा। क्या आप इसे याद करते हैं? बाइबल कहती हैं "अब वह सर्प प्रभु परमेश्वर के द्वारा बनाए गए मैदान के किसी भी जानवर से अधिक चालाक था।" उत्पत्ति 3:1
जैसे शैतान जो एक समय लूसिफर था, देवदूतों का नेता, सबसे ज्ञानी, सुंदरता और शक्तियों से भरपूर था। वैसे ही सर्प भी पशु राज्य में था। लेकिन उसके पतन के बाद, यह स्थान देवदूत गब्रिएल को दिया गया। इसलिए, शैतान इस पशु से सभी अन्य पशुओं से अधिक घृणा करता हैं और उसे स्थायी रूप से नुकसान पहुँचाया।

उसने स्त्री से कहा, "मैं तेरे दुःख और तेरे गर्भ को बहुत बढ़ा दूँगा; तू दुःख में बच्चों को जन्म देगी; और तेरी इच्छा तेरे पति की ओर होगी, और वह तेरे ऊपर राज करेगा।" उत्पत्ति 3:16

आप कह सकते हैं, यह समझ में आता हैं कि शैतान ने सर्प को क्यों नष्ट किया, लेकिन उपरोक्त पद्य से यह क्यों लगता हैं कि ईश्वर ने महिलाओं को सर्प (शैतान) को सुनने के लिए दंडित किया? लेकिन निष्कर्ष निकालने से पहले, रुकिए और इसके बारे में सोचिए। एक महिला की गलती के बावजूद, परमेश्वर सभी महिलाओं को मासिक समस्याओं का कारण क्यों बनेंगे या उनके सभी गर्भधारण को दुःखद क्यों करेंगे? क्या वह एक अन्यायी परमेश्वर हैं? क्या वह वह परमेश्वर हैं जो एक महिला को प्रजनन की शक्ति देता हैं और फिर उस उपहार को शाप में बदल देता हैं? नहीं, बिल्कुल नहीं।

फिर से, यहाँ भी, यह शैतान ही हैं जिसने महिलाओं की जीव विज्ञान की रचना को इस तरह का नुकसान पहुँचाया हैं। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि पहला, परमेश्वर ने केवल मनुष्यों को प्रजनन की शक्ति दी हैं, देवदूतों के पास यह शक्ति नहीं हैं। इसलिए मनुष्यों के बनने के बाद से ही शैतान ईर्ष्यालु हैं। दूसरा, वह जानता था कि जब प्रभु ने उत्पत्ति 3:15 में घोषणा की थी, तब वह बाग़ में था, जिसमें उसने अप्रत्यक्ष रूप से भविष्यवाणी की थी कि वह इस पृथ्वी पर अपने पुत्र को भेजेगा। शैतान इस भविष्यवाणी को बहुत अच्छी तरह समझता था। तीसरा, महिलाएँ यीशु की छवि में बनाई गई हैं और उन्हें निर्माता और धारक के रूप में यीशु की भूमिका को व्यक्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया हैं। इसलिए, शैतान ने नारीत्व को स्थायी रूप से नुकसान पहुँचाया। इससे पुरुष और महिला के रिश्ते में भी एक स्थायी असंतुलन पैदा हो गया, जो "तेरी इच्छा तेरे पति की ओर होगी, और वह तेरे ऊपर राज करेगा" उत्पत्ति 3:16 के शब्दों में अच्छी तरह से व्यक्त होता हैं।

और आदम से उसने कहा, "तूने अपनी पत्नी की आवाज़ सुनी, और उस वृक्ष का फल खाया, जिसके खाने की मैंने तुझसे आज्ञा दी थी, कहते हुए, तू उसका फल न खाना: तेरे वश के लिए भूमि शापित हैं; तू अपने जीवन के दिनों तक दुःख में उसे खाएगा;

उसमें काँटे और गन्ने भी उगेंगे; और तू मैदान की घास खाएगा; तेरे मुँह के पसीने से तू रोटी खाएगा, जब तक तू भूमि में लौट न जाएँ; क्योंकि उसी से तुझे लिया गया था: क्योंकि तू धूल हैं, और धूल में ही तू लौट जाएगा।" उत्पत्ति 3:17-19

फिर से, काँटे और गन्ने लाना भी शैतान का काम था। एक ऐसी भूमि जो मानव प्रयास का विरोध करेगी, यह सब शैतान का काम था ताकि मानव जीवन में और अधिक पीड़ा जोड़ सके। ताकि वे अपने निर्माता को अन्यायी और बेदर्द समझें।

श्रम को थका देने वाला और मिट्टी का प्रतिरोधी बनाकर, शैतान ने मानवता को कमजोर करने की कोशिश की। अंतहीन परिश्रम, निराशा और अभाव मानव ऊर्जा को निगल जाएगा। पुरुष घर तक़, क्रोधित, थके हुए, निराश और कभी-कभी नशे में धुत होकर लौटेंगे। परिवार जीवित रहने के लिए संघर्ष करेंगे, जिससे पूजा, विश्वास या परमेश्वर में आनंद के लिए बहुत कम शक्ति बचेगी।

यह रणनीति शैतान के चरित्र के अनुकूल हैं। वह हमेशा सीधे नष्ट करने की बजाय, थका देने, विचलित करने और कड़वा करने की कोशिश करता हैं। एक थका हुआ दिल अक्सर स्वर्ग की खोज करना बंद कर देता हैं। इस तरह, शापित भूमि शैतान के सबसे प्रभावशाली उपकरणों में से एक बन गई, जिससे मानवता को परमेश्वर से अलग किया जा सके।

यह सब सबसे ज्ञानी मनुष्य की समझ से परे हैं क्योंकि हम शैतान के छल और जीवन से अंधे हो गए हैं। हालाँकि, यीशु, जो मार्ग, सत्य और जीवन हैं, ने जब वे पृथ्वी पर थे, तो एक दृष्टांत के माध्यम से यह सत्य समझाया। आप इस दृष्टांत में वह पैटर्न देखेंगे कि परमेश्वर (मालिक) अच्छा हैं और शत्रु दुष्ट हैं और मानव अनुभव में होने वाले सभी बुरे का कारण हैं।

उन्होंने उनके सामने एक और दृष्टांत रखा, कहते हुए, "स्वर्ग का राज्य एक ऐसे मनुष्य के समान हैं, जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया: परन्तु जब लोग सोए रहे, तब उसका शत्रु आया, और गेहूँ में ज़र बो दिया, और चला गया। जब तना निकला, और फल लाया, तब ज़र भी दिखाई दिए। तब घर के चाकर आए, और उससे कहा, हे स्वामी! क्या तू अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तब उसमें ज़र कहाँ से आए? उसने उनसे कहा, कोई शत्रु ने यह किया हैं" —मत्ती 13:24-28

इस दृष्टांत में, खेत परमेश्वर की सृष्टि हैं, अच्छा बीज उनकी योजना हैं, चाकर मानवता हैं, और शत्रु शैतान हैं। खेत में हुआ नुकसान मालिक के कारण नहीं, बल्कि शत्रु के हस्तक्षेप के कारण था। इसी तरह, मनुष्य के पतन के बाद हुई पीड़ा परमेश्वर की मूल योजना नहीं थी। यह शैतान के हस्तक्षेप का परिणाम था—उसकी भ्रष्ट ज्ञान ने सृष्टि को बदल दिया, ताकि वह प्रचुरता के बजाय क्रूरता से जीवित रहे।

मनुष्य के पतन के बाद आए बदलाव यादृच्छिक नहीं थे, न ही वे परमेश्वर के हृदय द्वारा लिखे गए थे। यह शैतान की मनुष्यों के खिलाफ एक रणनीतिक, गणनात्मक, और दुर्भावनापूर्ण चाल थी। शास्त्र लगातार यह प्रकट करता हैं कि शैतान केवल एक झूठा ही नहीं, बल्कि एक विनाशकारी भी हैं, जो परमेश्वर द्वारा बनाई गई अच्छी चीज़ों को विकृत करने की कोशिश करता हैं (यूहन्ना 8:44; यूहन्ना 10:10)। जिसे हम "शाप" कहते हैं, वे वास्तव में, परमेश्वर की सृष्टि में शैतान के हस्तक्षेप के दृश्य दाग हैं।

मानवता की बड़ी गलतफहमी

आज, मानवता इस महान विवाद को बड़े पैमाने पर गलत समझती हैं। हम अपने दुःख का वास्तविक कारण शैतान को नहीं मानते। इसके बजाय, हम दर्द, मृत्यु और कठिनाइयों के लिए परमेश्वर को दोष देते हैं—जबकि अनजाने में ही उसी शत्रु के करीब जा रहे हैं जिसने हमें इतना दुःख पहुँचाया हैं।

यह दुखद छल शैतान के मूल झूठ को पूरा करता हैं: कि परमेश्वर समस्या हैं और शैतान हल हैं। जब तक मानवता इस पर विश्वास करती हैं, तब तक पीड़ा को गलत समझा जाता रहेगा, और शत्रु स्पष्ट दृष्टि में छिपा रहेगा।

फिर भी, शास्त्र इसे कहकर पर्दा उठाता हैं। *"चोर केवल चोरी करने, मारने और नष्ट करने के लिए आता हैं; मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन पाएँ"* (यूहन्ना 10:10)। जब यह सत्य समझा जाता हैं, तो पतन की कहानी परमेश्वर की क्रूरता की कहानी नहीं रह जाती, बल्कि उनकी करुणा का प्रकाशन होता हैं—वह करुणा जो लगातार मानवता को छल से बाहर निकालने और खोए हुए स्वर्ग की ओर वापस बुलाती हैं।

घर का नुकसान

तब आदम और हव्वा को एडन से क्यों भेजा गया?

आदम को एडन से निकाल दिया गया, और जो देवदूत उसके पाप से पहले एडन के उसके घर में उनकी रखवाली के लिए नियुक्त थे, अब उन्हें स्वर्ग के द्वारों और जीवन के वृक्ष के मार्ग की रखवाली के लिए नियुक्त किया गया, इसलिए कि वह वापस न लौटे, जीवन के वृक्ष तक पहुँच न पाए, और पाप अमर न हो जाए। {Con. 15.2}

यह करुणा थी, अस्वीकृति नहीं। पतित अवस्था में सदैव जीते रहना पीड़ा को शाश्वत रूप से मुहर लगा देता। परमेश्वर पाप को अमर होने की अनुमति नहीं देंगे। *"इसलिए उसने उस मनुष्य को बाहर निकाला; और उसने एडन के उद्यान की पूर्व दिशा में*

केरूबिमों को और हर तरफ घूमती हुई एक लपटती तलवार को तैनात किया, ताकि वे जीवन के वृक्ष के मार्ग की रक्षा करें" (उत्पत्ति 3:24)।

प्रत्येक स्वस्थ रिश्ता दो महान सिद्धांतों पर टिका होता हैं: प्रेम और विश्वास। बिना भरोसे के प्रेम का अस्तित्व नहीं हो सकता। जब शैतान ने परमेश्वर की एक झूठी छवि प्रस्तुत की, तो उसने उनके निर्माता पर उनके विश्वास को तोड़ दिया। वे उसे अब प्रेम करने वाला और विश्वसनीय नहीं देखते थे। भय ने आत्मविश्वास का स्थान ले लिया, संदेह ने शांति का स्थान ले लिया। इसलिए, पृथक्करण अनिवार्य परिणाम था। लेकिन यह पृथक्करण अस्थायी था, क्योंकि प्रभु ने मनुष्यों को छुड़ाने की योजना बनाई थी, यदि मनुष्य उसकी महिमा के अनुसार नहीं चल पाते।

.

अध्याय 8 — छुटकारे की योजना

मनुष्य के पतन ने पूरे स्वर्ग को दुःख से भर दिया। परमेश्वर ने जो संसार बनाया था, वह पाप के अभिशाप से मरियाम हो गया था और दुःख और मृत्यु के लिए अभिशप्त प्राणियों से बसा हुआ था। जिन लोगों ने नियम का उल्लंघन किया था, उनके लिए बचने का कोई रास्ता नहीं दिखाई देता था। देवदूतों ने अपने प्रशंसा के गीत बंद कर दिए। स्वर्गीय दरबारों में, पाप के कारण हुए विनाश के लिए शोक मनाया जा रहा था। {पीपी 63.1}

परमेश्वर का पुत्र, स्वर्ग के महिमामयी सेनापति, पतित मानवजाति पर दया से विचलित हुआ। जब खोई हुई दुनिया के दुःख उसके सामने आए, तो उसका हृदय अनंत करुणा से भर गया। उसने जाना कि पाप ने पृथक्करण का कारण बना, स्वर्गीय पिता और उनके पार्थिव बच्चों के बीच एक बड़ी खाई। यही हमेशा पाप करता हैं।इसीलिए बाइबिल कहती हैं, "तुम्हारे अधर्मों ने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया हैं" (यशायाह 59:2)।

लेकिन पाप पृथक्करण क्यों करता हैं?

पाप और विश्वास के नियम का स्वभाव

जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो उन्होंने केवल दस आज्ञाओं में व्यक्त परमेश्वर के नियम को नहीं तोड़ा। उन्होंने कहीं अधिक गहरी और मूलभूत चीज़ को तोड़ा। शास्त्र कहता हैं, "जो कोई पाप करता हैं, वह नियम का भी उल्लंघन करता हैं: क्योंकि पाप नियम का उल्लंघन हैं" (यूहन्ना 1 3:4)। यहाँ **'भी'** शब्द का प्रयोग यह दर्शाता हैं कि पाप में एक से अधिक आयाम शामिल हैं।

परमेश्वर के नियम (दस आज्ञाओं) को तोड़ने के अलावा, एक और नियम का उल्लंघन **'भी'** हुआ। उस नियम को विश्वास का नियम कहा जाता हैं। प्रेरित पौलुस लिखता हैं, "फिर घमंड कहाँ हैं? वह निकाल दिया गया। किस नियम द्वारा? कर्मों के नियम द्वारा? नहीं: बल्कि **विश्वास के नियम द्वारा"** (रोमियों 3:27)। वह फिर कहता हैं, "जो कुछ भी विश्वास से नहीं हैं, वह पाप हैं" (रोमियों 14:23)।

इस बाइबिल की समझ के अनुसार, पाप दो चीज़ें हैं:

1. पहला, विश्वास के नियम का उल्लंघन

2. दूसरा, परमेश्वर के नियम का उल्लंघन

आप कह सकते हैं, फरक क्या हैं? फरक यहाँ हैं:

1. विश्वास का नियम एक शासकीय सिद्धांत हैं; यदि इसका अच्छी तरह पालन किया जाए, तो यह हमें ख्रिस्त पर विश्वास के माध्यम से धार्मिकता और अनुग्रह प्राप्त करने में सक्षम बनाता हैं।
2. परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करने का मतलब परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं का उल्लंघन करना हैं। परमेश्वर का यह नियम उनके चरित्र की एक प्रत हैं (भजन संगीत 19:7; रोमियों 7:12)। जो व्यक्ति उनका पालन करता हैं, वह परमेश्वर के समान हो जाता हैं।

जब हमारे पहले पूर्वजों ने परमेश्वर पर विश्वास करने के बजाय शैतान पर विश्वास करने का चुनाव किया, तो सबसे पहले विश्वास का नियम टूटा। अविश्वास उनके दिलों में घर कर गया। केवल उसके बाद उन्होंने वर्जित फल को शारीरिक रूप से खाया, और इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। बाइबिल घोषणा करती हैं, "धार्मिक विश्वास से जीएगा" (हबक्कूक 2:4)। लेकिन आदम और हव्वा अब धार्मिक नहीं रहे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के बारे में शैतान के झूठ पर विश्वास करने का चुनाव किया था।

भय, मृत्यु, और परमेश्वान की गलतफहमी

उत्पत्ति का लेखा इस टूटे हुए विश्वास के दुःखद परिणामों को प्रकट करता हैं: "उन्होंने प्रभु परमेश्वर की आवाज़ सुनी, जो दिन के ठंडे समय में उद्यान में चल रही थी: और आदम और उसकी पत्नी प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति से छिप गए। " जब परमेश्वर ने पुकारा, तो आदम ने उत्तर दिया, "मैंने उद्यान में तेरी आवाज़ सुनी, और मैं डर गया।"

ऐसा भय क्या उत्पन्न हुआ? यह मृत्यु का भय था। शैतान ने परमेश्वर की चेतावनी को मोड़ दिया था, *"जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उस दिन तुम निश्चित रूप से मर जाओगे,"* इस विश्वास में कि यदि वे उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं तो परमेश्वर स्वयं उन्हें सजा के रूप में मार देगा। इसलिए, अब वे परमेश्वर को शरण स्थल के बजाय एक खतरा मानते थे।

यह वही झूठ था जिसे शैतान ने स्वर्ग के देवदूतों के बीच फैलाया था, कि परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करने वाले की मृत्यु परमेश्वर द्वारा दंड के रूप में आवश्यक हैं।

महान विवाद की शुरुआत में, शैतान ने घोषणा की थी कि परमेश्वर के नियम का पालन नहीं किया जा सकता, कि न्याय, करुणा के साथ असंगत हैं, और कि, यदि नियम तोड़ा जाता हैं, तो पापी को क्षमा करना असंभव हैं। हर पाप को अपनी सजा मिलनी चाहिए, **शैतान ने दबाव** दिया; और यदि परमेश्वर पाप की सजा माफ़ करते, तो वे सत्य और न्याय के परमेश्वर नहीं होते। जब मनुष्यों ने परमेश्वर के नियम को तोड़ा और उनकी इच्छा की अवज्ञा की, तो शैतान फूला नहीं समाया। यह साबित हो गया, उसने घोषित किया, कि नियम का पालन नहीं किया जा सकता; मनुष्य को क्षमा नहीं किया जा सकता। क्योंकि अपने विद्रोह के बाद उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया था, शैतान ने दावा किया कि मानव जाति को हमेशा के लिए परमेश्वर की कृपा से दूर रखा जाना चाहिए। परमेश्वर न्यायी नहीं रह सकते थे, **उसने दबाव** दिया, और साथ ही पापी पर दया करते। {डीए 761.4}

याद रखें, यह शैतान था जिसने दबाव डाला कि हर पाप को दंडित किया जाना चाहिए। हमें यह ध्यान में रखने की आवश्यकता हैं कि भले ही धार्मिकता और न्याय परमेश्वर के सिंहासन की नींव हैं, यह याद रखना और समझना महत्वपूर्ण हैं कि करुणा और सत्य उसके सामने आते हैं (भजन संगीत 89:14)। इसका अर्थ हैं कि परमेश्वर हर स्थिति से करुणा और सत्यता के साथ सामना करता हैं। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु हैं।

कल्पना कीजिए कि आप स्वर्ग गए, और गलती से आपने कुछ गलत कर दिया, क्या आप उम्मीद करेंगे कि परमेश्वर आपको दंडित करेगा? क्या यह वह परमेश्वर हैं जिसकी हम सेवा करते हैं? नहीं, ऐसे विचारों को दूर करें।

एडन की कहानी पर वापस आते हुए, इस शैतानी झूठ के कारण, परमेश्वर के बारे में गलतफहमी और इस विश्वास को आदम और हव्वा के दिलों में पकड़ना, उनके परमेश्वर के प्रति उत्तरों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं।

जब आदम ने कहा, "जिस स्त्री को तूने मेरे साथ रहने के लिए दिया, उसने मुझे वृक्ष का फल दिया, और मैंने खाया।" इसका शाब्दिक अर्थ था, यदि किसी को पाप के कारण मरना हैं, तो यह तुम (परमेश्वर) होना चाहिए, जिसने मुझे यह महिला दी, या वह महिला होनी चाहिए जिसने मुझे फल दिया, लेकिन मैं (आदम) नहीं।"

जब हव्वा ने भी कहा, "सर्प ने मुझे बहकाया, और मैंने खाया," तो इसका अर्थ था कि यदि किसी को मरना हैं, तो वह सर्प होगा, मैं (हव्वा) नहीं।

दूसरे शब्दों में, दोनों कह रहे थे, "यदि किसी को मरना हैं, तो वह मैं नहीं होना चाहिए।" पाप आने के बाद दोनों स्वार्थी हो गए और सोचते थे कि परमेश्वर को उन्हें क्षमा करने से पहले किसी के मरने की आवश्यकता हैं। इसका मतलब हैं कि मनुष्यों के

पाप में गिरने के बाद जो बलिदान प्रणाली शुरू की गई, वह केवल उनके अपने दिलों की मांग को पूरा करने के लिए शुरू की गई थी।

उदाहरण के लिए, यदि आपके बच्चे ने आपके खिलाफ कुछ किया। क्या आप कहेंगे कि मुझे किसी के मरने की आवश्यकता हैं या मुझे अपने बच्चे को क्षमा करने के लिए किसी जानवर के खून की आवश्यकता हैं? बिल्कुल नहीं! यदि हम पापी मनुष्य होने के बावजूद अपने बच्चे से इतना प्रेम करते हैं, तो हम यह क्यों सोचते हैं कि परमेश्वर जो हमसे उससे कहीं अधिक प्रेम करता हैं, जितना हम सोच या कल्पना कर सकते हैं, उसे हमें स्वीकार करने या बचाने से पहले किसी के मरने की आवश्यकता हैं? हम इस तरह सिर्फ इसलिए सोचते हैं क्योंकि हमें बाइबल को इसी तरह पढ़ाया गया हैं। परमेश्वर को कभी जानवरों के बलिदान की आवश्यकता नहीं थी, न ही उसे अपने प्रिय पुत्र के बलिदान की आवश्यकता थी।

"क्योंकि तू बलिदान में प्रसन्न नहीं होता, यदि मैं देता, तो तू प्रसन्न न होगा; होमबलि तुझे रुचिकर नहीं हैं।" भजन संगीत 51:16
अधिक संदर्भ—होशिया 6:6, यशायाह 1:11–17, मीका 6:6–8, इब्रानियों 10:5–6, मत्ती 9:13

फिर भी, स्वर्ग ने पतित मानवजाति को छोड़ नहीं दिया। परमेश्वर के लिए अपने प्रेम की गहराई को प्रकट करने का केवल एक ही तरीका बचा था, अपने एकलौते पुत्र को देना। यह परमेश्वर के लिए उन्हें यह दिखाने का एकमात्र तरीका था कि वह उनसे कितना प्रेम करता हैं और उसके चरित्र की गलतफहमी से उत्पन्न खाई को कम करना।

शैतान ने अपने छल के माध्यम से मनुष्यों को परमेश्वर के नियम के विरुद्ध कर दिया, उन्हें ऐसा महसूस कराया कि यदि नियम का पालन नहीं किया गया और पूरा नहीं किया गया तो परमेश्वर उन्हें स्थायी रूप से नष्ट कर देगा। क्योंकि नियम स्वयं परमेश्वर जितना ही पवित्र हैं, केवल परमेश्वर के समान एक (यानी यीशु) ही इसके उल्लंघन के लिए प्रायश्चित कर सकता था, ताकि शैतान के दावों और उसके द्वारा परमेश्वर के नियम के खिलाफ फैलाए गए झूठ को स्थायी रूप से संतुष्ट किया जा सके। इसलिए, केवल मसीह ही पतित मनुष्य को छुड़ा सकता था और उसे स्वर्ग के साथ फिर से मेल-मिलाप में ला सकता था। दूसरी ओर, भले ही परमेश्वर शैतान के दावों के अनुसार मनुष्यों के लिए मरने के लिए अपने सबसे चमकीले और सबसे प्रिय देवदूतों में से एक को देने के लिए तैयार होता, तब भी हम मनुष्य उसे एक अविश्वसनीय परमेश्वा के रूप में देखते।

शांति का परामर्श

हालाँकि, जब मानवजाति पाप में निराश होकर खड़ी थी, यीशु अपने पिता के साथ एक पवित्र परिषद में शामिल हुए। पिता के सामने, उसने पापी के पक्ष में वकालत की, जबकि स्वर्ग की सेना ने शब्दों से व्यक्त न की जा सकने वाली रुचि के साथ परिणाम की प्रतीक्षा की। वह रहस्यमय संवाद लंबे समय तक चला, "शांति का परामर्श" (जकर्याह 6:13)।

छुटकारे की योजना संसार की नींव रखे जाने से पहले ही बना ली गई थी, क्योंकि मसीह "संसार की नींड़ से मारे जाने वाला मेमना" हैं (प्रकाश 13:8)। इसका अर्थ हैं कि इससे पहले कि मनुष्यों ने पाप किया हो, परमेश्वर ने पहले ही अपने पुत्र को उनका उद्धारकर्ता नियुक्त कर दिया था, यदि वे पाप में गिरते हैं। फिर भी, ब्रह्मांड के राजा के लिए अपने पुत्र को दोषी जाति के लिए मरने के लिए देना एक संघर्ष था। लेकिन प्रेम ने विजय प्राप्त की।

"परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया, ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

ओह, छुटकारे का रहस्य। अनंत युगों तक, अमर मन उस प्रेम को समझने का प्रयास करेंगे जो ज्ञान से परे हैं, और वे आश्चर्य और आराधना करेंगे। {पीपी 63.3}

अंत में यह तय किया गया कि यीशु कब और कैसे पतित दुनिया में आएँगे। देवदूत दुख से भर गए और उसके स्थान पर खुद को बलिदान करने की पेशकश की, लेकिन परमेश्वर ने इसकी अनुमति नहीं दी। केवल मसीह ही पिता को पूरी तरह से प्रकट कर सकता था और परमेश्वर के चरित्र में विश्वास को फिर से स्थापित कर सकता था।

एक उद्धारकर्ता का वादा

एक उद्धारकर्ता का पहला वादा एडन में दिया गया था। परमेश्वर ने सर्प से कहा, "मैं तुझ और उस स्त्री के बीच, और तेरे वंशज और उसके वंशज के बीच शत्रुता रखूँगा; वह तेरे सिर को रौंदेगा, और तू उसकी एड़ी को रौंदेगा" (उत्पत्ति 3:15)। यह बीज के रूप में सुसमाचार था, एक वादा कि बुराई विजयी नहीं होगी और एक उद्धारकर्ता आएगा।

मानवता को एक प्रतिनिधि की आवश्यकता सिखाने के लिए, जैसा कि उनके दिलों की मांग थी, परमेश्वर ने बलिदान प्रणाली की स्थापना की। एक मासूम जीव दोषी के स्थान पर खड़ा होगा। हर मारे गए मेमने ने मसीह, परमेश्वर के वास्तविक मेमने की

ओर इशारा किया। बाद में, मूसा के माध्यम से, छुटकारे की योजना को विस्तार से प्रकट करने के लिए पवित्रस्थान की सेवा दी गई। हर बलिदान, हर याजकीय सेवा, और हर अनुष्ठान यीशु की गवाही देता था।

जब तक मसीह पृथ्वी पर नहीं आए, तब तक सभी लोग, जिन्होंने परमेश्वर के प्रेम को समझा और विश्वास द्वारा उनकी कृपा को स्वीकार किया, उन्हें यीशु मसीह पर विश्वास के माध्यम से अनंत जीवन की आश्वासन मिली। भविष्यवक्ताओं, पवित्र पुरुषों और महिलाओं ने वादे किए गए उद्धारकर्ता की ओर देखा। हाबील, नूह, अब्राहाम, मूसा, और सभी लोग जिन्होंने परमेश्वर के वादे पर विश्वास किया, आने वाले मेमने पर विश्वास द्वारा बचाए गए थे।

ये सब विश्वास में मरे, वादे पाकर नहीं, परन्तु उन्हें दूर से देखकर, उनसे प्रभावित होकर, उन्हें अपनाकर, यह स्वीकार किया कि वे पृथ्वी पर अजनबी और तीर्थयात्री हैं। इब्रानियों 11:13

अध्याय 9 – मसीह का संघर्ष में प्रवेश

उद्धारकर्ता के आने की भविष्यवाणी एडन में ही की गई थी। जब आदम और हव्वा ने पहली बार यह वादा सुना, तो उन्होंने इसके शीघ्र पूर्ण होने की आशा की। उन्होंने अपने पहले पुत्र का आनंद के साथ स्वागत किया, यह आशा करते हुए कि वही उद्धारकर्ता होगा। लेकिन वादे का पूरा होना मुलतवी रहा। जिन लोगों ने इसे सबसे पहले प्राप्त किया, वे इसे देखे बिना ही मर गए। हनोक के दिनों से, यह वादा पितृपुरुषों और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से दोहराया गया, उनके प्रकट होने की आशा को जीवित रखा, फिर भी वह नहीं आए। दानीएल की भविष्यवाणी ने उनके आगमन के समय का प्रकाशन किया, लेकिन सभी ने संदेश का सही अर्थोपदेश नहीं किया। शताब्दी दर शताब्दी बीत गईं; भविष्यद्वक्ताओं की आवाज़ें बंद हो गईं। उत्पीड़क का हाथ इस्राएल पर भारी था, और कई लोग यह कहने को तैयार थे, "दिन लंबे हो गए हैं, और हर दर्शन विफल हो गया हैं।" यहेजकेल 12:22।

लेकिन जैसे अपने निर्धारित मार्ग के विशाल चक्कर में तारे, परमेश्वर के उद्देश्यों में जल्दबाजी और देरी नहीं होती। अंधकार और धुएँ देने वाली भट्टी के प्रतीकों के माध्यम से, परमेश्वर ने अब्राहम को मिस्र में इस्राएल की गुलामी का प्रकाश किया था, और घोषित किया था कि मिस्र में उनके रहने का समय चार सौ वर्ष होगा। "उसके बाद," उसने कहा, "वे बड़ी संपत्ति के साथ बाहर निकलेंगे।" उत्पत्ति 15:14। उस वचन के विरुद्ध, फिरौन के अहंकारी साम्राज्य की सारी शक्ति व्यर्थ में लड़ी। दिव्य वादे में नियुक्त "उसी दिन", "ऐसा हुआ कि प्रभु की सारी सेना मिस्र देश से निकली।" निर्गमन 12:41। इसी तरह, स्वर्ग की परिषद में मसीह के आने का घंटा निर्धारित कर दिया गया था। जब समय की विशाल घड़ी ने उस घंटे की ओर संकेत किया, तो यीशु का जन्म बेतलेहम में हुआ। {डीए 31 - 32.1}

"जब समय पूरा हुआ, तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा... ताकि वे जो व्यवस्था के अधीन थे, उन्हें छुड़ा सके, ताकि हम पुत्रत्व का अधिकार प्राप्त कर सकें।" गलातियों 4:4, 5।

इस संसार के निर्माता ने अपनी रचना में तुरही की ध्वनि या शाही जुलूस के साथ प्रवेश नहीं किया, बल्कि एक गोशाला में एक असहाय शिशु की रोने की आवाज़ के साथ। स्वर्ग नीचे झुक गया। अनंतता और शक्ति के परमेश्वर ने खुद को मांस के वस्त्र में लपेटा और स्पर्श करने योग्य बन गए।

साम्राज्य उठे और गिरे, दर्शन ने ज्ञान का वादा किया और शून्यता दी, और धर्मों ने शांति के बिना अनुष्ठानों को बढ़ा दिया। मानवता कथाओं और समारोहों से थक गई थी। आत्माएँ प्रकाश, कब्र के परे निश्चितता, और एक ऐसे परमेश्वर के लिए तरस रही थीं जिसे जाना जा सके। देशों में बिखरे हुए यहूदी भविष्यवाणी के टुकड़ों को अपने साथ ले गए, और गैर-यहूदी खोजी

इस्राएल के शिक्षकों से भी अधिक भूख के साथ हिब्रू शास्त्रों का अध्ययन करते थे। आशा एक अंधे घाटी में दीपक की तरह फड़फड़ा रही थी। संसार युगों की इच्छा, उद्धारकर्ता यीशु मसीह के आने के लिए तैयार था (हग्गै 2:7)—भले ही उसे इसका ज्ञान न हो।

उस अंधकार में, मसीह आए। वह केवल सिखाने के लिए नहीं आए, बल्कि उस संघर्ष में **प्रवेश करने** के लिए आए थे जिसने एडन से ही मानवता को गुलाम बना रखा था। अपने ऊपर मानव स्वभाव लेने में, यीशु ने तुरंत शैतान और उसके संपूर्ण पतित दुष्ट दल का ध्यान और विरोध आकर्षित किया।

शैतान जानता था कि यदि मसीह खुद को पवित्र रखने में असफल रहे, तो मानवता हमेशा के लिए खो जाएगी। इसलिए, वह लगातार उसे परीक्षण में डालने का अवसर तलाश रहा था।

जंगल का युद्ध क्षेत्र

अपने बपतिस्मे के बाद, जब पिता की आवाज़ ने घोषणा की, "यह मेरा प्रिय पुत्र हैं, जिससे मैं प्रसन्न हूँ" (मत्ती 3:17), तो यीशु तालियों या प्रभाव की ओर नहीं बढ़े। इसके बजाय, "पवित्र आत्मा से भरपूर यीशु... आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया गया" (लूका 4:1)।

वहाँ, जंगली जानवरों के बीच अकेले, उसने चालीस दिनों का उपवास किया। भूख ने उसके शरीर को कमजोर कर दिया। मौन उसकी आत्मा पर दबाव डाल रहा था। जो महिमा उसके चारों ओर थी, वह फीकी पड़ गई, और वह वहीं खड़े हो गए जहाँ हर इंसान को खड़ा होना चाहिए—केवल परमेश्वर पर निर्भर होकर।
तब शैतान आया।

एक राक्षस के रूप में नहीं, बल्कि जैसे छल हमेशा आता हैं—तर्कसंगत, सूक्ष्म, समझाने वाला। उसने अपने आप को एक प्रकाश के देवदूत के रूप में छिपाया था, जिसे पिता ने स्वर्ग से यीशु, अपने पुत्र को एक लंबे और थकाऊ उपवास से बचाने के लिए भेजा था। शैतान ने उसे तीन शक्तिशाली परीक्षणों में डाला, जो परमेश्वर की कृपा के बिना मसीह की स्थिति में किसी भी मनुष्य के लिए प्रतिरोध करना सौ प्रतिशत असंभव थे।

पहला परीक्षण: भूख

शैतान ने एक बहुत ही सुझाव देने वाले अंदाज में यीशु से कहा, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो इन पत्थरों को रोटी बनने का आदेश दो और उन्हें खाओ" (मत्ती 4:3)।

यह परीक्षण केवल भोजन के बारे में नहीं था। यह परमेश्वर पर विश्वास करने के **बजाय आत्म-निर्भरता के बारे में था।** शैतान चाहता था कि यीशु अपनी दिव्य शक्ति का उपयोग मानवीय दुःख से बचने के लिए करे और आज्ञापालन से ऊपर शारीरिक आवश्यकता को रखे। भूख ने आदम को नष्ट कर दिया था। भूख ने मानवता को गुलाम बना दिया था। यदि मसीह यहाँ झुक जाते, तो लड़ाई समाप्त हो जाती।

यीशु ने बहस के साथ नहीं, बल्कि शास्त्र के साथ उत्तर दिया:
"मनुष्य केवल रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर एक वचन से जीएगा" (मत्ती 4:4; व्यवस्थाविवरण 8:3)।

यीशु ने अपनी भूख पर परमेश्वर पर विश्वास करना चुना। राहत पर आज्ञापालन। सहज प्रवृत्ति पर विश्वास।
जहाँ आदम भरपूरता में गिर गया, वहाँ मसीह भूख में दृढ़ रहे।

दूसरा परीक्षण: शास्त्र के माध्यम से दुराग्रह

शैतान कुछ समय के लिए पीछे हट गया—लेकिन वह बाइबिल को हाथ में लेकर लौटा।

तब शैतान ने उसे पवित्र नगर में ले गया, उसे मंदिर की चोटी पर खड़ा किया, और उससे कहा, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो अपने आप को नीचे फेंक दो। क्योंकि यह लिखा हैं: 'वह अपने देवदूतों को तुम पर नियुक्त करेगा, और वे अपने हाथों में तुम्हें उठाए रखेंगे, कहीं तुम्हारा पैर पत्थर से न टकराए।'" मत्ती 4:5, 6

यहाँ शैतान भजन संगीत 91:11 का उद्धरण दे रहा था। लेकिन शैतान ने एक वाक्यांश छोड़ दिया: *"तेरे सभी मार्गों में तुम्हारी रक्षा करने के लिए"* —इसका अर्थ हैं तेरे आज्ञापालन के मार्ग।

यीशु ने फिर से उत्तर दिया,

"फिर लिखा हैं, 'तू अपने परमेश्वर की परीक्षा नहीं करेगा' (मत्ती 4:7; व्यवस्थाविवरण 6:16)।

विश्वास चिन्हों की मांग नहीं करता। विश्वास परमेश्वर के वचन पर बिना किसी हेरफेर के टिका हुआ हैं। ख्रिस्त ने आज्ञापालन के मार्ग से बाहर निकलने से इंकार किया।

तीसरा प्रलोभन: सांसारिक सत्ता और समृद्धि

अंत में, शैतान ने प्रकाश के दूत के वेश को त्यागकर अपने वास्तविक रूप में अपना सबसे बड़ा प्रस्ताव रखा। शैतान ने उसे एक पहाड़ पर ले गया और एक ऊँचे पहाड़ से, उसने दुनिया के राज्यों को दिखाया—धन, प्रभाव, और बिना पीड़ा के मिलने वाली सफलता।

और उससे कहा, "मैं तुम्हें यह सारी सत्ता और उनकी महिमा दूँगा; क्योंकि यह सब मुझे सौंपा गया हैं, और मैं इसे जिसे चाहता हूँ, उसे देता हूँ। इसलिए, यदि तुम मेरे आगे झुककर पूजोगे, तो यह सब तुम्हारा हो जाएगा।"

और यीशु ने उसे उत्तर देकर कहा, "मेरे पीछे हटो, शैतान! क्योंकि लिखा हैं, 'तुम प्रभु अपने परमेश्वर की पूजा करोगे, और केवल उसी की सेवा करोगे।'" (लूका 4:6–7)।

संघर्ष समाप्त हो गया। तब शैतान उससे चला गया, और देखो, देवदूत आए और उसकी सेवा की। (मत्ती 4:11)

यह प्रलोभन क्रूस को दरकिनार करने का एक छोटा रास्ता था, क्योंकि इसने यीशु को बलिदान के बिना महिमा और आज्ञापालन के बिना एक राज्य की पेशकश की। लेकिन यीशु ने कभी झुकने नहीं दिया।

हमारे लिए विजय

ख्रिस्ट ने ईश्वर होने के नाते अपनी दिव्य शक्ति का उपयोग करके विजय प्राप्त नहीं की। उसने एक **मनुष्य** के रूप में, शास्त्र से लैस, आत्मा द्वारा बल प्राप्त, और विश्वास में स्थिर होकर विजय पाई। उसने वह मार्ग चला जो मानवता को चलना चाहिए था—और जीत गया।

हमारे प्रभु यीशु कहते हैं, “इस संसार का शासक आता हैं, परन्तु वह मेरे में कुछ भी नहीं पाता” (यूहन्ना 14:30)।

शैतान आज भी हर दिन हमारे खिलाफ यही प्रलोभन का उपयोग करता हैं—ईमानदारी की कीमत पर सफलता की पेशकश करता हैं, और अंतःकरण की कीमत पर समृद्धि का।

- **भूख —** जब शारीरिक इच्छा नियंत्रण की मांग करती हैं
- **दुराग्रह —** जब शास्त्र को बदलकर अवज्ञा और अपने स्वार्थी उद्देश्यों को उचित ठहराया जाता हैं
- **सांसारिक समृद्धि —** जब सफलता पवित्र मार्ग के लिए समझौता करने की मांग करती हैं।

शैतान ने अपनी रणनीति नहीं बदली हैं। लेकिन ख्रिस्ट ने भी अपनी सहायता वापस नहीं ली हैं।

“धैर्य धरो; मैंने संसार पर विजय पा ली हैं” (यूहन्ना 16:33)।

क्योंकि ख्रिस्ट ने संघर्ष में प्रवेश किया और विजयी होकर खड़े रहे, इसलिए हम बचावहीन नहीं छोड़े गए हैं। उनकी विजय हमें प्रस्तावित की गई हैं—यह हमारी शक्ति से अर्जित नहीं गई, बल्कि विश्वास द्वारा प्राप्त की गई हैं।

“इसलिए तुम परमेश्वर के अधीन रहो। शैतान का विरोध करो, और वह तुमसे भाग खड़ा होगा” (याकूब 4:7)।

क्योंकि जब वह स्वयं परीक्षित हुआ तब उसने पीड़ा उठाई, इसलिए वह उनकी सहायता करने में सक्षम हैं जो परीक्षा का सामना कर रहे हैं। (इब्रानियों 2:18)

यह संघर्ष प्रत्येक मानवी हृदय में जारी हैं। ख्रिस्ट ने सचमुच संघर्ष में प्रवेश किया हैं—और वह आज भी हमारे लिए लड़ने के लिए तैयार खड़ा हैं।

अध्याय 10 – क्रूस: महान विवाद का निर्णायक मोड़

कलवारी पर क्रूस से पहले, दिव्य हाथों में कीलें लगने से पहले, अभिशप्त मिट्टी पर खून गिरने से पहले, **स्वर्ग में प्रश्न** थे।

शैतान के कपटपूर्ण छल के बावजूद, परमेश्वर के पक्ष में वफादार देवदूतों ने क्षणभर के लिए भी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह नहीं किया—लेकिन वे सत्य के बारे में अनिश्चित थे। शैतान के झूठे दावों ने उन्हें परमेश्वर के प्रेम, उद्देश्य और कार्यों पर सवाल उठाने और आश्चर्य करने पर मजबूर कर दिया। लेकिन उन्होंने अपने दिलों में संदेह और अनिश्चितता को घर बनाने से इनकार कर दिया।

स्वर्ग एक समय अखंड सामंजस्य की जगह था। सत्य स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होता था, प्रेम सबका शासन करता था, और विश्वास स्वर्ग के जीवन का वातावरण था। इस पूर्ण व्यवस्था में एक आवाज़ आई—चमकदार, प्रभावशाली, सूक्ष्म। लूसिफर, जो एक समय परमेश्वर के चरित्र के प्रकाशवाहक थे, ने परमेश्वर के चरित्र के बारे में प्रश्न उठाना शुरू कर दिया। उसने पहले परमेश्वर का खुलकर खंडन नहीं किया। इसके बजाय, उसने उसकी छवि को *बदल* दिया और देवदूतों को अपने प्रति उनके प्रेम पर *संदेह करने* पर मजबूर कर दिया।

- क्या परमेश्वर वास्तव में न्यायी हैं?
- क्या उसका नियम आवश्यक हैं?
- क्या वह प्रेम से शासन करता हैं—या भय से?

ये प्रश्न इसलिए खतरनाक थे क्योंकि वे तर्कसंगत लगते थे। पवित्र देवदूत—ज्ञानी, वफादार और सच्चे—भी इस बात को देखने के लिए संघर्ष करते थे कि सत्य कहाँ समाप्त होता हैं और छल कहाँ से शुरू होता हैं। शैतान ने स्वार्थी महत्वाकांक्षा को स्वतंत्रता और प्रगति के भाषण में छिपा दिया। उसने परमेश्वर पर रोकने, आत्म-प्रशंसा करने और अन्याय करने का आरोप लगाया। और क्योंकि परमेश्वर बल के बजाय प्रेम से शासन करते हैं, उन्होंने उन प्रश्नों को सुनने की अनुमति दी।

इस प्रकार, महान विवाद की शुरुआत परमेश्वर की उपस्थिति में स्वर्ग में हुई और मनुष्य के पतन के बाद और यीशु के इस संसार में आने से पहले चार हज़ार वर्षों तक जारी रहा।

ख्रिस्त का अभियान: पिता को प्रकट करना

परमेश्वर ने शैतान के आरोपों का जवाब गरज के साथ नहीं दिया। लेकिन जब समय पूरा हुआ, तब उन्होंने अपने एकलौते पुत्र के माध्यम से उसका जवाब दिया।

यीशु मसीह पृथ्वी पर मुख्य रूप से मरने के लिए नहीं आए—बल्कि **अपने पार्थिव जीवन के दौरान और यहाँ तक कि अपनी मृत्यु के दौरान भी अपने पिता के चरित्र को प्रकट करने के लिए आए थे।**

अपने क्रूसीकरण से ठीक पहली रात, यीशु ने आकाश की ओर अपनी आँखें उठाईं और उन शब्दों की प्रार्थना की, जिसकी गूंज उपरवाले कमरे से कहीं आगे तक सुनाई दी:

उस प्रार्थना में, उसने पहले यह परिभाषित किया कि कोई अनंत जीवन कैसे प्राप्त कर सकता हैं: "और यही अनंत जीवन हैं, कि वे तुम्हें जानें, जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर हो, और जिसे तुमने भेजा हैं, यीशु मसीह को" (यूहन्ना 17:3)।

फिर उसने कुछ बहुत ही उल्लेखनीय बात कही, जिसे हम आमतौर पर नजरअंदाज करते हैं या अनदेखा करते हैं।
उसने कहा, "मैंने पृथ्वी पर तुम्हारी महिमा की हैं। मैंने वह काम **समाप्त** कर दिया हैं जो तुमने मुझे करने के लिए दिया था... मैंने उन पुरुषों के सामने **तुम्हारा नाम** प्रकट कर दिया हैं, जिन्हें तुमने मुझे दिया हैं" (यूहन्ना 17:4–6)।

परमेश्वर की महिमा करने का अर्थ हैं उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करना। तो यीशु यहाँ कह रहे थे "पिता, मैंने तुमने जिन लोगों को मुझे दिया हैं, उन्हें तुम्हारा चरित्र प्रकट कर दिया हैं।" इस बात की पुष्टि करने के लिए वह आगे कहते हैं, मैंने उन पुरुषों के सामने तुम्हारा नाम प्रकट कर दिया हैं जिन्हें तुमने मुझे दिया हैं। जिसका मूल रूप से अर्थ यह भी हैं कि यीशु ने अपने शिष्यों को पिता का चरित्र प्रकट कर दिया।

परमेश्वर को "जानना" का अर्थ हैं उसके **चरित्र** को जानना।

अपने खोए हुए बच्चों के लिए पिता को प्रकट करना ख्रिस्त का वास्तविक अभियान था—न केवल मानवता के लिए, बल्कि देख रहे अपतित ब्रह्मांड के लिए भी। उनका हर शब्द जो उन्होंने बोला, हर आँसू जो उनकी आँखों से निकला, हर चमत्कार जिसे उन्होंने किया, उनकी हर करुणा का कार्य—ये सभी शैतान के झूठ का परमेश्वर का जवाब थे।

देवदूतों ने बहुत ध्यान से देखा। उन्होंने देखा कि उन्होंने कुष्ठ रोगियों को दोष देने के बजाय छुआ। उन्होंने देखा कि उन्होंने पापियों को कुचलने के बजाय क्षमा किया। उन्होंने देखा कि लाज़रस की कब्र पर उनकी आँखों से आँसू बहे। उन्होंने देखा कि झूठे आरोपों के सामने वह चुप रहे।

शुरुआत से लेकर पार्थिव सृष्टि से लेकर यीशु के पृथ्वी पर आने तक, स्वर्गीय देवदूतों ने शैतान के दुष्ट कार्यों को देखा था। लेकिन अब न केवल ऐसा ही, बल्कि उन्होंने पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से देखना शुरू किया—कि परमेश्वर वास्तव में कैसे हैं।

यीशु के प्रिय शिष्य यूहन्ना उनके बारे में यीशु के सभी शिष्यों के प्रतिनिधि के रूप में बोलते हैं:

“और वचन देहधारी हुआ, और हमारे बीच बसा, (और हमने उसकी **महिमा** देखी, पिता के एकलौते पुत्र की सामान महिमा,) जो **कृपा और सत्य से परिपूर्ण था।**” यूहन्ना 1:14

शैतान की स्थिति: निकाला गया, परन्तु अभी तक नीचे नहीं फेंका गया।

आज के कई ईसाइयों को यह समझ नहीं हैं कि पतन के बाद **शैतान की स्वर्ग से संबंधित स्थिति क्या थी,** और क्रूस के बाद क्या बदलाव आया। इस भ्रम या समझ की कमी उनकी अपने जीवन में उसके वर्तमान कार्य के प्रति जागरूकता को कमजोर करती हैं।

शास्त्र घोषित करता हैं:

"इसलिए वह बड़ा अजगर निकाला गया... वह प्राचीन सर्प, जिसे दुष्ट और शैतान कहा जाता हैं... वह पृथ्वी पर फेंक दिया गया, और उसके देवदूत भी उसके साथ **फेंक** दिए गए" (प्रकाश 12:9)।

फिर एक और घोषणा आती हैं:

"अब उद्धार, और शक्ति, और हमारे परमेश्वर का राज्य... आ गया हैं, क्योंकि हमारे भाइयों का अभियोगी... नीचे **फेंक दिया** गया हैं" (प्रकाश 12:10)।

यद्यपि ये बाइबल की आयतें बाइबल में एक दूसरे के बगल में हैं, ये आयतें इतिहास में **दो अलग-अलग कालों का वर्णन करती हैं जो एक दूसरे से बहुत दूर हैं।**

शैतान को तब स्वर्ग से निकाला गया जब वह और उसके देवदूतों ने अपनी वफादारी त्यागने का फैसला किया। लेकिन परमेश्वर ने उन्हें जबरदस्ती बाहर नहीं निकाला। वे चले गए—क्योंकि उनका झूठ परमेश्वर के सत्य के सामने और टिक नहीं सका। यह वही व्यवहार हैं जो कोई भी बुरा हारने वाला करता हैं जो खेल खत्म होने से पहले ही खेल छोड़ देता हैं क्योंकि उसे एहसास होता हैं कि वह खेल हार जाएगा।

"जो देवदूतों ने अपने निवास स्थानों को नहीं बनाए रखा, बल्कि अपने घर को छोड़ दिया..." (यहूदा 1:6)। देखिए, यहाँ स्पष्ट रूप से कहा गया हैं कि वे चले गए।

"स्वर्ग में युद्ध" हथियारों से नहीं लड़ा गया था। यह तर्कों, दावों और **प्रतिदावों** से लड़ा गया था, यह युद्ध सत्य और छल के बीच था। जब लूसिफर और उसके देवदूत और अधिक प्रभावशाली नहीं हो सके, तो वे शर्मिंदा होकर स्वर्ग छोड़ गए।

यद्यपि उसे निकाला गया था, **लेकिन अभी तक उसे नीचे नहीं फेंका गया** था। इसका मतलब हैं कि क्रूस से पहले, शैतान *अभी* भी कभी-कभी *स्वर्ग में भाइयों के अभियोगी के रूप में प्रतीत होता* था। वह स्वर्ग चलाने के परमेश्वर के तरीकों को चुनौती देता था और स्वर्गीय मन को प्रभावित करने का प्रयास करता था। कभी-कभी तो वह मनुष्यों के प्रति अपने निर्धारित कर्तव्य का पालन करते समय देवदूतों को भी रोकता था।

उपरोक्त आयत (प्रकाश 12:10), यीशु के क्रूसीकरण के बाद के एक काल के बारे में बात करती हैं, जब शैतान को ब्रह्मांड और स्वर्गीय देवदूतों के सामने पूरी तरह से पराजित कर दिया गया था। उसके बाद, वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सका या अपने झूठ और पाखंड से किसी भी स्वर्गीय नागरिक को नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं कर सका।

लेकिन क्या बदला और क्यों? इस अध्याय में हम क्रूस से पहले और बाद के महान विवाद को देखेंगे।

अब हम नीचे यीशु के क्रूस पर चढ़ने से पहले विभिन्न परिस्थितियों में परमेश्वर और उसके देवदूतों के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए शैतान के निरंतर प्रयासों के विवरण देखेंगे।

क्रूस से पहले कार्यरत आरोपकर्ता

अय्यूब की परीक्षा

उज़ देश में एक आदमी था, जिसका नाम अय्यूब था; और वह आदमी निष्कलंक, और सीधा था, और वह परमेश्वर से डरता था, और बुराई से दूर रहता था। अय्यूब 1:1

“अब एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के पुत्र वहाँ आए, और प्रभु के सामने अपना परिचय देने लगे, और शैतान भी उनके बीच में आया” (अय्यूब 1:6)।

तो यहाँ हम देखते हैं कि क्रूस से पहले शैतान स्वर्ग का दौरा करता था। संभवतः वह पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता था। और प्रभु ने शैतान से कहा, तू कहाँ से आया हैं? तब शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, और कहा, पृथ्वी में इधर-उधर घूमने और उसमें चलने-फिरने से। और प्रभु ने शैतान से कहा, क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया हैं, कि पृथ्वी में उस जैसा कोई नहीं, एक निष्कलंक और सीधा आदमी, जो परमेश्वर से डरता हैं, और बुराई से दूर रहता हैं? “तब शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, और कहा, क्या अय्यूब बिना कुछ पाए परमेश्वर से डरता हैं? क्या तूने उसके, और उसके घर के, और उसके सब के सब के चारों ओर एक बाड़ नहीं बना रखा हैं? तूने उसके हाथ के काम को आशीर्वाद दिया हैं, और उसकी सम्पत्ति देश में बढ़ गई हैं। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ा, और उसके सब कुछ को छुअ, तब वह तेरे मुँह को शाप देगा।" अय्यूब 1:9-11

एक गणनात्मक आत्मविश्वास के साथ, शैतान ने अय्यूब, एक निष्कलंक और सीधे आदमी और स्वयं परमेश्वर पर आरोप लगाया। उसने इशारा किया कि परमेश्वर का शासन इनाम और भय पर आधारित था, प्रेम पर नहीं। परमेश्वर ने प्रश्न को उजागर होने दिया—इसलिए नहीं कि शैतान सही था, बल्कि क्योंकि ब्रह्मांध उसके बारे में धीरे-धीरे जान रहा था। यह बाइबल में दर्ज किया गया पहला मौका हैं जहाँ निकाले जाने के बाद शैतान स्वर्ग में प्रकट हुआ और स्वर्गीय सभा में परमेश्वर के खिलाफ अपना झूठा दावा किया। यह देवदूतों के सामने परमेश्वर को वास्तविक पूजा और प्रेम पाने के अयोग्य साबित करने के लिए किया गया था। यह दर्शाता हैं कि मनुष्य भय या अपनी जरूरतों के कारण परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

कहानी आगे बताती हैं कि परमेश्वर ने शैतान को अपनी सारी संपत्ति को नष्ट करके, दस बच्चों को मारकर और उसे एक गंभीर और दर्दनाक त्वचा रोग से पीड़ित करके अय्यूब के विश्वास की परीक्षा लेने की अनुमति दी।

इन सबके बावजूद, अय्यूब वफादार रहा। यदि उसकी परमेश्वर की पूजा भय या स्वार्थी कारणों पर आधारित थी, तो वह दिनों, महीनों और वर्षों तक उसके साथ जो कुछ भी हुआ, उसे शांति से नहीं सहन करता।

मूसा की कब्र पर

मूसा के दफन के स्थान पर, अदृश्य ब्रह्मांड के सामने एक बड़ा संघर्ष खुला। जब यीशु अपने दास को कब्र से बुलाने आए, तो शैतान उसका विरोध करने के लिए प्रकट हुआ, और मूसा पर एक पापी होने का दावा करते हुए कहा कि वह वैधानिक रूप से मर चुका हैं।

वफादार देवदूतों के सामने, शैतान ने अपने कार्य के लिए सहानुभूति मांगी, खुद को न्याय का रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया और ख्रिस्त पर नियम को दरकिनार करने का आरोप लगाया। लेकिन, जैसा कि यहूदा 9 में प्रकट होता हैं, ख्रिस्त ने तर्क नहीं किया या आरोप नहीं लगाया; उन्होंने केवल कहा, *"प्रभु तुझे फटकारे,"* और शांत कब्र में जीवन का उच्चारण किया।

मूसा का पुनरुत्थान उन देवदूतों के लिए एक शक्तिशाली गवाही बन गया जो ख्रिस्त के साथ खड़े थे। पहली बार, उन्होंने किसी संदेह के बिना देखा कि उनके सेनापति के पास मृत्यु पर भी अधिकार था। इसके अलावा, यह उन्हें प्रकट करता था कि परमेश्वान का इरादा हैं कि कोई भी नष्ट न हो।

शैतान ने विश्वास किया था कि "तू धूल हैं, और धूल में ही तू लौट जाएगा" का फरमान उसे मानवता पर कानूनी स्वामित्व और विवादरहित नियंत्रण देता हैं, लेकिन यीशु के इस कृत्य ने उसके दावे को चकनाचूर कर दिया। देवदूतों ने देखा कि ख्रिस्त सचमुच पुनरुत्थान और जीवन थे, जो उन लोगों को छुड़ा सकते थे जिन्हें शैतान ने बांध रखा था। उसके बाद यीशु की सर्वोच्चता और धार्मिकता पर उनका विश्वास बहुत बढ़ गया।

प्रार्थना के युद्धक्षेत्र पर

जब भविष्यवक्ता दानिय्येल प्रभु द्वारा दिए गए भविष्यद्वक्त संदेश के कुछ पहलुओं को समझने में संघर्ष कर रहे थे, तो उन्होंने सही भविष्यद्वक्त समझ के लिए प्रभु से प्रार्थना में बहुत जोर से उनकी खोज की। उनकी प्रार्थनाओं का तुरंत जवाब दिया गया और प्रभु ने देवदूत गब्रिएल को भेजा ताकि वे भविष्यवाणी को समझने में उनकी सहायता करें।

देवदूत गब्रिएल वही हैं जिसने लूसिफर के पतन के बाद उसकी भूमिका संभाली। जैसे ही यह महान देवदूत अपने स्वर्गीय निर्धारित कर्तव्य को पूरा करने के लिए उतरा, शास्त्र कहता हैं, फारस का राजकुमार 21 दिनों तक उसका विरोध करता रहा। बाइबल विद्वान फारस के राजकुमार को शैतान के रूप में इंगित करते हैं। हम इस बात को सुनिश्चित हैं कि यह शैतान था क्योंकि बाइबल कहती हैं कि यीशु (मिखाएल) इस शत्रु से लड़ने के लिए नीचे आए (दानिय्येल 10:13, 20)। ऐसा इसलिए हैं क्योंकि देवदूत गब्रिएल 21 दिनों तक इस शत्रु से लड़ने में सक्षम नहीं था।

इस मामले में भी, शैतान गब्रिएल से शारीरिक रूप से युद्ध नहीं कर रहा था। यह एक बौद्धिक आध्यात्मिक युद्ध था। निश्चित रूप से, जैसा कि शैतान का दृष्टिकोण हैं, उसने अवश्य ही देवदूत गब्रिएल के मन को परमेश्वर के खिलाफ अपने स्वयं के बनाए गए झूठ के आधार पर कई प्रश्नों, तर्कों और दावों के साथ उलझन में डाल दिया होगा। शैतान जानता था कि गब्रिएल यीशु के प्रथम आगमन को अपने केंद्र में रखने वाले एक महत्वपूर्ण भविष्यद्वक्त संदेश को समझाने के लिए नीचे आए थे। इसलिए, उसने उसे रोकने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया, साथ ही परमेश्वर के इस वफादार सेवक को अपनी टीम में शामिल करने की कोशिश की। हम जानते हैं कि यह क्रूस से पहले हुआ था, क्योंकि भविष्यवक्ता दानिय्येल ख्रिस्ट के 530-600 वर्ष पहले रहते थे।

क्रूस के बाद

जैसा कि हमने ऊपर क्रूस से पहले की स्थिति में देखा, शैतान और उसकी सेना आरंभ में निकाले जाने के बावजूद अभी भी स्वर्गीय दूतों या यीशु स्वयं को **रोक सकते** थे। इस अवधि में परमेश्वर के पक्ष के देवदूत उसका आज्ञापालन करते थे—लेकिन सच्चाई यह हैं कि कई प्रश्न दिलों में बने रहे।

फिर क्रूस आया। ब्रह्मांड आगे झुक गया।

यीशु के जन्म से लेकर क्रूस तक, शैतान का वास्तविक चरित्र प्रकट हुआ—एक गलत समझे गए सुधारक के रूप में नहीं, बल्कि एक हत्यारे, झूठे, और डाकू के रूप में। स्वर्गीय देवदूतों ने देखा कि उसने मानवता को परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ने के लिए कैसे प्रेरित किया। घृणा खुलकर सामने आई। प्रेम खून बहता हुआ खड़ा था।

जब यीशु ने क्रूस पर अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना की, तो स्वर्ग ने उसके दिल को समझा। जब यीशु ने खुद को बचाने से इनकार कर दिया, तो देवदूतों ने रोए। जब यीशु ने अपनी अंतिम सांस ली और चिल्लाए, *"यह समाप्त हो गया,"* तो उन्होंने वास्तव में पिता के पक्ष में सभी स्वर्गीय दल को जीत लिया।

अपने सेवकार्य के बीच में यीशु ने स्वयं घोषणा की थी:

“अब इस संसार का न्याय होगा; अब इस संसार का शासक (शैतान) बाहर **फेंक दिया** जाएगा” (यूहन्ना 12:31)। यह वह क्षण था जब शैतान को नीचे **फेंक दिया** गया था।

उसके तर्क अब सुनाई नहीं दिए। उसके आरोपों पर ध्यान नहीं दिया गया। देवदूतों को अब और आश्चर्य नहीं हुआ। परमेश्वान सदैव के लिए निर्दोष सिद्ध हुए।

पुनरुत्थान की सुबह: एक बदला हुआ स्वर्ग

प्रेरित बहन ई. व्हाइट के दिव्य प्रेरित लेखन से सीखना आश्चर्यजनक हैं। कलवारी के बाद स्वर्ग में देवदूत गब्रिएल और अन्य देवदूत कैसा व्यवहार करते थे।

प्रथम दिन की रात धीरे-धीरे बीत रही थी। दिन की रोशनी से ठीक पहले का सबसे अंधकारमय घड़ी आ गई थी। ख्रिस्त अभी भी अपनी संकरी कब्र में एक कैदी थे। बड़ा पत्थर अपनी जगह पर था; रोमन की मुहर टूटी नहीं थी; रोमन के पहरेदार पहरा दे रहे थे। और वहाँ अदृश्य दर्शक भी थे। अशुभ देवदूतों का दल उस स्थान के चारों ओर इकट्ठा था। यदि संभव होता, तो अंधेरे का राजकुमार अपनी विद्रोही सेना के साथ परमेश्वर के पुत्र को रखने वाली कब्र को हमेशा के लिए सील कर देता। लेकिन एक स्वर्गीय दल कब्र की रक्षा कर रहा था। शक्ति में पराक्रमी देवदूत कब्र की रक्षा कर रहे थे, और जीवन के राजकुमार का स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे।

और देखो, एक बड़ा भूकंप हुआ: क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत स्वर्ग से उतरा। ईश्वर के दिव्य शस्त्र से सज्जित, यह स्वर्गदूत स्वर्गीय दरबार छोड़कर आया। ईश्वर की महिमा की चमकीली किरणें उसके आगे चलीं और उसके मार्ग को प्रकाशित किया। उसका चेहरा बिजली की तरह था, और उसका वस्त्र बर्फ की तरह सफेद था: और उसके भय से रखवाले काँपने लगे, और मृत पुरुषों के समान हो गए।

अब, याजक और शासक, तुम्हारे रखवाले की शक्ति कहाँ हैं? बहादुर सैनिक जो कभी मानवीय शक्ति से नहीं डरे, अब बिना तलवार या भाले के बंदी बना लिए गए हैं। जिस मुख को वे देख रहे हैं वह किसी मनुष्य योद्धा का मुख नहीं हैं; वह प्रभु की सेना के सबसे शक्तिशाली का मुख हैं।

यह दूत वही हैं जो उस पद को भरता हैं जिससे शैतान गिरा था। यह वही हैं जिसने बेतलेहम की पहाड़ियों पर मसीहा के जन्म की घोषणा की थी। उसके आगमन पर पृथ्वी काँपती हैं, अंधकार की सेनाएँ भागती हैं, और जैसे ही वह पत्थर को हटाता हैं, स्वर्ग धरती पर आता प्रतीत होता हैं। सैनिक उसे पत्थर को एक छोटे कंकड़ की तरह हटाते हुए देखते हैं, और उसे चिल्लाते सुनते हैं, 'ईश्वर के पुत्र, बाहर आओ; तुम्हारा पिता तुम्हें बुलाता हैं।'

वे ईसा को कब्र से बाहर आते देखते हैं, और उसे फटे हुए कब्र के ऊपर घोषित करते सुनते हैं, 'मैं पुनरुत्ति हूँ, और जीवन हूँ।' जैसे ही वह भव्य और महिमा में बाहर आता हैं, स्वर्गदूत सेना उद्धारक के सामने झुककर उसकी पूजा करती हैं, और स्तुति के गीतों से उसका स्वागत करती हैं।

भविष्यवक्ता दानियल के समय में, स्वर्गदूत गब्रिएल को 21 दिनों तक अपने काम में बाधा और विलंब झेलना पड़ा। लेकिन अब कोई बाधा नहीं थी। कोई बहस, कोई विलंब, कोई भय नहीं था। क्रूस ने सब कुछ बदल दिया था।

आज, पूरे वफादार सृष्टि एकजुट होकर खड़ी हैं। स्वर्गदूत अब अपने दिल में प्रश्नों के साथ ईश्वर की सेवा नहीं करते। वे आनंद के साथ सेवा करते हैं। मानवता को अब उसी विश्वास में आमंत्रित किया गया हैं। हमें सच्चे सुसमाचार को जानने का निमंत्र दिया गया हैं जो हैं: 'ईश्वर प्रेम हैं' (1 यूहन्ना 4:8)। वह नहीं बदला हैं। वह नहीं बदलेगा।

लेकिन शैतान विश्राम नहीं करेगा। प्रकाशितावाली की पुस्तक एक भविष्यवाणी चित्र प्रस्तुत करती हैं जो यह दर्शाती हैं कि इन अंतिम दिनों में, शैतान फिर से ईश्वर के लोगों के विरुद्ध युद्ध करेगा। वह उन्हें पृथ्वी के अंत तक सताएगा। (प्रकाशितावाली 12:17)।

अंतिम लड़ाई हमारे सामने हैं। हमें शैतान से डरने की आवश्यकता नहीं हैं, वह एक पराजित शत्रु हैं। आइए, स्वर्गदूतों की तरह, ईश्वर पर पूर्ण रूप से विश्वास करें। विश्वास में दृढ़ रहें। हम क्रूस से लिपटे रहें। क्योंकि कलवारी पर, सृष्टि ने अपना पक्ष चुना।

अध्याय 11 – संघर्ष जारी हैं

ख्रिस्त की मृत्यु ने न तो अच्छाई और बुराई के बीच के विवाद को समाप्त किया—बल्कि उसे उजागर किया।

क्रूस पर, शैतान का चरित्र संपूर्ण ब्रह्मांड के सामने प्रकट हो गया। उसकी परमेश्वर के नियम के प्रति घृणा, निर्दोषों के प्रति उसकी क्रूरता, और स्वर्ग के खिलाफ उसके विद्रोह को उजागर कर दिया गया। फिर भी, हालांकि सिद्धांत रूप में पराजित हो गया, वह नष्ट नहीं हुआ। हालांकि एक पराजित शत्रु के रूप में नीचे गिराए जाने के बावजूद, वह नए संकल्प के साथ उठा, जिन्हें ख्रिस्त ने अपने रक्त से छुड़ाया था, उन्हें नष्ट करने के लिए। उस क्षण से आगे, संघर्ष का युद्धक्षेत्र स्वर्ग से पृथ्वी पर स्थानांतरित हो गया।

इसलिए, हे स्वर्ग, और तुम जो उसमें निवास करते हो, तुम आनंद मनाओ। (लेकिन) हे पृथ्वी और समुद्र के निवासियों, तुम्हारे लिए विपत्ति हैं! क्योंकि शैतान तुम्हारे पास उतरा हैं, जिसमें बड़ा क्रोध हैं, क्योंकि वह जानता हैं कि उसके पास थोड़ा ही समय बचा हैं।"
— प्रकाश 12:12

आग में जन्मी चर्च

क्रूस से पहले और उसके बाद भी, पौगंथ रोम सत्ता में था और शैतान ने इस राज्य के माध्यम से सुसमाचार को नष्ट करने के लिए काम किया। ख्रिस्त के प्रारंभिक अनुयायियों को चेलाई की कीमत स्पष्ट रूप से समझ आई थी। उनके मालिक को अस्वीकार किया गया था, उन्हें कोड़े मारे गए थे, और क्रूस पर चढ़ाया गया था। वे बेहतर व्यवहार की अपेक्षा नहीं करते थे।

जल्द ही, यरूशलेम उन सभी के लिए खतरे की जगह बन गया, जिन्होंने यीशु के नाम को स्वीकार किया था। सनहेद्रिन ने धमकियों, कैद और मृत्यु के माध्यम से सुसमाचार को चुप कराने की कोशिश की। स्तीफन, एक युवा धर्मदूत, पहले शहीद बने, उनकी क्रूर मृत्यु ने एक भयंकर पीड़ा की शुरुआत की, जिसने विश्वासियों को यहूदिया और उसके बाहर तितर-बितर कर दिया।

फिर भी, पीड़ा ने केवल उस कार्य को आगे बढ़ाया जिसे शैतान नष्ट करना चाहता था। *"जो लोग बिखर गए, वे हर जगह वचन का प्रचार करते गए।"* — **प्रेरितों के कार्य 8:4**

प्रेरितों ने एक पुनर्जीवित उद्धारकर्ता का संदेश शत्रुतापूर्ण भूमियों में ले गए। पतरस और यूहन्ना ने बेदर्दी और कैद के बावजूद साहसपूर्वक प्रचार किया। याकूब को मार दिया गया। पौलुस ने पत्थरबाजी, जंजीरों, भूख और वनवास को सहा। बारह प्रेरितों में से, केवल यूहन्ना ही बूढ़ी उम्र तक जीवित रहे—लेकिन उन्हें भी पतमोस पर देशनिकास की सजा दी गई, जहाँ ख्रिस्त ने भविष्यवाणी के रूप में पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दृश्यों का प्रकाशन किया।

शत्रु ने बल से चर्च को नष्ट करने की आशा की। इसके बजाय, विश्वासियों का विश्वास शुद्ध हुआ, मजबूत हुआ, और दूर-दूर तक फैल गया।

पीड़ा से लोकप्रियता तक

जब शैतान ने देखा कि हिंसा से कोई परिणाम नहीं निकल रहा हैं, तो उसने एक और अधिक खतरनाक रणनीति अपनाई।

ईसाई धर्म पर विजय पाने में असमर्थ, उसने उसके साथ मिलने का फैसला किया। रोम चौथी शताब्दी में ईसाई चर्च के साथ एकजुट हो गया जब सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने ईसाई धर्म को वैध बनाया और इसका उपयोग साम्राज्यिक एकता को मजबूत करने के लिए किया, और बाद के सम्राटों ने इसे राज्य धर्म बना दिया, जिससे ईसाई संस्थानों को रोमन राजनीतिक और प्रशासनिक संरचनाओं को अवशोषित करने की अनुमति मिली क्योंकि पौगंथ प्रथाएँ फीकी पड़ रही थीं।

जैसे-जैसे चर्च को सांसारिक शक्तियों का समर्थन मिला, विनम्रता और सादगी की जगह महत्वाकांक्षा और समारोह ने ले ली। ईसाई नामों के साथ पौगंथ रीतियाँ चर्च में प्रवेश कर गईं, और एकता के लिए सत्य का बलिदान कर दिया गया।

अंततः, जैसे-जैसे ईसाई धर्म रोमन संस्कृति के साथ मिल गया, पूजा शनिवार से रविवार में स्थानांतरित हो गई, ख्रिस्त के पुनरुत्थान का सम्मान करने का दिखावा करते हुए और रोम के रविवार के पौगंथ पूजा परंपरा के साथ संरेखित होते हुए; कॉन्स्टेंटाइन ने 321 ईस्वी में रविवार को विश्राम का एक कानूनी दिन बनाकर इस बदलाव को मजबूत किया।

प्रेरित पौलुस की चेतावनी पूरी हुई: *"क्योंकि अधर्म का रहस्य पहले से ही काम कर रहा हैं।"* **— 2 थिस्सलुनीकियों 2:7**

चर्च और राज्य का यह मिलन इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। चर्च को राजनीतिक शक्ति मिली, लेकिन आध्यात्मिक अधिकार खो गया। मानवीय परंपरा ने परमेश्वर के वचन का स्थान ले लिया, और मनुष्यों की आज्ञाओं ने परमेश्वर की आज्ञाओं को ढक लिया।

इस प्रकार, भविष्यवाणी में भविष्यवाणी किए गए आध्यात्मिक अंधकार का एक दौर शुरू हुआ।

अंधकार युग की लंबी रात

पौगंथ रोम के शताब्दियों तक पोप रोम में बदलने के साथ, बाइबिल को लोगों से दूर रखा गया, यह सिखाकर कि यह साधारण लोगों द्वारा पढ़ने के लिए बहुत पवित्र हैं। भय ने अंतःकरण पर शासन किया। क्षमा बेची जाती थी, और उद्धार को अस्पष्ट कर दिया गया था। परमेश्वर के नियम को शब्बाथ को अस्वीकार करके और मूर्तियों को प्रवेश करके बदल दिया गया था। ख्रिस्त का मध्यस्थ कार्य मानवीय अधिकार और पौगंथ पूजा की परतों के नीचे छिप गया था।

फिर भी, सबसे अंधेरे घंटे में भी, परमेश्वर ने एक वफादार शेष को बचाए रखा।

दूरस्थ घाटियों और छिपी हुई जगहों में, वाल्डेंस लोगों ने शास्त्रों को अपने सबसे बड़े खजाने के रूप में संजोया। बच्चों ने बाइबिल के पूरे अंशों को कंठस्थ कर लिया। विश्वासियों ने छद्म वेश में यात्रा की, अपने जीवन के जोखिम पर परमेश्वर के वचन को साझा किया।

"तेरा वचन मेरे पैरों के लिए एक दीपक हैं, और मेरे पथ के लिए एक प्रकाश हैं।"— **भजन संगीत 119:105**
जेरोम **(347–420 ई.)** और जॉन हस **(1372–1415 ई.)** दोनों सुधारकों ने परिषदों के सामने साहसपूर्वक गवाही दी। जिरोलामो सावोनारोला **(1452-1498)** ने भ्रष्टाचार के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद की। हज़ारों लोगों ने अपने खून से अपने विश्वास को मुहर लगाई। हालांकि शत्रु विजयी प्रतीत होता था, स्वर्ग ने हर बलिदान को दर्ज किया।

प्रकाश मंद था—लेकिन बुझा नहीं गया था।

सुधारवाद का उदय

परमेश्वर ने अपने सत्य को भ्रम में छोड़कर नहीं गया।

नियत समय पर, सत्य को फिर से खोजा गया, और अंतःकरण जागृत हुआ। मार्टिन लूथर, **(1483 से 1546)** एक जर्मन रोमन कैथोलिक साधु, शांति प्रायश्चित या अनुष्ठान में नहीं, बल्कि इस वादे में पाई:

“धार्मिक विश्वास से जीएगा।”— **रोमियों 1:17**

सम्राटों और परिषदों के सामने खड़े होकर, लूथर ने मनुष्यों के आज्ञाकारिता होने के बजाय परमेश्वर की आज्ञापालन को चुना। छपाई की मशीन एक दिव्य उपकरण बन गई, जिसने यूरोप भर में शास्त्रों का प्रसार किया। परमेश्वर का वचन लोगों के हाथों में रखा गया।

टिंडेल **(1494–1536)** ने इंग्लैंड को बाइबिल पढ़ने के लिए परिश्रम किया। नॉक्स **(1514–1572)** ने स्कॉटलैंड में सत्य का प्रचार किया। कैल्विन **(1509–1564)** ने सिद्धांतों को व्यवस्थित किया, और ज्विंगली **(1484–1531)** ने साहस के साथ सुधार का प्रचार किया। जबकि जॉन बन्यन (1628–1688) ने तीर्थयात्री की प्रगति लिखी।

सुधारवाद ने अज्ञान की बेड़ियों को तोड़ दिया—लेकिन उसने काम पूरा नहीं किया। कई लोग जहाँ थे, वहीं रुक गए, सत्य में और आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं थे। इस प्रकार, जबकि प्रकाश बढ़ा, भ्रम पूरी तरह से दूर नहीं हुआ।
संघर्ष जारी रहा।

भविष्यवाणी अंतिम युग को प्रकाशित करती हैं।

इतिहास के आगे बढ़ने के साथ, परमेश्वर ने भविष्यवाणी के माध्यम से गहरे सत्य प्रकट किए।

दानिय्यल की पुस्तक से एक समय की भविष्यवाणी आई, जो ख्रिस्त की सेवकाई के अंतिम चरण तक पहुँचती हैं:
“दो हज़ार तीन सौ दिनों तक; तब पवित्रस्थान को शुद्ध किया जाएगा।”— **दानिय्यल 8:14**

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में, महाद्वीपों के विश्वासियों ने गंभीर प्रार्थना के साथ शास्त्रों का अध्ययन किया। परमेश्वर ने विनम्र पुरुषों और महिलाओं के दिलों पर काम किया। **विलियम मिलर (1782–1849)** और अन्य लोगों ने न्याय के निकट होने का प्रचार किया, लोगों को पश्चात्ताप और तैयारी के लिए बुलाया। उनकी **दानिय्यल 8:14** की भविष्यवाणीगत समझ ने उन्हें यह भविष्यवाणी करने के लिए प्रेरित किया कि यीशु का प्रथम आगमन **22 अक्टूबर 1844** को होगा, जो बाद में एक महत्वपूर्ण घटना की गलत व्याख्या साबित हुई।

इस संदेश ने दिलों की परीक्षा ली। जब ख्रिस्त अपेक्षित रूप से **22 अक्टूबर 1844** को नहीं लौटे, तो कई लोग बुरी तरह निराश हो गए। शैतान उपहास और अविश्वास में फूला नहीं समाया। फिर भी, परमेश्वर अपने लोगों का नेतृत्व कर रहा था—भ्रम की ओर नहीं, बल्कि स्वर्गीय पवित्रस्थान में ख्रिस्त के काम को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए।

*"हमारे पास ऐसा एक महायाजक हैं, जो स्वर्ग की महिमा के सिंहासन के दाहिनी ओर बैठा हैं; और वह पवित्रस्थान का और उस सच्चे तंबू का सेवक हैं, जिसे प्रभु ने बनाया हैं, मनुष्य ने। —***इब्रानियों 8:1–2**

भविष्यवाणी पूरी हुई—पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में। मिलराइट भाइयों ने बाद में समझा, कि ख्रिस्त 22 अक्टूबर 1844 को पृथ्वी पर नहीं आने वाले थे, बल्कि जैसा कि पार्थिव पवित्रस्थान में महायाजक भेड़ के बच्चे के खून के साथ पवित्रस्थान के सबसे पवित्र भाग में प्रवेश करता था ताकि लोगों के पाप के प्रायश्चित के लिए, वैसे ही ख्रिस्त ने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए सबसे पवित्र स्थान (पिता की उपस्थिति) में प्रवेश किया।

शेष और समापन संघर्ष।

अंतिम संघर्ष अब सत्य और आज्ञापालन पर केंद्रित हैं।

शैतान, यह जानते हुए कि उसका समय कम हैं, अपने क्रोध और निराशा को उन लोगों की ओर निर्देशित करता हैं जो परमेश्वर के वचन को थामे रखते हैं और पूरी तरह से ख्रिस्ट पर भरोसा करते हैं। शैतान के छल और भी परिष्कृत हो गए हैं। उसकी गलतियों को आकर्षक बना दिया गया हैं। जो नियमविरोध वह बनाता हैं, उसे स्वतंत्रता के रूप में बढ़ाया जाता हैं।

फिर भी, परमेश्वर अपने शेष लोगों को दृढ़ रहने के लिए बुलाता हैं।

"यहाँ संतों की धीरज हैं: ये वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और यीशु के विश्वास को बनाए रखते हैं।"
— प्रकाश 14:12

प्रेरितों से लेकर सुधारकों तक, शहीदों से लेकर आगमन विश्वासियों तक, वही विवाद जारी हैं। वही ख्रिस्त अपने लोगों का नेतृत्व करता हैं। वही शत्रु उनका विरोध करता हैं।

लेकिन परिणाम निश्चित हैं। जल्द ही संघर्ष समाप्त हो जाएगा। सत्य की विजय होगी। ख्रिस्त एक राजा के रूप में वापस आएँगे, और ब्रह्मांड हमेशा के लिए पाप से मुक्त हो जाएगा।

"और परमेश्वर उनकी आँखों से सभी आँसू पोंछ देगा।"
— प्रकाश 21:4

उस दिन तक, संघर्ष जारी हैं—लेकिन परमेश्वर के शेष लोग अकेले नहीं लड़ते। अगले अध्याय में, हम सीखेंगे कि परमेश्वर के शेष लोग कौन हैं और इस महान विवाद में उनकी क्या भूमिका हैं।

अध्याय 12 – ईश्वर के शेष लोग

रात कभी उस समय उतनी अंधकार नहीं होगी जैसा भोर से पहले होती हैं।

पवित्र इतिहास के पन्नों पर, ईश्वर ने कभी बहुतों, शक्तिशालियों, या प्रशंसा के साथ काम नहीं किया। उसने हमेशा अपने लिए एक शेष को बचाया हैं—एक ऐसा लोग जो अक्सर दिखाई नहीं देता, गलत समझा जाता हैं, और हर तरफ से दबाया जाता हैं, फिर भी विश्वासी रहता हैं, भले ही विश्वास की कीमत सब कुछ हो।

पृथ्वी की कहानी के अंतिम अध्याय और ईश्वर के शेष लोग अलग नहीं हैं। स्वर्ग द्वारा देखा गया लोग।

प्रेरित यूहन्ना, पटमोस द्वीप पर निर्वासित, को प्रतीकात्मक चिह्नों में अंतिम संघर्ष का दर्शन दिया गया, जो शेष लोगों की भविष्यवाणी इतिहास और भविष्य घटनाओं में उनकी भूमिका के बारे में बोलते हैं।

"और अजगर नारी स्त्री से क्रोध करकर उसके वंश के उन शेष के साथ युद्ध करने चला गया, **जो ईश्वर की आज्ञाओं को रखते हैं, और ईसा मसीह की गवाही रखते हैं।"***—प्रकाशितावाली 12:17*

यहाँ ईश्वर के शेष लोगों के लिए बाइबिल की परिभाषा हैं—कोई सदस्य सूची पर नाम नहीं, कोई मानवीय अधिकार द्वारा सुरक्षित संस्था नहीं, बल्कि एक ऐसे लोग जो दो अचूक चिह्नों से चिह्नित हैं:

1. **वे ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं**
2. **वे ईसा मसीह की गवाही रखते हैं**

पहला चिह्न समझना आसान हैं। यहाँ ईश्वर की आज्ञाएँ ईश्वर के व्यवस्थान को दर्शाती हैं। हालांकि, स्वयं धर्मग्रंथ ही स्पष्ट करता हैं कि दूसरा चिह्न ईसा मसीह की गवाही का क्या अर्थ हैं:

"क्योंकि ईसा की गवाही **भविष्यवाणी की आत्मा हैं।"**—प्रकाशितावाली 19:10

तब, शेष एक भविष्यवाणीपूर्ण लोग हैं। जिसके पास ईश्वर से एक सच्चा भविष्यवक्ता हैं जो उन्हें धर्मग्रंथ की ओर इशारा देता हैं, उन्हें धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता हैं। वे समय के अंत में उभरते हैं, संयोग से नहीं, बल्कि ईश्वरीय डिजाइन से।

निराशा से जन्म, ईश्वर द्वारा ढाला गठित।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में, जब दुनिया पुनर्जाग और क्रांति से धड़क रही थी, ईश्वर ने **विलियम मिलर** नामक एक विनम्र किसान के हृदय को हिलाया। बिना प्रसिद्धि के लिए, बिना कोई नई चर्च बनाने की इच्छा के, मिलर ने बस अपनी बाइबिल खोली और भविष्यवाणियों का अनुसरण किया जहाँ उन्हें ले गए।

रात दर रात, मोमबत्ती की रोशनी दानिय्यल और प्रकाश की पुस्तकों के पन्नों पर टिमटिमाती रही। धीरे-धीरे, सावधानपूर्वक, एक भविष्यवाणी ने दूसरी का रास्ता खोला, और विलियम मिलर के हृदय में एक विश्वास बाकी सबसे भी अधिक जल उठा: **यीशु फिर आ रहे हैं।**

दानियल 8:14 का अध्ययन करने के बाद, जिसमें लिखा हैं। "और उसने मुझसे से कहा, दो हजार तीन सौ दिनों तक; तब तीर्थस्थान शुद्ध हो जाएगा।", मिलर ने विचारशील किया कि क्योंकि मूसा द्वारा बनाया गया तीर्थस्थान पृथ्वी पर था, ईसा जल्दी ही फिर से आ रहा हैं ताकि पाप से पृथ्वी को शुद्ध करे और अपनी दुल्हन, चर्च को अपने साथ ले जाए।

2300 दिनों, जिसका अर्थ भविष्यवाणी के अनुसार 2300 वर्ष थे, के अंत को सही ढंग से गिनती करके, विलियम मिलर ने बताया कि ईसा किस वर्ष में पृथ्वी पर वापस आएगा। हालांकि, वह ईसा के आने का वर्ष सुझाने में बहुत हिचकिच था क्योंकि विलियम जानता था कि ईसा ने कहा था, *"परन्तु उस दिन और घंटे (के आने का) किसी को पता नहीं, नहीं स्वर्ग के दूतों को, परन्तु मेरे पिता को ही।" मत्ती 24:36*

हालांकि, विलियम मिलर के अनुयायियों ने इसे और आगे बढ़ाया और जटिल बाइबिल अध्ययन से एक ऐसी तिथि खोजी जिस दिन तीर्थस्थान शुद्ध होने वाला था। और इसलिए उन्होंने निष्कर्ष किया कि ईसा 22 अक्टूबर 1844 को पृथ्वी पर वापस आएगा। लेकिन मिलर अभी भी इस बारे में खुश नहीं था।

उनकी वर्ष और तिथि की गिनती सही थी लेकिन जिस घटना की उन्होंने भविष्यवाणी की गलत थी। तब तब मिलर और उनके अनुयायी महसूस को एहसास हुआ कि दानियल 8:14 का यह पद उस तीर्थस्थान को दर्शाता हैं जो स्वर्ग में हैं जो मनुष्य हाथों द्वारा नहीं बनाया गया हैं (इब्रानियों 8:1–2)। ईसा पृथ्वी पर नहीं आने वाला था, बल्कि जैसा पृथ्वी के महायाजी की तरह पवित्र स्थान से अत्यंत पवित्र स्थान में अपने खून और गुणों के साथ प्रवेश करने वाला था, वैसे ही मसीह पवित्र स्थान से अत्यंत पवित्र

स्थान में अपने खून और गुणों के साथ प्रवेश करने वाला था ताकि हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए। इस तरह स्वर्गीय तीर्थस्थान अंत में शुद्ध होने वाला था।

प्रिय पाठक, जैसे मैं यह पुस्तक लिखता हूँ और आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, ईसा हमारे पापों के प्रायश्चित कर रहा हैं। इसलिए, 22 अक्टूबर 1844 के बाद से दुनिया ईसा के अत्यंत पवित्र स्थान में उनके मंत्रालय के प्रचुर फलों का अनुभव कर रही हैं। इसी कारण, हमारे प्रभु ने अपने शेष को भविष्यवाणी की आत्मा को भविष्यवक्ता एलेन जी. व्हाइट को देकर उनकी गवाही प्रदान की हैं। एक ऐसी गवाही जो ईसा की पहचान, जीवन, अवतरण, और अतीत काल से अनंत काल तक की योजनाओं को ढंकती हैं। ताकि वे सच्चे विश्वास में स्थापित हो सकें और दूसरों को ईसा को वैसा जानने में मदद कर सकें। इसके साथ और भी कई अग्रणज जैसे उनके पति जेम्स व्हाइट, और मंत्रालय भाई जैसे जोसेफ बेट्स, जे.एन. एंड्रूज, हिराम एडसन, ए.टी. जोन्स, ई.जे वैगनर और बहुत से अधिक का प्रभु ने उपयोग किया था।

लेकिन ईसा हमारे साथ अपनी गवाही क्यों साझा कर रहा हैं? यह इसलिए हैं क्योंकि वह ईश्वर की प्रतिमा का चमक हैं। यदि हमें ईसा को जानते तो हमें उसके पिता को जानेंगे। पिता और पुत्र को जानना अनंत जीवन हैं (यूहन्ना 17:3)। यहाँ जानने का अर्थ पिता और उनके पुत्र के बारे में सीखने से कहीं गहरा हैं।

इसके अलावा, 22 अक्टूबर 1844 के बाद से, ईश्वर ने ईसा की गवाही के माध्यम से अपने आप को और अधिक पूरी तरह से प्रकट किया हैं, ताकि मनुष्य उसके बारे में जानें, **उसके पुत्र में प्रकट सत्य की रोशनी में उसका निर्णय करें,** और अंत में उसके शुद्ध, अपरिवर्तनीय प्रेम के लिए उसका सम्मान करें जो उनके रचयिता और पोषक के रूप में हैं। जिसका अर्थ हैं यह उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करता हैं। (प्रकाशितावाली 18:2-3)

इसलिए, 22 अक्टूबर 1844 उस पद से जुड़ता हैं जहाँ कहा गया हैं: "और मैं (यूहन्ना) ने स्वर्ग के बीच में एक अन्य दूत को उड़ते हुए देखा, जिसके पास **अनंत सुसमाचार** था, कि वह पृथ्वी पर रहने वालों को और हर जाति, और कुल, और ज़बान, और लोगों को सुसमाचार प्रचारे। और उसने ज़ोर से बड़बड़ आवाज में कहा, **ईश्वर का डरो, और उसको महिमा दो; क्योंकि उसके निर्णय का घंटा आया हैं:** और उसकी पूजा करो जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, और समुद्री, और जल के सोतों को बनाया। प्रकाशितावाली 14:6,7

लेकिन जब हम ईश्वर का निर्णय करना एक अमूर्त विचार प्रतीत होता हैं, तो यह बाइबिल लेखकों के लिए अपरिचित नहीं हैं। जब आप निम्नलिखित बाइबिल पदों को पढ़ें और **उचित ठहराया गया** या **निर्णय किए** गए शब्द पर एक पल रुकें, और सोचें कि ईश्वर को उचित ठहराया जाने की आवश्यकता क्यों हैं या बाइबल क्यों कहती हैं कि ईश्वर निर्णय किया जाएगा।

*"केवल तुझ से, तुझी ही के विरुद्ध पाप किया, और ते दर्शन में यह बुरा किया; कि तू बोलते समय में **उचित ठहराई**, और निर्णय करते समय में **निर्दोष** हो।" भजन 51:4*

*"ऐसा हो, बल्कि ईश्वर सच्चा हो, और सब मनुष्य झूठा; जैसा लिखा गया हैं (भजन 51:4), कि तू अपने वचनों में उचित ठहराईस, और जब तू निर्णय किया जाएगा तब **निर्दोष** (दोष से रहित) होगा।" रोमियों 3:4*

*"और सब लोगों ने जिन्होंने उसे सुना, और राजस्वियों ने ईश्वर को **उचित ठहराया**, यूहन्ना के बपतिस्मा से बपतिस्मा लेते हुए।" लूका 7:29*

*"और बिना विवाद के भक्तिमान का रहस्य बहुत बड़ा हैं: ईश्वर देह में प्रकट हुआ, आत्मा में **उचित ठहराया गया,** स्वर्गदूतों ने देखा, अज्ञवानियों को प्रचारा गया, संसार में विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर ले जाया गया।" 1 तिमुथियुस 3:16*

*"मनुष्य का पुत्र खाना और पीना आता हैं, और वे कहते हैं, देखो, एक भोजनी और दारू पीने, राजस्वियों और पापियों का मित्र। परन्तु ज्ञान अपने बच्चों के लिए **उचित** ठहराया गया।" मत्ती 11:19*

निर्णय करने और उचित ठहराया जाने में क्या अंतर हैं?

न्याय करना किसी व्यक्ति, कार्य, या स्थिति का मूल्यांकन, आलोचना, या उसके बारे में राय बनाना हैं, जब वह उनका न्याय कर रहा होता हैं।

न्यायसंगत ठहराना बचाव हैं: यह दर्शाता हैं कि कोई न्याय, कार्य, या निर्णय सही, निष्पक्ष, या उचित हैं। यह तब भी होता हैं जब किसी व्यक्ति के कार्य या निर्णय का न्याय किया जा चुका होता हैं।

हमें अनंत सुसमाचार को जानने, उसके पुत्र में प्रकट सत्य की रोशनी में ईश्वर को जानने, और उसका निर्णय करने के लिए बुलाया गए हैं, क्योंकि शैतान ने उसके बारे में बहुत से झूठ फैलाए हैं। जब हम उसके वास्तविक स्वभाव को जान पाते हैं, तब डरो (सम्मान करें) उसे और उसे महिमा दो (उसका चरित्र को प्रतिबिंबित करें या उसका व्यवस्थान रखें) जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, और समुद्री, और जल के सोतों को बनाया। (पिता और पुत्र) प्रकाशितावाली 14:6,7

जब हम जानते हैं कि ईश्वर प्रत्येक आत्मा के प्रकाश में हर आत्मा को उसके कर्मों के अनुसार निर्णय करेगा, तो उपरोक्त बाइबिल पद हमें बता रहे हैं कि ईश्वर भी मनुष्यों को उसके बारे में जानने, उसे निर्णय करने और जानने की अनुमति देता हैं। वह चाहता हैं कि हम उसे वैसा देखें जैसा वह हैं न कि शैतान उसे कैसा प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा था ताकि हम अपने स्वर्गीय पिता के शेष परिवार के परिवार में शामिल हो सकें।

विलियम मिलर और उनके अनुयायी वापस आते हैं।

मिलर और उनके अनुयायियों पर वापस आते हैं — क्योंकि उनकी समझ बातों तक नहीं पहुँच पाई, फिर भी यह आंदोलन मानवीय प्रतिभा का काम नहीं था। मनुष्य इस नाटक में कलाकार थे, लेकिन पूरा नाटक ईश्वर द्वारा निर्देशित था। प्रभु ने उन्हें गलती होने दिया ताकि वे अंत में स्वर्ग में क्या हो रहा हैं और दुनिया को उससे जागरू कर सकें।

इस अनुभव का प्रमाण जो भविष्यवाणी में इस तरह व्यक्त किया गया। यहाँ उल्लिखित छोटी पुस्तक दानियल की पुस्तक हैं जिसे पिता विलियम मिलर अध्ययन कर रहे थे। प्रेरित यूहन्ना के लिए, यह पहले से ही दिखाया गया था कि जो लोग (अध्ययन करते) इस पुस्तक को खाएंगे वे उसे अपने मुँह में मीठा पाएँगे, लेकिन उस पुस्तक को अपने पेट में कड़वा पाएँगे। यह सातवीं-दिनवारी चर्च के अग्रणजों का अनुभव था, जो भविष्यवाणी के अपने प्रारंभिक गलत समझ के कारण हुआ।

और मैं दूत के पास गया, और उससे कहा, मुझे वह छोटी पुस्तक दो। और उसने मुझसे कहा, उसे लो, और खा; यह तुम्हारे मुँह में मीठा होगी, परन्तु तुम्हारे पेट में कड़वी होगी। और मैंने दूत के हाथ से उस छोटी पुस्तक को लिया, और खाया; और वह मेरे मुँह में मीठा थी: और जैसे ही मैंने उसे खाया, मेरा पेट कड़वा था।" प्रकाशितावाली 10:9,10

यह आंदोलन किसी भी अन्य ईसाई आंदोलन से भिन्न था। इसने सांप्रदायिक रेखाओं, सामाजिक वर्गों, और महाद्वीपों को पार किया। किसान, प्रचारक, विद्वान, और मजदूर सभी एक स्वर में कहते थे, *"देखो, दूल्हा आता हैं।"*

लेकिन स्वर्ग की घड़ी धरती पृथ्वी की अपेक्षा से अलग थी। 22 अक्टूबर 1844, बीत गया—आकाश में आग नहीं, बल्कि धरती पर आँसूएँ क्योंकि ईसा उनके अपेक्षा के अनुसार नहीं आया। इतिहास इसे **महान निराशा** के रूप में याद करता हैं, लेकिन स्वर्ग इसे शेष के जन्म के रूप में याद करता हैं।

एलेन जी. व्हाइट ने बाद में लिखा: "1844 में समय का बीतना उत्पादनशील परिणामों लाया... इसने उन लोगों की परीक्षा की जो आगमन संदेश पर विश्वास करते थे।"—*महान विवाद*

जो ढीला गया वह विश्वास नहीं था, बल्कि गलत अपेक्षाएँ। जो रहा वह एक छोटा, खोजने वाला लोग था—घायल, अपमानित, नम्र, फिर भी धर्मग्रंथ को त्यागने के लिए तैयार नहीं था। ईश्वर ने अंत में उन्हें 22 अक्टूबर 1844 को ईसा के अत्यंत पवित्र स्थान में प्रवेश करने के बारे में अपना अंतिम कार्य को प्रकट किया।

उस शोधन आग से **सातवीं-दिनवारी आंदोलन** का जन्म हुआ। लेकिन यहाँ एक भारी सच्य हैं: **सभी जो नाम रखते हैं वे शेष नहीं हैं।**

शेष का नाम सांप्रदायिक लेबलों से परिभाषित नहीं होता, बल्कि आज्ञाकारी और जीवित विश्वास से। वे वे हैं—जो दृश्य संरचनाओं के भीतर और कभी-कभी बाहर से होते हैं—जो **ईश्वर के व्यवस्थान का पालन** करते हैं, उनके विश्राम का सम्मान करते हैं, और बहन बहन के माध्यम से चर्च को सौंपित भविष्यवाणी उपहार का सम्मान करते हैं।

भविष्यवाणी का उपहार पुनर्स्थापित।

मिलर और उनके अनुयायियों के दर्दन वाले वर्षों के अंधकार और निराशा के बाद, एक ऐसा समय आया जब कई लोगों को लगा कि भविष्यवाणी समाप्त हो गई हैं, और ईश्वर ने फिर से बोला।

लेकिन एक कमजोर नाबालिक लड़की—**एलेन जी. व्हाइट**—के माध्यम से स्वर्ग की चुप्पी तोड़ी। प्रभु ने उनके दर्शन और सपनों में उनसे लोगों से बात करना शुरू किया। उनके दर्शन और सपने ने धर्मग्रंथ को बदलना नहीं; वे बार-बार उसकी ओर ले जाते थे। बार-बार वह ईसा को उन्नी ऊँचा, ईश्वर के व्यवस्थान का उल्लेख करती थीं, और आने वाले छल से चेतावनी दी।

वह स्वयं गवाह करती थी: “लोगों को बाइबिल पर बहुत ध्यान नहीं दिया जाता, और प्रभु ने उन्हें एक कम प्रकाश दिया हैं कि वे पुरुषों और स्त्रियों को बड़े प्रकाश की ओर ले जाएँ।”—*रिव्यू हेराल्ड*

भविष्यवाणी की आत्मा किसी दूत को महिमान करने के लिए नहीं दी गई थी, बल्कि एक लोग को तैयार करने के लिए—चेतावनी देने, सुधारने, सांत्व देने, और बंदित संघर्ष में शेष का मार्गदर्शन करने के लिए।

इलिय्याह की आत्मा में एक लोग।

शेष का अस्तित्व केवल जीवन के लिए नहीं हैं। वे एक मिशन के लिए हैं।

ईसा के प्रथम आगमन से पहले, ऊँट बालों के बालों में से एक जंगली भविष्यवक्ता यर्दन नदी के किनारे खड़ा था। यहया बाप्तिस्मा लोकप्रिय नहीं था। वह राजाओं को चाप नहीं देता था या उनकी आत्मा को शांत करता था। उसका संदेश सरल और भेदनात्मक था: **"पश्चाताप करो, क्योंकि ईश्वर का राज्य निकट आया हैं"**

ईसा ने उसके बारे में कहा:

"भविष्यवक्ताओं और व्यवस्थान ने यूहन्ना तक प्रचार किया। और यदि तुम इसे ग्रहण करोगे, तो यही इलिय्याह हैं, जो आने वाला था।"—*मत्ती 11:13–14*

लेकिन मलाकी ने एक और इलिय्याह के आने की भविष्यवाणी की:

"देखो, मैं तुम्हारे पास इलिय्याह भविष्यवक्ता को भेजूँगा, प्रभु के उस भया और भयम दिन के पहले से पहले। और वह पिताओं के हृदयों को बच्चों के हृदयों में, और बच्चों के हृदयों में पिताओं के हृदयों में फेर देगा।"—*मलाकी 4:5–6*

जैसा, वे दुनिया को आज्ञाकारी के लिए बुलाते हैं—न्यायवादी नहीं, बल्कि वफादारी। वे उस युग को उठाते हैं जिसे लंबे गए थे, और एक ऐसी युग में भूमि को ईश्वर के व्यवस्थान का सम्मान करते हैं। वे ईसा के आने के मार्ग को तैयार करते हैं।

एलेन व्हाइट लिखती हैं: "इस युग में, स्वर्ग में बादलों में ईसा के द्वितीय आगमन से पहले, यूहन्ना के जैसा काम का ऐसा काम होना हैं।"—*युगों की अभिलाषा*

अजगर के क्रोध का निशाना।

सत्य हमेशा विरोधी पैदा करती हैं। शैतान का क्रोध बेफरहम नहीं हैं। प्रकाशितावाली स्पष्ट हैं—अजगर हर किसी के विरुद्ध युद्ध नहीं करता, विशेष रूप से उन शेष लोगों के विरुद्ध युद्ध करता हैं।

क्यों? क्योंकि शेष उसके अंतिम छल को उजागर देते हैं। वे नकली शनिवार को प्रकट करते हैं। वे ईसा के स्वर्गीय मंत्रालय की घोषणा का घोषणा करते हैं। वे झूठी पूजा को उन्मास करते हैं और लोगों को रचयिता के पास वापस लाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण, बाइबिल और एलेन जी. व्हाइट के लेखन के माध्यम से, वे दुनिया को ईश्वर का वास्तविक स्वभाव प्रस्तुत करते हैं।

एलेन जी. व्हाइट स्पष्ट करती हैं: "सत्य और भ्रम के बीच अंतिम संघर्ष केवल महान विवाद का अंतिम संघर्ष हैं, जो ईश्वर के व्यवस्थान के संबंध में लंबित विवाद हैं।"—*महान विवाद*

ईसा को नष्ट्र करने असमर्थ होने पर, शैतान अपनी क्रोध उन पर फेरता हैं।

याकूब के कष्ट का समय।

एक ऐसा क्षण आता हैं जब हर आत्मा को अकेले अकेली खड़ी रहना पड़े। शैतान ईश्वर के लोगों को नष्ट्र करने का अंतिम प्रयास करता हैं। धर्मग्रंथ इसे **याकूब के कष्ट का समय** कहती हैं:

"हाय! वह दिन बड़ा हैं, इतना कि उस जैसा हैं; यह यहाँ का समय हैं, यह याकूब के कष्ट का समय; परन्तु वह उसमें से छुटाया जाएगा।"—*यिर्मयाह 30:7*

शेष के लिए, यह दंड नहीं—बल्कि शुद्धि। इस समय तक, ईसा ने अत्यंत पवित्र स्थान में अपना मंत्रालय कार्य समाप्त कर लिया होगा। परीक्षा समाप्त हो गई होगी। कोई मध्यस्थ आत्मा के बीच मनुष्यता और निर्णय के बीच खड़ नहीं खड़ेगा। धमकियों से घिरा, धरती से दोषित, शेष याकूब की तरह एक बार यूहन्ना की तरह ईश्वर से लड़ता—क्षमा के लिए नहीं, बल्कि पक्की के लिए।

एलेन व्हाइट गंभीर सुंदरता के साथ लिखती हैं: "यद्यि ईश्वर के लोगों को ऐसे शत्रुओं से घिरे होंगे, जो उनके विनाश करने पर तुले हुए हैं, तब भी उनकी पीड़ा को जो वे भुगते हैं वह परसिक के डर का भय नहीं, यह एक यह डर हैं कि वे अपनी बुलाई और चुनाव निश्चित नहीं कर पाएँगे।"—*महान विवाद*

इन परीक्षाओं में, शेष ईश्वर के वचनों पर सबसे अंधकार रात में भी दृढ़ते रहते हैं।

ईश्वर की आवाज से छुटकारा गया।

और तब—जब आशा बुझ रही हो, जब मृत्यु समाप्त होती प्रतीत होती थी—**ईश्वर बोलता हैं।**

वही आवाज जो सीनाई पर गरजी थी, जिसने लाजारस को कब्र से बुलाया, जिसने तूफ़ान सागर को शांत किया, वह चुप्पी को तोड़ देगी। "संपन्न हुआ।" ईसा कहते हैं—*प्रकाशितावाली 16:17*

स्वर्ग खुलता हैं। पृथ्वी काँपती हैं। विश्वासी छुटकारे जाते हैं—न कि वे पूर्ण थे, बल्कि उन्होंने एक पूर्ण उद्धारक पर विश्वास किया।

एलेन व्हाइट घोषिता के साथ घोषित करती हैं: "ईश्वर के लोग तब ईश्वर की आवाज से छुटकारे जाते हैं, सुते हुए संतों को बुलाते हुए, और ईसा के आने के दिन और घंटे की घोषणा की घोषणा करते हैं।"
—प्रारंभिक लेखन

एक लोग जो मेमने का पीछा करता हैं। अंत में, कहानी वहीं जहाँ उसे हमेशा था जहाँ इसे हमेशा **—ख्रिस्त के साथ।** "ये वे हैं जो मेमने के साथ कहीं जहाँ वह जाता हैं।"—*प्रकाशितावाली 14:4*

शेष अपने बचने में घमान नहीं करते। वे कृपा का गीत गाते हैं। वे अपने मुकुट उस व्यक्ति के पाँव में रखते हैं जिसने उन्हें तब वे खुद न रख पाए।

और ब्रह्मांड के साथ मनुष्य अंत में समझता:

- ईश्वर न्यायी था।
- ईश्वर विश्वासी था।
- ईश्वर पर विश्वास करने योग्य था—*अंत तक*।

अध्याय 13 – महान विवाद का अंत

छह हज़ार वर्षों तक पृथ्वी विद्रोह के भार के नीचे कराह रही थी। हर आँसू, हर कब्र, हर फुसफुसाती प्रार्थना ने गवाही दी थी कि कुछ बुरी तरह गलत हो गया हैं। लेकिन अब, आखिरकार, यह कहानी जल्द ही अपने अंतिम पृष्ठ पर पहुँचने वाली हैं।

प्रकाशक यूहन्ना कहते हैं कि स्वर्ग ले जाए गए लोगों के बारे में: "और मैंने सिंहासन देखे, और वे उन पर बैठे, और उन्हें न्याय दिया गया: और मैंने उन आत्माओं को देखा जो यीशु की गवाही और परमेश्वर के वचन के लिए सिर कलम किए गए थे, और जिन्होंने न तो जानवर की पूजा की थी, न उसकी मूर्ति की, और न ही अपने माथों पर या हाथों में उसका निशान ग्रहण किया था; और वे जीवित रहे और ख्रिस्त के साथ एक हज़ार वर्ष तक राज किया। परन्तु मरे हुओं में से बाकी लोग उस समय तक फिर जीवित नहीं हुए, जब तक एक हज़ार वर्ष पूरे न हो गए। यह पहला पुनरुत्थान हैं। धन्य और पवित्र वह हैं जिसका हिस्सा इस पहले पुनरुत्थान में हैं: उन पर दूसरी मृत्यु का कोई अधिकार नहीं, परन्तु वे परमेश्वर और ख्रिस्त के याजक होंगे, और उसके साथ एक हज़ार वर्ष तक राज करेंगे।" प्रकाश 20:4-6

छुड़ाए गए लोग—जो पाप से टूटे हुए थे, दुख से दागदार थे, भय से परेशान थे—तब परमेश्वर की उपस्थिति में अमरता के वस्त्र पहने खड़े होंगे। एक हज़ार वर्षों के लिए, परमेश्वर के बच्चे स्वर्ग में ख्रिस्त के साथ जीवित रहेंगे और राज करेंगे। यह शक्ति का राज नहीं, बल्कि समझ का राज हैं।

याद की पुस्तकें खुलेंगी। इसलिए नहीं कि परमेश्वर को अपने बारे में स्पष्ट करने की आवश्यकता हैं—बल्कि इसलिए क्योंकि प्रेम हमेशा तर्क करता हैं और विश्वास के लिए आमंत्रित करता हैं। बचाए गए लोगों को मानव इतिहास के रिकॉर्ड, उन छिपी हुई अध्यायों को दिखाया जाएगा जिन पर उन्होंने पृथ्वी पर सवाल उठाए थे, उन विकल्पों को जिन्होंने उन्हें पृथ्वी पर उलझन में डाल दिया था।

- यह बच्चा इतनी कम उम्र में क्यों खो गया?
- यह प्रार्थना क्यों बिना जवाब की लग रही थी?
- यह या वह आत्मा स्वर्ग से क्यों गायब थी?

और एक-एक करके, हर सवाल सत्य की रोशनी में घुल गया। बाइबल कहती हैं *"उन्हें न्याय दिया गया।"* (प्रकाश 20:4)

यह दोषारोपण के लिए न्याय नहीं हैं—बल्कि पुष्टि के लिए हैं। छुड़ाए गए लोग देखेंगे कि परमेश्वर **निष्पक्ष, धैर्यवान, और असीम रूप से करुणामय** रहे हैं।

इस बीच, पृथ्वी उजाड़ पड़ी रही, और शैतान अतल गड़हरे में।

"और उसने (परमेश्वर ने) अजगर को पकड़ा... और उसे एक हज़ार वर्षों के लिए बाँध दिया, और उसे अतल गड़हरे में फेंक दिया।" प्रकाश 20:2–3

"अतल गड़हरा" आग की जगह नहीं थी—बल्कि पूर्ण उजाड़न की जगह थी। यहाँ इस्तेमाल किया गया वही यूनानी शब्द पृथ्वी का वर्णन करता हैं जैसा वह सृष्टि से पहले थी: *बिना रूप और शून्य* (उत्पत्ति 1:2)।

शैतान बाँधा जाएगा—लोहे की जंजीरों से नहीं, बल्कि **परिस्थितियों** से। उसके पास धोखा देने के लिए कोई राष्ट्र नहीं होगा। भ्रष्ट करने के लिए कोई दिल नहीं होगा। परीक्षण के लिए कोई मन नहीं होगा क्योंकि पृथ्वी पर एक भी आत्मा जीवित नहीं होगी।

एलेन जी. व्हाइट लिखती हैं कि इस समय के दौरान, शैतान को अपने द्वारा किए गए विनाश पर विचार करने के लिए छोड़ दिया गया था, एक टूटी हुई दुनिया में उसके झूठ के परिणामों को देखने के लिए (*महान विवाद,* अध्याय 41)।
पृथ्वी स्वयं उसके खिलाफ गवाही दे रही थी।

अंतिम न्याय

एक हज़ार वर्षों के अंत में, नया यरूशलेम उतरेगा। पवित्र नगरी, परमेश्वर की महिमा से चमकदार, पृथ्वी पर विश्राम करने के लिए आएगी।

एक हज़ार वर्षों के अंत में शैतान को भी उसके अतल कारागार से रिहा कर दिया जाएगा (प्रकाश 20:7)

यह रिहाई शैतान के प्रति दया का कार्य नहीं होगा, बल्कि सत्य को उजागर करने के लिए एक आवश्यक कार्य होगा। दुष्ट लोग मृतकों में से जीवित कर दिए जाएँगे, और एक बार फिर से विकल्प बनाने में सक्षम मन के साथ, शैतान को पाएगा कि वह अब परिस्थितियों से बँधा नहीं हैं। तुरंत, धोखा देने का उसका प्राचीन काम फिर से शुरू हो जाएगा।

“और वह धरती के चारों कोनों में रहने वाले जातियों को धोखा देने के लिए निकलेगा, गोग और मगोग को।”(प्रकाश 20:8)

वह वही महत्वाकांक्षा भड़काएगा जिसने एक बार उसे स्वर्ग में विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया था। पुनर्जीवित दुष्ट लोगों के सामने, वह शक्ति का एक नेता, अन्याय का एक शिकार के रूप में प्रकट होगा, यह दावा करते हुए कि परमेश्वर ने उनसे उनका वैध विरासा छीन लिया हैं। वह तर्क देगा कि पवित्र नगरी उनके श्रम से बनाई गई थी, फिर भी उसे दैवी निरंकुशता द्वारा उनसे इनकार कर दिया गया था।

एलेन जी. व्हाइट लिखती हैं कि शैतान उन्हें यह विश्वास दिलाएगा कि वे बलपूर्वक नगरी पर कब्ज़ा कर सकते हैं—कि यदि वे एकजुट होते हैं तो विजय संभव हैं (महान विवाद, अध्याय 42)।

और वे उस पर विश्वास करेंगे। खोए हुए लोगों की असंख्य भीड़—राजाओं, जनरलों, विद्वानों, योद्धाओं—युद्ध के लिए खुद को व्यवस्थित करेंगे। हथियार बनाए जाएँगे। रणनीति बनाई जाएगी। विद्रोह की भावना, जो लंबे समय से सोई हुई थी, फिर से जलेगी।

तब अंतिम मार्च शुरू होगा।

“और वे पृथ्वी की चौड़ाई पर चढ़ गए, और संतों के शिविर को और प्रिय नगरी को घेर लिया: और परमेश्वर की ओर स्वर्ग से आग नीचे आई, और उन्हें भक्ष कर गई।” प्रकाश 20:9

यदि हम बाइबिल का सतही अध्ययन करते हैं तो हम आसानी से मान सकते हैं कि परमेश्वर से आने वाली यह आग एक साहचित आग हैं। हालाँकि, ऐसा नहीं हैं। निश्चित रूप से न्याय के अंत के समय गंधक के साथ जलने वाली आग की एक झील होगी जो साहचित आग होगी। हालाँकि, यह साहचित आग परमेश्वर से नहीं आती हैं। यह पृथ्वी की पपड़ी के नीचे से ज्वालामुखीय शय्याओं से आती हैं जो वर्तमान में पृथ्वी के नीचे मौजूद हैं।

लेकिन यह ज्वालामुखीय शय्याएँ पृथ्वी के नीचे कहाँ से आईं? एलेन जी व्हाइट, हमें बताती हैं कि वे नूह के बाढ़ के बाद पृथ्वी के नीचे बनने लगी थीं।

“इस समय विशाल जंगल (धरती में) दफन हो गए थे। इनके बाद से ये कोयले में बदल गए हैं, जो अब मौजूद विस्तृत कोयले की शय्याएँ बनाते हैं, और साथ ही बड़ी मात्रा में तेल भी देते हैं। कोयला और तेल अक्सर पृथ्वी की सतह के नीचे जलते और जलते हैं। इस प्रकार चट्टानें गर्म होती हैं, चूना पत्थर जलता हैं, और लोहे का अयस्क पिघल जाता हैं। पानी की चूने पर क्रिया तीव्र गर्मी में और भी भड़काला पैदा करती हैं, और भूकंप, ज्वालामुखी, और आग बबूला उत्पन्न करती हैं। जैसे ही आग और पानी चट्टानों और अयस्क की परतों के संपर्क में आते हैं, भूमि के नीचे भारी विस्फोट होते हैं, जो दबे हुए गर्जने की तरह सुनाई देते हैं। हवा गर्म और दम घोंटू होती हैं। ज्वालामुखी विस्फोट होते हैं; और ये अक्सर गर्म तत्वों को निकालने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं, पृथ्वी स्वयं थरथराती हैं...” — पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता 108-109.

समान ज्वालामुखीय शय्याएँ जुड़वां शहरों सदोम और अमोरा के विनाश के दौरान फटी थीं (उत्पत्ति 14:10)। वही ज्वालामुखीय शय्याएँ भंडार में रखी गई हैं, दुष्ट पुरुषों के न्याय और विनाश के दिन के लिए आग के लिए आरक्षित। (2 पतरस 3:6, 7)

हालाँकि, इस साहचित आग के पृथ्वी के नीचे से फटने और गंधक की आग की झील बनाने से पहले, आग का एक और रूप हर इंसान को नष्ट कर देगा।

यह वह आग हैं जो परमेश्वर से आती हैं और दुष्टों को भक्ष करती हैं। लेकिन यह शाब्दिक रूप से विषय को नहीं जलाती हैं। हालाँकि, यह साहचित आग से कहीं अधिक पीड़ा पहुँचाती हैं।

इस आग की प्रकृति और यह कैसे दुष्टों को नष्ट करती हैं, इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, हमें उस आग का अध्ययन करना होगा जिसे मूसा ने अपने ससुर के झुंड की देखभाल करते समय पहाड़ पर देखा था।

और प्रभु का दूत झाड़ी के बीच से आग की लपट में उसके सामने प्रकट हुआ: और उसने देखा, और देखा, वह झाड़ी आग से जल रही थी, और **झाड़ी भस्म नहीं हुई**। - निर्गमन 3:2

मूसा का ध्यान इस चमत्कारिक जलती झाड़ी पर आकर्षित करने के अलावा, परमेश्वर मूसा के सामने खुद को प्रकट कर रहा था। इस आग ने न तो झाड़ी को जलाया और न ही किसी भी तरह से मूसा को चोट पहुँचाई। यह परमेश्वर का मूसा के सामने अपने आप को प्रस्तुत करने का तरीका था — एक निर्दोषी परमेश्वर। यह मूसा को परमेश्वर के वास्तविक प्रेमपूर्ण चरित्र को प्रकट करने के लिए एक नाटकीय दृष्टांत था। यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर नष्ट नहीं करता।

लेकिन आप कह सकते हैं, तब निम्नलिखित बाइबिल की आयत (प्रकाश 20:9) क्यों कहती हैं कि *"आग परमेश्वर की ओर स्वर्ग से नीचे आई, और* ***उन्हें भक्ष कर गई****"?*

वे इसलिए भक्ष कर दिए गए हैं, क्योंकि जैसा कि बहन एलेन जी व्हाइट कहती हैं, "विद्रोह के जीवन के द्वारा, शैतान और सभी जो उसके साथ मिलते हैं, खुद को परमेश्वर के साथ इतना बेमेल कर लेते हैं कि उनकी उपस्थिति उनके लिए एक भक्षक आग हैं।"(जीसी, पृ. 673)

परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में, दुष्टों के सभी पाप एक साथ उनके दिल की सतह पर आ जाएँगे। यह विशेष रूप से केवल खोए हुओं के साथ ही होगा क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की कृपा से अपने पापों पर काबू नहीं पाया हैं और उनसे निपटा नहीं हैं। (निर्गमन 24:17, इब्रानियों 10:27,12:29)

जैसे ही दुष्ट इस शहर को लेने के लिए बढ़ते हैं, शहर की दीवारों के ऊपर, ख्रिस्त प्रकट होंगे—एक पीड़ित उद्धारकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि राजा और न्यायाधीश के रूप में। किसी भी हमले के शुरू होने से पहले, उनकी महिमा जो दुष्टों के लिए एक भक्षक आग की तरह हैं, संघर्ष को रोक देगी। अचानक दृश्य बदल जाएगा और दुष्ट परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े हो जाएँगे।

बाइबल अगले दृश्य का वर्णन इस तरह करती हैं:" और मैंने एक बड़ा सफेद सिंहासन देखा, और उस पर जो बैठा था, उसके चेहरे से पृथ्वी और स्वर्ग भाग खड़े हुए; और उनके लिए कोई स्थान नहीं मिला। और मैंने मरे हुओं को, छोटे और बड़े को, परमेश्वर के सामने खड़े देखा; और पुस्तकें खुलीं: और दूसरी पुस्तक खुली, जो जीवन की पुस्तक हैं: और मरे हुए उन बातों के अनुसार न्याय किए गए, जो उन पुस्तकों में लिखी थीं, उनके कर्मों के अनुसार।" प्रकाश 20:11, 12

जैसे ही रिकॉर्ड की पुस्तकें खुलती हैं, और यीशु की आँखें दुष्टों पर पड़ती हैं, वे अपने द्वारा किए गए हर पाप से जागरूक हो जाते हैं। वे देखते हैं कि उनके कदम कहाँ पवित्रता और पवित्रता के मार्ग से भटक गए, अहंकार और विद्रोह ने उन्हें परमेश्वर के नियम के उल्लंघन में कितनी दूर तक ले जाया। वे लुभावने प्रलोभन जिन्हें उन्होंने पाप में आत्मसात करके प्रोत्साहित किया, वर्ग दिए गए आशीर्वाद, परमेश्वर के दूतों की निंदा की, चेतावनियों को अस्वीकार किया, करुणा की लहरें जिन्हें हठी, अनुतापी दिल द्वारा वापस धकेल दिया गया—ये सभी ऐसे लगते हैं जैसे आग के अक्षरों में लिखे गए हों। {जीसी 666.2}

छुटकारे का पैनोरमिक रिकॉर्ड उन सभी की आँखों के सामने प्रकट होगा। क्रूस सबके सामने उठाया जाएगा। करुणा का हर कार्य, हर अस्वीकृत अपील, परमेश्वर द्वारा उनके प्रति किया गया प्रेम का हर धैर्यवान प्रयास खोए हुओं को दिखाया जाएगा।

एलेन जी. व्हाइट इस क्षण का वर्णन उस समय के रूप में करती हैं जब संपूर्ण ब्रह्मांड परमेश्वर की न्यायपूर्णता देखेगा और दुष्ट अपने दंड की धार्मिकता स्वीकार करेंगे (*महान विवाद,* अध्याय 42)।

शैतान के आरोप पतन हो जाएँगे। उसके अनुयायी उसे वैसा देखेंगे जैसा वह वास्तव में हैं—उनके विनाश का वास्तुकार। घृणा भीतर की ओर मुड़ जाएगी। विद्रोह की एकता टूट जाएगी।

इसके बाद, कोई भी परमेश्वर पर आरोप नहीं लगाएगा। यहाँ तक कि शैतान के पास कोई बचाव नहीं होगा। वास्तव में "*हर घुटना झुकेगी...और हर जीभ स्वीकार करेगी कि यीशु मसीह प्रभु हैं।*" (फिलिप्पियों 2:10–11)

लेकिन यह दृश्य आग के शब्दों के साथ क्यों चित्रित किया गया हैं **जो भक्ष करती** हैं? इसका कारण यह हैं कि यह वास्तव में मानवीय आत्माओं द्वारा अनुभव किया जाने वाला सबसे दर्दनाक अनुभव होगा।

खोए हुए लोग एक-एक करके उन सभी पापों को देखेंगे जिन्होंने उन्हें हमेशा के लिए परमेश्वर से अलग कर दिया हैं। तब वे यह भी जानेंगे कि उनके जीवन ने लोगों और जानवरों को, जिन्हें वे पृथ्वी पर जानते थे और नहीं जानते थे, कितना दर्द और पीड़ा पहुँचाया हैं।

वे अपने जीवन को वैसा देखेंगे जैसा परमेश्वर ने देखा था। वे उस करुणा को देखेंगे जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था, उस आत्मा को जिसे उन्होंने चुप करा दिया था, उस प्रेम को जिसे वे तुच्छ समझते थे। दिल पछतावे से भर जाएगा लेकिन उनके लिए पश्चात्ताप संभव नहीं होगा।

यीशु कहते हैं कि कुछ लोग न्याय में दूसरों की तुलना में अधिक पीड़ित होंगे।

"न्याय के दिन त्यूर और सीदोन के लिए तुमसे अधिक सहनीय होगा...न्याय के दिन सदोम की भूमि के लिए तुमसे अधिक सहनीय होगा।" मत्ती 11:20–24

इस विभिन्न स्तरों के कष्ट के कारण यीशु हमें इस तरह देते हैं: "वह दास जो अपने मालिक की इच्छा जानता था, और जिसने अपने आप को तैयार नहीं किया या उसकी इच्छा के अनुसार नहीं किया, वह कई कोड़ों से पिटाई खाएगा। लेकिन जो नहीं जानता था, फिर भी वह काम किया जिसके लिए कोड़े पड़ते हैं, वह कुछ कोड़ों से पिटाई खाएगा। क्योंकि जिस को बहुत दिया गया हैं, उससे बहुत माँगा जाएगा।" लूका 12:47–48

यीशु यहाँ दृष्टांतों में बात कर रहे हैं। इसका अर्थ हैं कि परमेश्वर हमें शाब्दिक रूप से नहीं पीटेगा। बल्कि, मनुष्य परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में उनके ज्ञान के आधार पर कष्ट झेलेंगे। परमेश्वर से आने वाली इस आग में सारा कष्ट, स्पष्ट रूप से एक बहुत बुरा मानसिक तकलीफ जैसा लगता हैं।

यीशु कहते हैं "और मैं तुमसे कहता हूँ, कि बहुत से पूर्व और पश्चिम से आएँगे, और अब्राहाम, इसहाक, और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में भोजन करेंगे। परन्तु राज्य के बच्चे बाहरी अंधकार में फेंक दिए जाएँगे: वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। मत्ती 8:11,12

तो स्पष्ट रूप से परमेश्वर से आने वाली वह आग जो दुष्टों को भक्ष करती हैं, वह वह आग नहीं हैं जिसके बारे में हम सोचते हैं और न ही वे दुष्ट जो परमेश्वर को नहीं जानते थे, सबसे अधिक कष्ट झेलेंगे। वास्तव में, इसका उल्टा सच हैं।

तो हम यह सुरक्षित रूप से कह सकते हैं कि वे जो कष्ट अनुभव करते हैं वह सीधे तौर पर परमेश्वर से नहीं हैं। बल्कि यह उन पापों का दर्द हैं जिसका कारण वे बने हैं, जिसे अब तक परमेश्वर सहन कर रहा था। लेकिन न्याय के दौरान इन पापों का बोझ उन पर न्यायपूर्वक रूप से रख दिया जाएगा, उन्हें यह दिखाकर कि उन्होंने क्या बोया हैं। उनके पापपूर्ण विकल्पों, कार्यों, और अनंत जीवन की हानि का पूरा प्रकटीकरण वही हैं जो उन्हें असीम पीड़ा पहुँचाएगा।

मुझे विश्वास हैं कि वे सभी इस अंतिम कष्ट में कुछ बहुत तीव्र मिश्रित भावनाओं, विश्वासों और इच्छाओं से गुजरेंगे। वे हमेशा जीने की इच्छा करेंगे क्योंकि यह वह मूल सिद्धांत था जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के दिल में रखा था। लेकिन दूसरी ओर, पाप के बोझ और अनंत पिता से अलगाव के कारण तकलीफ उन्हें जल्दी मरने की इच्छा करेगी।

प्रभु कहते हैं, "जहाँ भी मैं उन्हें निर्वासित करूँगा, इस दुष्ट राष्ट्र के सभी बचे हुए लोग मृत्यु को जीवन से बेहतर समझेंगे।" यिर्मयाह 8:3

परमेश्वर के न्याय के अधीन जीवन उनके लिए अस्तित्वहीनता से भी बदतर हैं क्योंकि यह उन्हें सत्य का सामना करने के लिए मजबूर करता हैं जो उनकी प्रकृति और जीवन के खिलाफ हैं।

लेकिन जल्दी या देर में उनकी मरने की इच्छा पूरी कर दी जाएगी। कुछ क्षण भर के लिए कष्ट झेलेंगे, जबकि अन्य कई दिनों तक कष्ट झेलेंगे। सभी अपने कर्मों के अनुसार दंडित होंगे। सभी अपने उचित अंत का सामना करेंगे।

धार्मिक लोगों के पापों को शैतान पर स्थानांतरित कर दिए जाने के कारण, वह न केवल अपने विद्रोह के लिए, बल्कि उन सभी पापों के लिए भी कष्ट झेलेगा जिन्हें उसने परमेश्वर के लोगों को करवाने के लिए प्रेरित किया था। उसकी सजा उन लोगों की तुलना में कहीं अधिक होगी जिन्हें उसने धोखा दिया था। जब सभी जो उसके छल के कारण गिर गए, मर जाएँगे, तब भी वह जीवित रहेगा और कष्ट झेलेगा। शुद्ध करने वाली लपटों में दुष्ट आखिरकार नष्ट हो जाते हैं, जड़ और डाल तक—शैतान जड़, उसके अनुयायी डाल। नियम की पूरी सजा दी गई हैं; न्याय की मांगें पूरी हो गई हैं; और स्वर्ग और पृथ्वी, देखकर, यहोवा की धार्मिकता की घोषणा करते हैं। {जीसी. 173.1}

दिलचस्प बात यह हैं कि परमेश्वर हमें बताता हैं कि वह शैतान को कैसे नष्ट करेगा।

“तेरे बहुत से पापों और बेईमान व्यापार के कारण तूने अपने पवित्र स्थानों को अपवित्र किया। इसलिए मैंने तेरे अंदर से आग निकाली, और उसने तुझे भस्म कर दिया, और मैंने तुझे ज़मीन पर राख दिया...” यहेजकेल 28:18

बाइबिल शैतान के पतन को एक आग के रूप में चित्रित करती हैं जो अंदर से आती हैं, जो साहचित जलने के बजाय पाप के आत्म-विनाशक स्वभाव का प्रतीक हैं। उसका अहंकार और विद्रोह एक ऐसी प्रक्रिया शुरू करता हैं जो अनिवार्य रूप से उसे निगल जाती हैं, यह दिखाता हैं कि बुराई में अपने विनाश के बीज होते हैं। जैसा कि याकूब 1:15 समझाता हैं, “तब, जब इच्छा गर्भवती हो जाती हैं, तो वह पाप को जन्म देती हैं; और पाप, जब पूरी तरह बड़ा हो जाता हैं, तो मृत्यु को जन्म देता हैं,” और नीतिवचन 16:18 चेतावनी देता हैं, “अहंकार विनाश से पहले आता हैं, और घमंडी स्वभाव गिरने से पहले।” ये आयतें एक संगत बाइबिली सत्य का प्रकाश करती हैं: परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह खुद को बनाए नहीं रख सकता। परमेश्वर के अंतिम न्याय से पहले भी, शैतान का अपना भ्रष्ट उसके पतन का कारण बनता हैं, यह दर्शाता हैं कि पाप के परिणाम आंतरिक भी हैं और अनिवार्य भी।

इन सब में शैतान सबसे अधिक कष्ट झेलेगा। *“पाप का वेतन मृत्यु हैं।”* (रोमियों 6:23) इसलिए, हर दुष्ट व्यक्ति, झूठे भविष्यवक्ता, देवदूतीय प्राणी, जानवर, और शैतान अपने जीवन के अंत पर आएँगे। वे परमेश्वर की महिमा से भस्म हो जाएँगे जो दुष्टों के लिए भक्षक आग हैं। यह दुष्टों का अंत होगा, यही वे कैसे मरते हैं।

अंत में दुष्ट मृतकों के शवों से पृथ्वी को शुद्ध करने के लिए प्रभु ज्वालामुखीय शय्या को फटने और पृथ्वी के नीचे से फूटने की अनुमति देगा, गंधक के साथ आग की झील बनाकर।

और वह शैतान जिसने उन्हें धोखा दिया था, गंधक और आग की झील में फेंक दिया गया, जहाँ वह जानवर और झूठा भविष्यवक्ता हैं, और वह दिन रात युगों युगों तक कष्ट पाएगा। प्रकाश 20:10

और **मृत्यु और नरक** भी गंधक और आग की झील में फेंक दिए गए। यह दूसरी मृत्यु हैं। और जो कोई भी जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं पाया गया, वह गंधक और आग की झील में फेंक दिया गया प्रकाश 20:14,15

जब हम प्रकाश की पुस्तक को पढ़ते हैं तो हमें ऐसा लग सकता हैं कि परमेश्वर दुष्टों को आग की झील में एक बहुत नियंत्रित तरीके से यातना देकर दंडित करेगा। लेकिन यह सही समझ नहीं हैं। जब हम प्रकाश की पुस्तक में आग की झील के बारे में पढ़ते हैं, तो हमें यह समझने की आवश्यकता हैं कि बाइबल जितना प्रकट करती हैं, यह आग कहाँ से आएगी। प्रकाश की पुस्तक के लेखक यूहन्ना भी ***"आग की झील"*** शब्दों का प्रतीकात्मक रूप से उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए वह उपरोक्त आयत में कहते हैं ***"मृत्यु और नरक आग की झील में फेंक दिए गए"।*** इस आयत को किसी और तरीके से समझना असंभव हैं जब तक हम इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते कि इसे प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त किया गया हैं।

हालाँकि, यह निष्कर्ष निकालना संभव हैं कि दुष्ट और शैतान और उसके अनुयायी न्याय के दौरान भक्षक आग की तरह काम करने वाली परमेश्वर की महिमा में पीड़ा सहते हुए मरेंगे। लेकिन जब वे मर जाएँगे, तो उनके शव आग की झील में जलेंगे और भौतिक रूप से पृथ्वी से नष्ट हो जाएँगे।

यह इन दो कारणों से सही हैं:

1. क्रूस पर यीशु के कष्ट सही ढंग से प्रकट करते हैं कि एक पापी को न्याय कैसे दिया जाएगा और उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा। जब यीशु क्रूस पर थे, तो दुनिया के पापों के बोझ के कारण उन्हें असीम मानसिक तकलीफ हुई। वास्तव में बाइबिल हमें बताती हैं कि उनका पसीना खून में बदल गया। उस स्थिति में उन्होंने वह अलगाव महसूस किया जो पाप के कारण उनके और पिता के बीच था। वहीं उन्होंने चिल्लाया "पिता तूने मुझे क्यों त्याग दिया?" यह ठीक वही हैं जैसा हर पापी के साथ न्याय में व्यवहार किया जाना चाहिए। यह वही हैं जो न्याय में होगा।

2. हम जानते हैं कि दुष्ट लोगों को आग की झील द्वारा एक नियंत्रित तरीके से यातना नहीं दी जाएगी और न ही आग हमेशा के लिए जलेगी, क्योंकि यह हमारे परमेश्वर का चरित्र नहीं हैं।

परमेश्वर कहते हैं, *"क्या मैं दुष्ट की मृत्यु में कोई आनंद लेता हूँ? सर्वोच्च प्रभु घोषणा करते हैं। क्या यह बेहतर नहीं हैं कि जब वे अपने मार्गों से फिरते हैं और जीते हैं?"* - यहेजकेल 18:23

"मैं दुष्ट की मृत्यु में कोई आनंद नहीं लेता, बल्कि इस बात में प्रसन्न होता हूँ कि वे अपने मार्गों से फिरें और जीएँ।" यहेजकेल 33:11

ये आयतें दर्शाती हैं कि परमेश्वर की इच्छा पश्चात्ताप और जीवन हैं, न कि लंबी पीड़ा। अंतिम न्याय की कोई भी व्याख्या को इस स्पष्ट रूप से व्यक्त किए गए उनके स्वभाव के पहलू के साथ मेल खाना चाहिए।

इस तरह या उस तरह, "शैतान, जड़, डाल, और अनुयायी, नष्ट हो जाएँगे।" (महान विवाद, अध्याय 42)
पाप का लेखक इसका सबसे बड़ा शिकार बन जाएगा।

ब्रह्मांड देखेगा—देवदूत और अपतित दुनियाँ अंत तक देखती रहेंगी। और तब वह वादा आएगा जो अनंतकाल तक गूंजता रहेगा: *"फिर कभी कोई विपत्ति उठेगी नहीं।"* (नहूम 1:9)

- कभी भी संदेह किसी के मन को अंधकार में नहीं डालेगा।
- कभी भी कोई आँसू नहीं गिरेगा।
- कभी भी प्रेम पर सवाल नहीं उठाया जाएगा।

ख्रिस्त के हाथों में निशान हमेशा गवाही देंगे—विद्रोह की नहीं—बल्कि छुटकारे की।

आखिरकार, विवाद समाप्त हो गया। इसलिए नहीं कि परमेश्वर ने अपने शत्रुओं पर शक्ति प्रयोग की—बल्कि क्योंकि सत्य का प्रकाश हो गया था।

एलेन जी. व्हाइट *महान विवाद* को उन शब्दों के साथ बंद करती हैं जो एक लंबे, व्यथित सिंफनी के अंतिम तार जैसी महसूस होती हैं:

"महान विवाद समाप्त हो गया हैं। पाप और पापी अब नहीं हैं... सबसे छोटे परमाणु से लेकर सबसे बड़े संसार तक, सभी चीजें, जीवित और अजीवित, घोषणा करती हैं कि परमेश्वर प्रेम हैं।"

और ब्रह्मांड ने प्रतिक्रिया की—भय से नहीं—बल्कि आनंद से।

"और परमेश्वर उनकी आँखों से सभी आँसू पोंछ देगा; और न तो मृत्यु होगी, न दुःख, न रोना।" (प्रकाश 21:4)

शैतान का विनाश का काम हमेशा के लिए समाप्त हो गया। छह हज़ार वर्षों तक उसने अपनी इच्छा का पालन किया, पृथ्वी को वैभव से भर दिया और पूरे ब्रह्मांड में दुःख का कारण बना। सारी सृष्टि पीड़ा में कराह रही थी और पीड़ा में प्रसव कर रही थी। अब परमेश्वर के प्राणी उसकी उपस्थिति और प्रलोभनों से हमेशा के लिए मुक्त हो गए हैं। "सारी पृथ्वी विश्राम में हैं, और शांत हैं: वे [धार्मिक] गाना गाने लगे।" यशायाह 14:7. और प्रशंसा और विजय की एक जयघोष संपूर्ण वफादार ब्रह्मांड से ऊपर उठती हैं। "एक बड़ी भीड़ की आवाज," "जैसे बहुत से जल की आवाज, और जैसे बहुत बड़े गर्जन की आवाज," सुनाई देती हैं, कहते हुए: "हल्लेलूयाह: क्योंकि प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज करता हैं।" प्रकाश 19:6 {जीसी 673.2}.

अध्याय 14 – फिर से शांतिपूर्ण ब्रह्मांड

दुष्टों के न्याय के बाद, एक ऐसा दिन आएगा जबे शांति पूरे ब्रह्मांड को भर देगी। यह कोई खाली चुप्पी नहीं होगी, बल्कि एक गहरी और आनंददायक शांति - वह तरह की जो तब ईश्वर के सभी वादों के अंत में सही हो जाएँ। पाप, पीड़ा, और विद्रोह हमेशा के लिए समाप्त हो जाएँगे।

प्रेरित यूहन्ना हमें बताते हैं कि उन्होंने क्या देखा: "मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी: क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी चली गई।" प्रकाशितावाली 21:1

भटके हुए लोगों को नष्ट करने वाली अग्नि की झील पृथ्वी को भी शुद्ध करेगी। शाप का हर निशान मिट जाएगा। पाप के भयानक परिणामों को रोकने के लिए कोई अनंत जलती नरक नहीं रखा जाएगा।

यूहन्ना कहते हैं, "और मृत्यु और नरक को अग्नि की झील में फेंक दिया गया। यह दूसरा मृत्यु हैं।" प्रकाशितावाली 20:14

ऐसा इसलिए हैं कि शैतान मृत्यु और नरक का रचयिता था। उसके अंत के साथ, मृत्यु और नरक की अवधारणा भी प्रतीकात्मक रूप से अग्नि की झील में नष्ट हो जाती हैं। पुरानी दुनिया का कुछ भी नहीं रहेगा जो डर, दुःख, या पीड़ा लाए। ब्रह्मांड शुद्ध, सुरक्षित, और शांतिपूर्ण रहेगा।

पाप की एकमात्र याद रहेगी। ईसा, हमारे उद्धारक, हमेशा अपने बलिदान के निशानों को धारण करेंगे। उसके हाथों, पैरों, पार्श्व, और माथे के घाव पाप की भयानक कीमत के एकमात्र निशान होंगे। भविष्यवक्ता वर्णन करते हैं कि मसीहा महिमा में कैसे दिखाई देंगे:
"उसके पार्श्व से चमकीली किरणें निकलीं: और उसकी शक्ति का छिपाव था।" (हबक्कूक 3:4, हाशिय)

उस भेदी हुए पार्श्व से एक बार वह रक्त बहा जिसने मनुष्य को ईश्वर के साथ मिला दिया था। घाव उसकी सर्वोच्च इज्जत होंगे। सारे अनंत काल तक, वे ब्रह्मांड को उसके प्रेम, उसके न्याय, और उद्धार करने की शक्ति की याद दिलाएँगे।

सामंजस्य पुनर्स्थापित होगी।

ईश्वर के पुनर्स्थापन का वादा पूरा होगा: "हे ढांठ की टुकड़ी, जियोन की बेटी का किला, तुम तक आएगा, यहाँ तक कि पहला अधिकार।" (मीका 4:8)

जब से आदम और हव्वा को एडेन से निकाला गया था, तब से ईश्वर के वफादार लोगों ने इस क्षण का इंतजार किया हैं - खरीदी गई संपत्ति का छुटकारे का समय (इफिसियों 1:14)। पृथ्वी, जो मनुष्य को दी गई थी और फिर पाप के कारण खो गई, वह ईसा द्वारा पूरी तरह से पुनर्स्थापित हो जाएगी। ईश्वर का मूल उद्देश्य कायम रहेगा:"यहोवा यों कहता हैं... उसने उसे व्यर्थ नहीं बनाया, उसने उसे बसाने के लिए बनाया।" (यशायाह 45:18)

पृथ्वी फिर से ईश्वर के बच्चों का घर बनेगी। "धर्मी लोग भूमि को उत्तराधिकार करेंगे और उसमें सदैव रहेंगे।" (भजन 37:29)

ईश्वर अपने लोगों के साथ रहेंगे
कुछ लोगों को यह डर हैं कि स्वर्ग बहुत भौतिक लगता हैं, लेकिन ईसा स्वयं ने वादा किया हैं कि वह अपने अनुयायियों के लिए वास्तविक घर तैयार कर रहे हैं। ईश्वर चाहता हैं कि उनके लोगों को पता हो कि उनका भविष्य उत्तराधिकार वास्तविक होगा, हालांकि वह शब्दों से वर्णन करने से परे हैं।

"जिसकी आँखों ने नहीं देखा, और कानों ने नहीं सुना, और मनुष्य के हृदय में नहीं उठा, वे बातें, जो ईश्वर ने अपने से प्रेम करने वालों के लिए तैयार किए हैं।" (1 कुरिन्थियों 2:9)

बाइबिल इस उत्तराधिकार को एक देश कहती हैं (इब्रानियों 11:14-16)। ईश्वर अपने लोगों को जीवन्दार जल के झरनों की ओर ले जाएगा। जीवन का वृक्ष हर महीने फल लाएगा, और उसकी पत्तियाँ शामक लाएँगी। स्पष्ट नदियाँ छायादार पथों के किनारे बहेंगी। चौड़े मैदान सुंदर पहाड़ियों में बदल जाएँगे, और शांत ताकतवर्त पहाड़ियाँ शांत शक्ति में खड़ी रहेंगी।

एक लंबे संघर्ष के बाद, ईश्वर के लोग आखिरकार घर में होंगे। "मेरे लोग शांतिपूर्ण निवास में रहेंगे, और निश्चित निवासों में, और शांत विश्राम स्थानों में।" (यशायाह 32:18)

हिंसा हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी: "तुम्हारी भूमि में हिंसा की आवाज़ अब और नहीं सुनाई जाएगी... परंतु तुम अपनी दीवारों को उद्धारण कहोगे, और अपने स्तम्भों को स्तुति कहोगे।" (यशायाह 60:18)

लोग अपने हाथों के काम का आनंद लेंगे: "वे घर बनाएँगे, और उनमें रहेंगे... मेरे चुने हुए लोग अपने हाथों के काम का आनंद लंबे समय तक लेंगे।" (यशायाह 65:21-22)

प्रकृति चंगा होगी: "उजाड़ और एकांत स्थान आनंदित होंगे... और मरुस्थान आनंद से खिलगा और गुलाब की तरह फूलेगा।" (यशायाह 35:1)

"काँटे के स्थान पर देवदार का वृक्ष उगेगा।" (यशायाह 55:13) यहाँ तक कि जानवर भी शांति में रहेंगे: "भेड़ भी भेड़िया के साथ रहेगा... और एक छोटा बच्चा उन्हें ले जाएगा।" (यशायाह 11:6) "वे मेरे पवित्र पर्वत में किसी को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे, न ही नष्ट करेंगे।" (यशायाह 11:9)

ब्रह्मांड सदैव के लिए सुरक्षित रहेगा।

स्वर्ग में कोई दर्द नहीं होगा। कोई बीमारी, कोई मृत्यु, और कोई रोना नहीं होगी: "कोई मृत्यु नहीं होगा, न शोक, न रोना... क्योंकि पहले चीजें बीत गई हैं।" प्रकाशितावाली 21:4

कोई नहीं कहेगा, 'मैं बीमार हूँ,' क्योंकि सभी शुद्ध और क्षमा किए जाएँगे (यशायाह 33:24)।

नई पृथ्वी के केंद्र में, नया यरूशलेम खड़ी रहेगी: "प्रभु के हाथ में महिमा का मुकुट।" (यशायाह 62:3) "उसका प्रकाश एक बहुत कीमती के पत्थर के समान था।" प्रकाशितावाली 21:11

"जिन राष्ट्रों में से छुटाए गए लोग उसके प्रकाश में चलेंगे।" प्रकाशितावाली 21:24

ईश्वर स्वयं कहेंगा: "मैं यरूशलेम में प्रसन्न होऊँगा, और मेरे लोगों में आनंद होऊँगा।" (यशायाह 65:19)

"ईश्वर का तंबू मनुष्यों के साथ हैं, और वह उनके साथ रहेगा।" प्रकाशितावाली 21:3

कोई रात नहीं होगी:"प्रभु ईश्वर उन्हें प्रकाश देता हैं।" प्रकाशितावाली 22:5

कोई मंदिर निर्माण नहीं होगा:"क्योंकि प्रभु ईश्वर सर्वशक्तिमान और मेमना ही उसका मंदिर हैं।" प्रकाशितावाली 21:22

जो अब धुंध में दिखा जाता हैं, वह एक दिन स्पष्ट हो जाएगा: "अब हम एक दर्पण के द्वारा धुंध में देखते हैं।" 1 कुरिन्थियों 13:12

तब ईश्वर के लोग उसे आमने-सामने देखेंगे।

प्रेम सदैव तक राज करेगा

छुटकार पाए हुए लोग ईश्वर को पूरी तरह जानेंगे और पूरी तरह जाने जाएँगे। परिवार पुनर्मिल होंगे, और स्वर्गदूत और छुटकार पाए हुए लोग एक परिवार के रूप में एक साथ रहेंगे (इफिसियों 3:15)।

वे ईश्वर के प्रेम और शक्ति के बारे में कभी न रुकेंगे। वे सृष्टि का अन्वेषण करेंगे, दूसरी संसारों की यात्रा करेंगे, और हमेशा ज्ञान में बढ़ते रहेंगे। हर नई खोज के साथ, उनका आनंद बढ़ेगा।

अंत में, सारी रचना प्रशंसा में शामिल हो जाएगी: "आसने और सम्मान, और महिमा, और शक्ति, उसके लिए जो सिंहासन पर बैठा हैं, और उस मेमने के लिए, युगों युगों तक होती रहे।" प्रकाशितावाली 5:13

महान विवाद समाप्त हो जाएगा। पाप हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा। ब्रह्मांड सभी समय के लिए सुरक्षित रहेगा। सबसे छोटे परमाणु से लेकर सबसे बड़े संसार तक एक अनंत सत्य की घोषणा करेगा: ईश्वर प्रेम हैं।

अध्याय 15 – महान विवाद में पक्ष चुनना

यीशु और शैतान के बीच का महान विवाद केवल देवदूतों और अच्छाई और बुराई के बीच के ब्रह्मांडीय युद्ध की कहानी नहीं हैं। विवाद का वास्तविक रूप हमारे अपने व्यक्तिगत जीवन में अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। हम में से हर कोई पाप, स्वार्थ, और इस दुनिया के भ्रष्ट के खिलाफ एक दैनिक संघर्ष का सामना करता हैं।

अपने आसपास की परिस्थितियों, दुष्ट नेताओं, या हमारे चारों ओर के बुराइयों पर उंगली उठाना आसान हैं। फिर भी, गहरा, और अधिक निर्णायक युद्ध अक्सर हमारे दो कानों के बीच चल रहा होता हैं।

बाइबल हमें याद दिलाती हैं: "मन सब कुछ से भी अधिक धोखा देने वाला हैं, और बहुत ही दुष्ट: वह कौन जान सकता हैं?" यिर्मयाह १७:९,

कोई भी व्यक्ति पाप से मुक्त नहीं हैं। चाहे हम इसे जानते हों या नहीं, यह युद्ध हमारी इच्छाओं और परमेश्वर की इच्छा, सत्य और छल, प्रेम और अहंकार के बीच लड़ा जा रहा हैं। हमारा हर विचार, हर चयन, हर क्षण हमें यीशु की ओर या दूसरी दिशा में खींचता हैं।

हमारे द्वारा प्रतिदिन किए गए चयन मामूली नहीं हैं। वे हमारे चरित्र को आकार देते हैं, हमारी आदतों को प्रभावित करते हैं, और अंत में हमारे अनंत भविष्य को निर्धारित करेंगे। प्रलोभन का विरोध करने, क्षमा करने, ईमानदारी से काम करने, या परमेश्वर पर विश्वास करने का हर निर्णय मायने रखता हैं और यह साबित करता हैं कि हम ख्रिस्त के पक्ष में हैं।

बाइबल कहती हैं: *"इस लिए, हम में से प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के पास अपने बारे में गवाही देगा।"* (रोमियों १४:१२)

जब शत्रु हमें प्रलोभित करता हैं, आरोप लगाता हैं, या हमें दबा देता हैं, तब भी परमेश्वर हमें विश्वास में दृढ़ रहने के लिए बुलाता हैं। हर छोटी जीत हमें मजबूत करती हैं और हमें उसके और करीब ले जाती हैं।

इस विवाद में विजय अपने बल पर असंभव हैं। शैतान चालाक, धैर्यवान, और निरंतकारी हैं। लेकिन हमें कभी भी अकेले लड़ने के लिए नहीं छोड़ा जाता हैं। परमेश्वर स्वयं इस युद्ध में सक्रिय रूप से शामिल हैं, ज्ञान, शक्ति और मार्गदर्शन प्रदान करता हैं। वह वादा करता हैं:

"कोई भी प्रलोभन तुम पर ऐसा नहीं आया हैं जो मनुष्य के लिए सामान्य न हो। और परमेश्वर वफादार हैं; वह तुम्हें इतना अधिक प्रलोभित नहीं होने देगा जितना तुम सहन कर सकते हो। लेकिन जब तुम प्रलोभित होगे, तो वह एक रास्ता भी प्रदान करेगा ताकि तुम उसे सहन कर सको।" (1 कुरिंथियों 10:13)

जब हम अपनी शक्ति के बजाय उसकी शक्ति पर भरोसा करते हैं, तो असंभव संभव हो जाता हैं। परमेश्वर में, हमें बुराई का विरोध करने, दृढ़ता से बने रहने, और परीक्षाओं के बीच शांति पाने की शक्ति मिलती हैं।

हमारे पास यीशु मसीह के कारण असीम आशा हैं। उन्होंने पाप और मृत्यु पर अंतिम विजय पहले ही प्राप्त कर ली हैं, और उनकी धार्मिकता सभी को जो उन पर विश्वास करते हैं, स्वेच्छा से प्रदान की जाती हैं। ख्रिस्ट में, हमें आश्वासन हैं कि चाहे युद्ध कितना भी भयंकर हो, यदि हम वफादारी से उनका अनुसरण करने का चुनाव करते हैं तो हमारा अंतिम परिणाम सुरक्षित हैं।

"इन सब बातों में हम उसके द्वारा, जिसने हमसे प्रेम किया, विजयियों से भी अधिक हैं।" (रोमियों 8:37)

हमें परमेश्वर के चरित्र पर विश्वास करने, उसके वादों में विश्राम करने, और अपने दिल को पूरी तरह से उसकी देखभाल में रखने के लिए आमंत्रित किया गया हैं। परमेश्वर पर विश्वास करने का मतलब यह नहीं हैं कि युद्ध तुरंत समाप्त हो जाएगा, लेकिन इसका मतलब यह हैं कि हम कभी अकेले नहीं हैं, और हम हर दिन साहस और विश्वास के साथ सामना कर सकते हैं।

महान विवाद व्यक्तिगत हैं। यह आपके दिल में हो रहा हैं। हर दिन एक चुनाव प्रस्तुत करता हैं: ख्रिस्त के पक्ष में या शत्रु के पक्ष में। ख्रिस्ट को चुनना केवल एक बार का निर्णय नहीं हैं—यह आत्मसमर्पण और विश्वास का एक दैनिक कार्य हैं।

"मेरे पास आओ, हे सभी जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हो, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।" (मत्ती 11:28)

आज से, आप हमेशा अपना दिल यीशु को समर्पित करने, अपने मन, अपने चयन, और अपने भविष्य पर उस पर विश्वास करने का चुनाव कर सकते हैं। उसे आपके दिल में युद्ध लड़ने दें, और इस आश्वास में विश्राम करें कि वह विजयी हैं।

युद्ध स्वर्ग में पहले ही जीता जा चुका हैं। अब, चुनाव तुम्हारा हैं: तुम किस पक्ष में खड़े होगे?